राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई,उत्तरप्रदेश,बिहार,राजस्थान,मध्यप्रदेश,उतरांचल,उतराखंड,दिल्ली,हरियाणा में प्रसारीत

क्रांति समय
SURESH MAURYA
(Chief Editor)
M. 98791 41480
Working. off.: STPI-SURAT, GUJARAT-395023
(Software Technology Park of India, Surat.
www.krantisamay.com
www.krantisamay.in
krantisamay@gmail.com

सुरत-गुजरात,संस्करण सोमवार,१० मई २०२१ वर्ष-४, अंक -१०६ पृष्ठ-०८ मूल्य-०१रुपये

Web site : www.krantisamay.com & .in , epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

ऊंटों की एंटीबॉडी कोरोना के इलाज में मददगार, नए रिसर्च से जगी उम्मीद

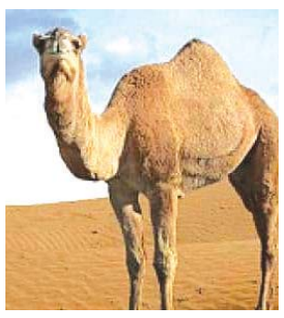

नई दिल्ली। ऊंटों की एंटीबॉडी से कोरोना का इलाज संभव है। एक अध्ययन में यह बात निकलकर सामने आई है। हालांकि, रिसर्च अभी जारी है। डॉक्टरों का मानना है कि यह रिसर्च सही दिशा में है। यूएई के एक जाने माने माइक्रोबायोलॉजिस्ट डॉक्टर का दावा है कि ऊंटों में कोरोना वायरस को मात देने का माद्दा है। ऊंटों के जरिए कोरोना मरीजों को ठीक किया जा सकता है।

रिसेप्टर सेल के कारण संक्रमण-यूएई की मीडिया रिपोर्ट में डॉक्टर ने कहा कि ऊंट पर कोरोना का कोई असर नहीं होता, क्योंकि ऊंटों में वायरस रिसेप्टर सेल नहीं होता, जबकि इंसान और दूसरे अन्य जानवरों में रिसेप्टर सेल होता है। रिसेप्टर सेल की वजह से ही इंसानों में कोरोना संक्रमण फैल रहा है। उन्होंने कहा कि ऊंट की म्यूकोसा सेल में वायरस चिपक नहीं सकता। इसलिए कोरोना के लिए ऊंट एक कारगर इलाज साबित हो सकता है।

कूबड़दार ऊंटों पर रिसर्च

कोरोना से बचाव के लिए यूएई में कूबड़दार ऊंटों पर रिसर्च किया जा रहा है। इसके लिए ऊंटों में कोरोना के मृत सैंपल का इंजेक्शन दिया जा रहा है। बहुत बारीकी से यह देखा जा रहा है कि इससे उनके अंदर क्या बदलाव आ रहा है। साथ ही एंटीबॉडी के लिए उनका ब्लड सैंपल लिया जा रहा है। उसकी जांच की जा रही है ताकि कोरोना महामारी का कोई ठोस इलाज मिल सके। एक बात जो अभी तक के रिसर्च से सामने आई है कि कूबड़दार ऊंटों पर कोरोना का कोई असर नहीं होता।

कोरोना संक्रमण की चेन तोड़ने के लिए इन राज्यों में आज से संपूर्ण लॉकडाउन

नई दिल्ली। कोरोना संक्रमण की चेन तोड़ने के लिए और भी कई राज्यों ने संपूर्ण लाकडाउन और सख्त पाबंदियां लगाने जैसे कदम उठाए हैं। तमिलनाडु, राजस्थान और केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी ने 10 मई यानी सोमवार से संपूर्ण लाकडाउन का एलान किया है जो 24 मई तक लागू रहेगा। कर्नाटक में शुक्रवार शाम से और केरल में शनिवार सुबह से लाकडाउन प्रभावी हो गया है।

चेन्नई में तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने एक बयान जारी कर कहा कि संक्रमण को रोकने के लिए लाकडाउन के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं था। शुक्रवार को जिलाधिकारियों के साथ कोरोना के हालात की समीक्षा करने और स्वास्थ्य सेवा से जुड़े विशेषज्ञों की सलाह के आधार पर लाकडाउन लागू करने का फैसला किया गया। आवश्यक सामान और सेवाओं को छोड़कर सभी दुकानें और निजी एवं सरकारी दफ्तर बंद रहेंगे। सरकारी शराब की दुकानें, बार, स्पा, जिम, ब्यूटी पार्लर, सैलून, सिनेमा हाल, क्लब, पार्क, बीच भी इस दौरान बंद रहेंगे।

विपक्षी दल अन्नाद्रमुक और पीएमके ने संपूर्ण लाकडाउन का स्वागत किया है। इनका कहना है कि इससे कोरोना संक्रमण की चेन तोड़ने में मदद मिलेगी। परंतु, इन दोनों दलों की सहयोगी भाजपा ने लाकडाउन के फैसले को जल्दबाजी में उठाया गया कदम बताया है। प्रदेश भाजपा का कहना कि इसमें दैनिक कामगारों और कमजोर वर्ग को मदद पहुंचाने के लिए कोई उपाय नहीं किया गया है। लाकडाउन के दौरान टीकाकरण अभियान कैसे चलेगा इसको लेकर भी कुछ नहीं कहा गया है।

राजस्थान सरकार ने भी 10 से 24 मई तक के लिए राज्य में लाकडाउन की घोषणा की है। इस दौरान आवश्यक सेवाओं को छोड़कर सब कुछ बंद रहेगा। किराना, दूध, सब्जी, फल और अन्य आवश्यक सामान की दुकानें कुछ समय के लिए खोलने की छूट दी गई है।

विपक्षी दल अन्नाद्रमुक और पीएमके ने संपूर्ण लाकडाउन का स्वागत किया है। इनका कहना है कि इससे कोरोना संक्रमण की चेन तोड़ने में मदद मिलेगी। परंतु, इन दोनों दलों की सहयोगी भाजपा ने लाकडाउन के फैसले को जल्दबाजी में उठाया गया कदम बताया है।

कर्नाटक में शुक्रवार शाम और केरल में शनिवार सुबह से लाकडाउन प्रभावी हो गया है। केरल में 16 मई तक पाबंदियां जारी रहेंगी। इन दोनों ही राज्यों में संक्रमण तेजी से फैल रहा है। बेंगलुरु तीन लाख से ज्यादा सक्रिय मामलों वाला देश का पहला महानगर बन गया है। गोवा में भी रविवार से 15 दिनों के लिए कर्फ्यू लगाया जा रहा है। इस दौरान शराब की दुकानों के साथ ही किराना और दूध-सब्जी की दुकानें सुबह सात बजे से दोपहर एक बजे तक खुली रहेंगी।

हिमाचल में कल से चार जिलों में लॉकडाउन

हिमाचल प्रदेश सरकार ने भी कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए चार जिलों में सोमवार से लाकडाउन लगाने का फैसला किया है। ये जिले हैं- कांगड़ा, ऊना, सोलन और सिरमौर। इसके अलावा सरकार दूसरे क्षेत्रों में कोरोना कर्फ्यू के तहत नए प्रतिबंध भी लागू करेगी।

पुणे में वीकेंड लाकडाउन को लेकर पुलिस सख्त

पुणे में भी पुलिस ने वीकेंड लाकडाउन को लेकर सख्ती की है। पुलिस ने शहर में संपूर्ण वीकेंड लाकडाउन को लागू किया है। बिना वजह सड़क पर निकलने वालों से पुलिस सख्ती से पेश आ रही है। वीकेंड लाकडाउन में सिर्फ दवा की दुकानों को ही खोलने की अनुमति दी गी है।

मेघालय-मणिपुर में भी सख्ती

पूर्वोत्तर के राज्य मेघालय और मणिपुर में भी सख्ती शुरू हो गई है। मेघालय के पूर्वी खासी हिल्स और मणिपुर के इंफाल पश्चिम जिलों भी शनिवार से 17 मई तक के लिए कर्फ्यू लगा दिया गया है। इस दौरान आवश्यक सेवाओं, कोरोना जांच और टीकाकरण के लिए लोगों को घर से बाहर निकलने की छूट दी गई है।

योगी सरकार का आदेश

कोरोना से मौत पर मुफ्त में होगा अंतिम संस्कार

लखनऊ। यूपी की योगी सरकार ने शहरों यानी नगरीय निकाय क्षेत्रों में कोरोना संक्रमण से होने वाली मौत पर मुफ्त में अंतिम संस्कार कराने का फैसला किया है। अपर मुख्य सचिव नगर विकास मनोज कुमार सिंह ने इस संबंध में शासनादेश जारी कर दिया है। प्रत्येक प्रकरण में यह व्यय अधिकतम 5000 रुपये तक किया जा सकेगा। शासनादेश में कहा गया है कि कोविड-19 संक्रमण के कारण मृत्यु की दशा में शवों का मुफ्त में अंतिम संस्कार किया जाएगा। उत्तर प्रदेश नगर निगम अधिनियम और उत्तर प्रदेश पालिका परिषद अधिनियम में दी गई व्यवसथा के अनुसार नगरीय निकाय की सीमा के अंतर्गत मृतकों के अंतिम संस्कार के लिए अंत्येष्टि स्थलों, कब्रिस्तानों व शवदाह गृहों की व्यवस्था करना नगर निकायों का मूल कर्तव्य है। इसलिए शासन द्वारा विचार के बाद यह फैसला किया है कि कोविड-19 के संक्रमण के कारण हुई मृत्यु पर मुफ्त में अंतिम संस्कार किया जाएगा। अंतिम संस्कार में कोविड-19 के प्रोटोकाल का कड़ाई से पालन किया जाएगा। अंतिम संस्कार पर होने वाले खर्च का वहन नगर निकायों द्वारा अपने स्वयं के स्रोतों या फिर राज्य वित्त आयोग की धनराशि से किया जाएगा।

उत्तर प्रदेश पालिका परिषद अधिनियम में दी गई व्यवसथा के अनुसार नगरीय निकाय की सीमा के अंतर्गत मृतकों के अंतिम संस्कार के लिए अंत्येष्टि स्थलों, कब्रिस्तानों व शवदाह गृहों की व्यवस्था करना नगर निकायों का मूल कर्तव्य है।

धरती की ओर बढ़ रहा बेकाबू चीनी रॉकेट, जानें कहां है गिरने की संभावना

नई दिल्ली। धरती की ओर बढ़ रहे चीनी रॉकेट के लिए अगले कुछ घंटे काफी अहम हैं। चीन के लॉन्ग मार्च 5बी हैवी-लिफ्ट वाहक रॉकेट के प्रशांत महासागर में गिरने की संभावना है। चीन का एक 21 टन वजनी विशालकाय रॉकेट अंतरिक्ष में अनियंत्रित हो गया है और यह अब पृथ्वी की ओर बढ़ रहा है। अमरीकी वायु सेना के नवीनतम पूर्वानुमानों के अनुसार यह जानकारी सामने आई है। स्पेस-ट्रैकडॉटओआरजी द्वारा प्रकाशित अनुमान के मुताबिक यह अंतरिक्ष यान का दूसरा चरण नौ मई (रविवार) को लगभग जीएमटी के अनुसार दो बजकर 52 मिनट पर पृथ्वी के वायुमंडल में फिर से प्रवेश करने का अनुमान है। यह प्रशांत महासागर के दक्षिणी भाग में न्यूजीलैंड से ज्यादा दूर नहीं है। इससे पहले यह अनुमान लगाया गया था कि रॉकेट दूसरे चरण में आठ मई को जीएमटी अनुसार एक बजकर 11 मिनट और 19 बजकर 11 मिनट के बीच पृथ्वी के वायुमंडल में फिर से प्रवेश करेगा। रूस की रोस्कोसमोस अंतरिक्ष एजेंसी ने शुक्रवार को कहा था कि लांग मार्च 5 बी हेवी-लिफ्ट लांच वाहन के दूसरे चरण में नौ मई को प्रशांत महासागर में पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करने की संभावना

जताई गई थी। विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि चीनी रॉकेट पृथ्वी पर अगर किसी आबादी वाले इलाके से टकराता है तो भारी तबाही हो सकती है। ऐसी आशंका जताई जा रही है कि इस रॉकेट का मलबा न्यूयॉर्क, मैड्रिड और पेइचिंग जैसे शहरों में कहीं भी गिर सकता है। रॉकेट को चीन के वेनचांग रॉकेट प्रक्षेपण स्थल से 29 अप्रैल को प्रक्षेपित किया गया था।

चिंता करने की जरूरत नहीं-चीन

हालांकि चीन के वैज्ञानिकों ने कहा है कि लोगों को चिंता करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि पृथ्वी की कक्षा में आते ही इसके अधिकतर हिस्से जल गए होंगे। जो हिस्से बचे होंगे, वो है मेल्टिंग पॉइंट वाले मैटेरियल से बने होंगे लेकिन वो भी किसी वीरान इलाके या फिर महासागर में ही गिरेंगे। धरती का 75 फीसदी हिस्सा पानी से भरा है और बाकी के 25 फीसदी में भी अधिकतर इलाके वीरान पड़े हुए हैं, इसलिए लोगों को इससे नुकसान होने का खतरा बेहद ही कम है।

पहले भी हो चुकी हैं घटनाएं-ये पहली बार नहीं है कि कोई नियंत्रण से बाहर रॉकेट धरती पर गिरने जा रहा हो, लेकिन ये सबसे ज्यादा खतरनाक हो सकता है। 1990 के बाद से 10 टन से ज्यादा वजन वाला ऐसा कुछ भी पृथ्वी पर नहीं गिरा है। मई 2020 में एक चीनी रॉकेट धरती पर गिरा था। इसके अधिकतर मलबे अटलांटिक महासागर में गिरे थे। आइवरी कोस्ट पर भी इसका कुछ हिस्सा गिरा था। अगर कुछ मिनट भी इधर-उधर होता तो ये न्यूयॉर्क में तबाही मचा सकता था।

कोरोना को हराना है-एनएचएआइ ने आक्सीजन टैंकरों को टोल शुल्क से मुक्त किया

नई दिल्ली। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआइ) ने शनिवार को कहा कि पूरे देश में राष्ट्रीय राजमार्गो से लिक्विड मेडिकल आक्सीजन (एलएमओ) की ढुलाई करने वाले टैंकरों और कंटेनरों को टोल शुल्क से मुक्त कर दिया गया है। एक बयान के मुताबिक, कोरोना महामारी के दौरान देश में मेडिकल आक्सीजन की अभूतपूर्व मांग को ध्यान में रखते हुए आक्सीजन की ढुलाई करने वाले कंटेनरों को एंबुलेंस जैसे आपातकालीन वाहनों के समान माना जाएगा और उन्हें दो महीने के लिए या अगले आदेश तक यह छूट दी गई है। एनएचएआइ ने कहा कि ऐसा राष्ट्रीय राजमार्गो पर एलएमओ ले जाने वाले टैंकरों और कंटेनरों को निर्बाध रास्ता देने के लिए किया गया है। हालांकि फास्टैग लागू किए जाने के बाद से टोल प्लाजा पर प्रतीक्षा समय लगभग शून्य है और वह पहले से मेडिकल आक्सीजन के तेजी से और निर्बाध परिवहन के लिए ऐसे वाहनों को प्राथमिकता दे रहा है।

कोरोना के डबल म्यूटेशन वैरिएंट ने फिर बदला रूप, पहले से अधिक खतरनाक

नई दिल्ली। भारत समेत दुनिया के 17 देशों में फैल चुके कोरोना के डबल म्यूटेशन प्रकार क्र1.617 ने फिर रूप बदल लिया है। वैज्ञानिकों ने इसके पहले से ज्यादा संक्रामक होने की आशंका जाहिर की है। नए स्वरूप के मामले भारत, ब्रिटेन और स्पेन में दर्ज किए गए हैं। सेंटर फॉर सेलुलर एंड मॉलीक्यूलर बायोलॉजी (सीसीएमबी) हैदराबाद के निदेशक राकेश मिश्रा ने 'हिन्दुस्तान' को बताया कि नया प्रकार क्र1.617.2 है। इसमें कुछ नए बदलाव नोट किए गए हैं। इनका अध्ययन किया जा रहा है। 617 में दो बड़े म्यूटेशन एल 452क्र तथा ई 484क्त दर्ज किए गए थे, लेकिन अब इसमें से ई 484क्त गायब हो चुका है। लेकिन, दूसरे बदलाव हो चुके हैं। अन्य बदलावों को समझने के लिए

अध्ययन किया जा रहा है। यह पूछने पर कि इस बदलाव से वायरस कमजोर पड़ा है या मजबूत हुआ है? उन्होंने कहा कि निश्चित रूप से यह मजबूत हुआ है। इसीलिए ज्यादा तेजी से फैल रहा है। ब्रिटेन की स्वास्थ्य एजेंसी ने नए स्वरूप को चिंता का विषय कहा है।

उन्होंने कहा कि सीसीएमबी में जीनोम सिक्वेंसिंग में नए प्रकार के मामले मिले हैं। उनका गहराई से अध्ययन किया जा रहा है। ब्रिटेन ने डबल म्यूटेशन वैरिएंट के नए स्वरूप को नए सिरे से निर्धारित करते हुए इसे VUI-21APR-02 के रूप में भी चिह्नित किया है। हालांकि, भारत में इसे क्र1.617.2 के रूप में जाना जा रहा है।

बता दें कि कोरोना वायरस में तेजी से बदलाव आ रहे हैं। दुनिया में अब तक सैकड़ों बदलाव रिकॉर्ड किए गए हैं। हर महीने दो बदलाव वायरस में हो रहे हैं। लेकिन, इनमें से कुछ बदलाव बेहद घातक हैं।

4 लाख नए केस आए सामने, 4 हजार से अधिक की मौत

देश में पांचवीं बार चार लाख से ज्यादा कोरोना के मामले आए हैं और यह लगातार चौथी बार है जब भारत में कोरोना के मामले चार लाख से ऊपर आए हैं। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के लेटेस्ट आंकड़ों की मानें तो पिछले 24 घंटे के दौरान देश में रिकॉर्ड 4133 लोगों की मौतें हुई हैं और इसी दौरान 4,09,300 नए मामले सामने आए हैं। इस तरह से देश में अब तक कुल 2,42,398 लोगों की संक्रमण से मौत हो चुकी है। जबकि 2,22,95,911 लोग अब तक संक्रमित हो चुके हैं।

देश में 2 महीनों तक रहेगा टीकों का टोटा, वैक्सीन की पहली खुराक के लिए बढ़ सकता है इंतजार

नई दिल्ली। कोरोना महामारी की दूसरी भयावह लहर के बीच लोगों में टीकाकरण को लेकर दिलचस्पी एकाएक बढ़ गई है। इसलिए टीकाकरण केंद्रों पर लंबी कतारें दिखाई दे रही हैं। लेकिन, इस बीच टीके की आपूर्ति सीमित होने के कारण केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने राज्यों से कहा है कि वे दूसरी खुराक लेने वालों को प्राथमिकता दें। राज्यों को सलाह दी गई है कि उपलब्ध टीके को 70 फीसदी दूसरी खुराक वालों के लिए इस्तेमाल करें तथा बाकी 30 फीसदी पहली खुराक के लिए प्रयोग हो। दरअसल, एक मई से 18 से अधिक और 45 साल से कम उम्र के लोगों को भी टीकाकरण कार्यक्रम में शामिल किया गया है। लेकिन, इस आयु वर्ग के लिए टीके का इस्तेमाल राज्यों या निजी अस्पतालों को खुद करना है। केंद्र की जिम्मेदारी 45 साल से अधिक उम्र के लोगों को दिए जा रहे टीके को लेकर है। जो राज्यों को निशुल्क दिया जाता है।

अब तक राज्यों को 17.49 करोड़ खुराक-स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, अब तक राज्यों को 17.49 करोड़ खुराक दी जा चुकी है। अब तक 13.30 करोड़ लोगों को पहली और इनमें से 3.41 करोड़ लोगों को दूसरी खुराक दी जा चुकी है। इन आंकड़ों से साफ है कि आने वाले दिनों में दूसरी खुराक लेने वालों की संख्या बढ़ेगी।

तय समय के भीतर दूसरी खुराक लेनी जरूरी-मंत्रालय के एक अधिकारी के अनुसार, जो लोग पहली खुराक ले चुके हैं। उन्हें तय समय के भीतर दूसरी खुराक लेनी जरूरी है। कोवैक्सीन 28 दिन के बाद और कोविशील्ड 6-8 सप्ताह के भीतर लेनी है। इसलिए राज्यों को कहा गया है कि दूसरी खुराक के लिए टीके की कमी नहीं हो। केंद्र का रुख साफ है कि जिसे एक भी खुराक नहीं मिली है, वह थोड़ा इंतजार कर सकता है, लेकिन यदि दूसरी खुराक समय पर नहीं दी गई तो पहली भी बेकार हो जाएगी। साथ ही टीके की बर्बादी को भी न्यूनतम करने को बार-बार कहा जा रहा है।

चूक-लक्षद्वीप में सबसे ज्यादा टीका बर्बाद-स्वास्थ्य मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, लक्षद्वीप में टीकों की सबसे ज्यादा बर्बादी हुई है। लक्षद्वीप को मिली खुराकों में से 22.7 प्रतिशत बर्बाद हुई। इसके बाद हरियाणा में 6.65 प्रतिशत और असम में 6.07 प्रतिशत खुराक बर्बाद हुई।

चिंता- एक हफ्ते में 18-44 आयुवर्ग के मात्र 14.8 लाख लाभार्थियों को खुराक-स्वास्थ्य मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक, 18-44 आयुवर्ग के मात्र 14.8 लाख से ज्यादा लाभार्थियों को एक हफ्ते में पहली खुराक लगाई जा चुकी है।

अभी राज्यों के पास 84 लाख टीके मौजूद-बता दें कि अभी राज्यों के पास 84 लाख टीके मौजूद हैं। तीन दिनों के भीतर 53 लाख उन्हें और पहुंचेंगे। लेकिन, रोजाना टीकाकरण 20-25 लाख के बीच है। इसलिए टीके की मौजूदा उपलब्धता कम है।

अगले दो महीनों तक टीके की कमी रहेगी-स्वास्थ्य मंत्रालय के सूत्रों की मानें तो अगले दो महीनों तक टीके की थोड़ी कमी बनी रहेगी, लेकिन उसके बाद आपूर्ति बढ़ जाएगी। क्योंकि सीरम इंस्टीट्यूट को 11 करोड़ और भारत बॉयोटेक को 5 करोड़ खुराक का आदेश दिया जा चुका है। हालांकि, इन कंपनियों की चुनौती यह भी है कि उत्पादन का आधा हिस्सा उन्हें राज्यों या निजी अस्पतालों को देना है। राज्यों एवं निजी अस्पतालों से भी उन्हें भारी-भरकम ऑर्डर मिले हैं। इसलिए आपूर्ति में थोड़ा विलंब हो रहा है।

विशेषज्ञ की टिप्पणी-नई दिल्ली स्थित लेडी हार्डिंग हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. एनएन माथुर ने कहा कि हर व्यक्ति को कोरोना का टीका लेना है, लेकिन हमें यह देखना जरूरी है कि दूसरी खुराक तय समय पर मिल जाए। इसलिए यह कदम उठाया गया है।

Web site : www.krantisamay.com & .in , epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

संपादकीय

गरीब देशों को मिलेगा टीका!

अमेरिका ने मंगलवार को भारत और दक्षिण अफ्रीका जैसे विकासशील देशों की अगुआई में कोरोना के टीकों का इंतजार कर रहे तमाम गरीब देशों की अपनी आबादी के लिए टीका मिल पाने की उम्मीदों को पर लगा दिए। अमेरिका ने भारत सहित कई देशों के दबाव में कोविड़ की वैक्सीन पर पेटेंट के दावे को अस्थायी रूप से वापस लेने का फैसला किया है। अमेरिका के इस कदम से ऐसे कई देशों को फायदा होगा जो कोरोना से लड़ाई के लिए अपना टीका बनाना चाहते हैं। इन देशों में भारत और दक्षिण अफ्रीका प्रमुख हैं जिनसे दुनिया भर के गरीब मुल्क सस्ते या मुफ्त टीके की आस लगाए हुए हैं। भारत और दक्षिण अफ्रीका बिना किसी कानूनी बाधा के अपने देश में अपने टीकों का उत्पादन कर सकेंगे। इससे धीरे-धीरे टीकों की कम पड़ती जा रही आपूर्ति में तेजी आने की संभावना है। हालांकि फैसले की पेचीदगी वाली प्रक्रिया के चलते इसका तुरंत लाभ मिलने की उम्मीद कम ही है। इस मामले को लेकर बाइडेन प्रशासन तीखी आलोचनाओं का भी सामना कर रहा था। अमेरिका की व्यापार प्रतिनिधि कैथरीन ताइ का कहना है कि कोविड़ एक वैश्विक संकट है, इस महामारी से निपटने के लिए बड़े कदम उठाने की जरूरत है। हालांकि उनका यह भी कहना है कि अमेरिका अपनी बौद्धिक संपदा की रक्षा करने के लिए हमेशा प्रतिबद्ध रहेगा। इस बीच रूस से एक अच्छी खबर मिली है कि उसने स्पुतनिक-वी वैक्सीन की एक ड़ोज वाले वर्जन के इस्तेमाल को मंजूरी दे दी है। स्पुतनिक लाइट नाम वाली इस सिंगल ड़ोज वैक्सीन के 80 फीसद तक प्रभावी होने का दावा किया गया है। वैक्सीन विकसित करने वाले रूस के वैज्ञानिकों का दावा है कि इससे कोरोना वायरस के खिलाफ हर्ड़ इम्यूनिटी जल्द हासिल करने में मदद मिलेगी। स्पुतनिक लाइट का ट्रायल इसी साल जनवरी में शुरू किया गया था। इधर आंध्र प्रदेश के स्वास्थ्य अधिकारियों ने स्पष्ट किया है कि कोरोना का आंध्र प्रदेश स्ट्रेन, जिसे एन440के कहा गया है, बहुत संक्रामक नहीं है और बेहद कम लोगों में मिल रहा है। इस बात के कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं मिले हैं कि यह स्ट्रेन दूसरे स्ट्रेन के मुकाबल कहीं ज्यादा संक्रामक है। कुछ रिपोर्टों में कहा गया था कि यह स्ट्रेन 15 गुना अधिक घातक है, इससे 3 से 4 दिन में ही लोग गंभीर बीमार हो जाते हैं। कोरोना के खिलाफ लड़ाई लंबी हैग अमेरिका के फैसले से गरीब देशों को राहत मिलेगी।

चिकित्सा बिरादरी की सुध

एक साल से अधिक हो गया है, हमारे डॉक्टर, नर्स व अन्य स्वास्थ्य कर्मी लगातार कोरोना महामारी से जूझ रहे हैं, वह भी सीमित संसाधनों में। एक ऐसी बीमारी के खिलाफ जिसका अब तक कोई कारगर इलाज नहीं है। पहली बार किसी ऐसी बीमारी से जूझना पड़ रहा है, जिसके उपचार के लिये देश में कोई कारगर रणनीति नहीं बन पायी। शुरुआत में हमने उन पर फूल भी बरसाये और ताली-थाली भी बजायी। उन्हें कोरोना योद्धा की संज्ञा भी दी। लेकिन धीरे-धीरे बढ़ता रोग का दायरा उनकी मुश्किलें बढ़ाता गया। सितंबर तक ऊंचाई चढ़ने के बाद कोरोना संक्रमण में गिरावट के बाद इस बिरादरी ने चैन की सांस ली थी कि महामारी को हमने हरा दिया। लेकिन कोविड-19 के बदले वेरिएंट ने देश में जो कहर बरपाया है, उसने चिकित्सकों व अन्य कर्मियों की मुसीबतों को चरम पर पहुंचा दिया। तेज संक्रमण और धड़ाधड़ बीमार पड़ते लोगों से अस्पताल पट गये। अस्पतालों में ऑक्सीजन बेड नहीं हैं, वेंटिलेटर नहीं हैं और सहायक दवाइयों का भारी अभाव है। जो संपन्न हैं, वे दोनों हाथों से लूट रहे निजी अस्पतालों की ओर उन्मुख हुए। गरीब और मध्य वर्ग सरकारी अस्पतालों के भरोसे लाचार हैं। जहां चिकित्सा साधनों का लगातार टोटा बना हुआ है। देश के सत्ताधीशों की नाक के नीचे बिना ऑक्सीजन के मरते लोगों की खबरें रोज आंकड़ा बढ़ा रही हैं। सुप्रीम कोर्ट व हाईकोर्ट ऑक्सीजन की कमी से होने वाली मौतों को अपराध की संज्ञा दे रहे हैं। कोर्ट की बार-बार की जा रही टिप्पणियों के बावजूद सत्ताधीश मौन बने हुए हैं। इस संकट का सबसे बड़ा पहलू यह है कि लोगों की मौतों का गुस्सा डॉक्टरों व चिकित्सा स्टॉफ को झेलना पड़ रहा है। हालांकि, आपदा काल के कानून लागू हैं लेकिन डॉक्टरों को लगातार धमकाया जा रहा है और मारपीट तक की जा रही है। अपनी जान जोखिम में डालकर इलाज करने वाली बिरादरी इन हमलों से आहत है। निस्संदेह, कोविड-19 की दूसरी लहर के सामने चिकित्सा सुविधाएं बौनी पड़ गई हैं। अस्पतालों में बेड, वेंटिलेटर, ऑक्सीजन व दवा की किल्लत तो है ही, साथ ही चिकित्सकों, नर्स तथा अन्य कर्मचारियों की भी कमी हो गई है। संक्रमण की भयावह स्थितियों में बढ़ते मौत के आंकड़े और उन्हें न बचा पाने की टीस के साथ चिकित्सा बिरादरी काम में जुटी है। वे भारी मानसिक तनाव में काम कर रहे हैं। वे संक्रमण के भय से अपने परिवार से भी सामान्य ढंग से नहीं मिल पाते। उनके घरों में बुजुर्ग व बच्चों को संक्रमण से मुक्त रखना उनकी बड़ी चिंता है। कोरोना के उपचार में लगे डॉक्टरों व नर्सों के साथ पड़ोसियों द्वारा अभद्रता की विचलित करने वाली खबरें भी आई हैं। बड़ी संक्रमित आबादी के लिये पर्याप्त चिकित्सा व चिकित्सक न होने पर दिल्ली, बिहार समेत देश के कई भागों में डीआरडीओ द्वारा तैयार कोविड अस्पतालों की बागडोर सेना को सौंपी गई है। जहां कोविड प्रोटोकॉल के साथ मरीजों को राहत दी जा रही है। लेकिन सरकारी अस्पतालों में काम कर रहे फ्रंटलाइन वर्करों की शारीरिक व मानसिक परेशानियां लगातार बढ़ती जा रही हैं। इस दौरान देश में एक हजार के करीब चिकित्सकों ने कोरोना संक्रमण से जान गंवाई है। चिकित्सक भी संक्रमण के भय के बीच मरीजों को संभव इलाज देने का प्रयास कर रहे हैं। दोनों वैक्सीन लगने के बाद भी दिल्ली व लखनऊ में बड़ी संख्या में डॉक्टरों के संक्रमित होने के समाचार आये हैं। अस्पतालों में मौतों का अंतहीन सिलसिला उन्हें अवसाद व विवशता से भर देता है। ऐसे में फ्रंटलाइन वर्कर्स का मनोबल बढ़ाने और उन्हें अवसाद से बचाने की जरूरत है। चौबीसो घंटे महामारी की त्रासदी से जूझना उनकी नियति बन चुकी है। जरूरी है कि एक ऐसा मेडिकल कार्यबल बनाया जाये जो चिंता, अनिद्रा, अवसाद व हताशा से जूझ रही चिकित्सा बिरादरी को राहत दे सके।

विदेश मीडिया

सबको लगे वैक्सीन

कोरोना महामारी के खिलाफ वैश्विक लड़ाई में यह एक महत्वपूर्ण समय है। 15 महीनों से देश वायरस को काबू में लाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। वे वायरस की दूसरी-तीसरी लहर का सामना कर रहे हैं, संक्रमित होने वालों की संख्या और मृत्यु अभी भी बहुत अधिक है। फिर भी, लोग एक लंबी और अंधेरी सुरंग के पार भी प्रकाश देख रहे हैं। लेकिन सबसे बड़ी बात, यह एक वैश्विक लड़ाई है, इस शातिर और अदृश्य दुश्मन को हराने के लिए एक ठोस अंतरराष्ट्रीय कोशिश की जरूरत है। इसके लिए जरूरी है कि सभी को टीके लगें। टीके तक सबकी पहुंच होनी चाहिए, और यह पहुंच भुगतान या लाभ उठाने की क्षमता से जुड़ी नहीं होनी चाहिए, बल्कि मानव जाति की समानता पर आधारित होनी चाहिए। जहां हर आदमी को टीका लगता है, वहीं हर आदमी की सुरक्षा होती है। बुधवार को अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने कोविड-19 टीकों के लिए बौद्धिक संपदा अधिकार माफ करके टीके बनाने का साहसिक और बहुत ही स्वागत-योग्य कदम उठाया है। यह एक लंबी बातचीत की प्रक्रिया में पहला कदम होगा। भले ही दवा कंपनियां इस फैसले का विरोध करेंगी, लेकिन यह इस विनाशकारी महामारी के खिलाफ वैश्विक लड़ाई में एक महत्वपूर्ण क्षण है। अभी लोगों के बीच एक असमानता है, एक वे लोग, जिनकी टीके तक पहुंच है और दूसरे, जिनकी टीके तक पहुंच नहीं। टीके की यह दौड़ शायद वैश्विक समुदाय के लिए सबसे बड़ी नैतिक चुनौती है और राष्ट्रपति बाइडन का कदम अमीर और गरीब, संरक्षित और कमजोर लोगों के बीच की विषमता मिटाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह एक ऐसा कदम है, जिसको दवा कंपनियों की ओर से विरोध का सामना करना पड़ेगा। अब प्रश्न कॉरपोरेट अधिकारों का नहीं, बल्कि सभी के अधिकार का है। दवा निर्माता लोगों को अच्छी तरह से रखें, तो ही उन्हें लाभ है। बौद्धिक या मालिकाना हक के बिना सस्ते में तैयार टीके ही एकमात्र यथार्थवादी तरीका हैं। अब हमारे पास इस महामारी को एक साथ मिलकर मारने का बहुत माकूल मौका है, और कौन ऐसा नहीं चाहेगा?

एक्शन प्लान से होगा कोरोना का काम-तमाम

उपेन्द्र राय

कोरोना की दूसरी लहर ने देश में ऐसा कोहराम मचा रखा है कि कोई भी उसके असर से बच नहीं पा रहा है।

यहां तक कि कल तक जो कोरोना घर-परिवारों में पैठ बना कर बैठा था, उसने अब कोर्ट-कचहरी में भी घुसपैठ कर ली है। साधारण तौर पर जब हमारे देश में किसी विवाद का हल नहीं निकलता, तो 'कोर्ट में देख लेने वाली बात' बड़ी आम है, लेकिन कोरोना का जोर ऐसा है कि बड़े-बड़े मसले सुलझाने वाली हमारी अदालतें सख्त टिप्पणियों के बावजूद बेबस दिखाई दे रही हैं। कोरोना के बढ़ते मामलों और ऑक्सीजन से लेकर, अस्पतालों में बेड और दवा की किल्लत को लेकर देश की अदालतें पिछले कई दिनों से केंद्र सरकार और राज्य सरकारों को जमकर फटकार लगा रही हैं। इनमें से कुछ मामले जनहित याचिकाओं से निकल कर आए हैं, तो कई मामलों में तो अदालतों ने खुद ही हालात का संज्ञान लेकर सरकारों से जवाब तलब किया है। अदालतें कारण बताओ नोटिस जारी कर रही हैं, अधिकारियों को जेल भेजने की चेतावनी जारी कर रही हैं, आदेश की तामील न होने पर सरकारों से पूछ रही हैं कि क्यों न उनके खिलाफ अवमानना का केस दर्ज किया जाए? दिल्ली, गुजरात, पटना, कर्नाटक सभी जगह हाई कोर्ट की नाराजगी का आलम एक जैसा दिख रहा है। इन सबसे ऊपर सर्वोच्च अदालत तो केंद्र सरकार को उसकी कार्यशैली और सलाह के बावजूद कोई ठोस नतीजा नहीं निकलने पर लगभग रोज ही फटकार लगा रही है। चिंताजनक बात यह है कि जिन अदालतों में देश की जनता अपने तमाम सवालों के जवाब ढूंढती है, उनकी इतनी सख्त टिप्पणियों के बावजूद जमीन पर हालात में कोई खास बदलाव आता नहीं दिख रहा है। और यह हाल तब है जबकि देश में अभी दूसरी लहर का पीक भी नहीं आया है और तीसरी लहर के आने की सुगबुगाहट शुरू हो चुकी है। दुनियाभर का अनुभव है कि दूसरी लहर की तुलना में तीसरी लहर का प्रभाव ज्यादा मारक होगा। सर्वोच्च अदालत ने इस पर भी सरकार से उसका एक्शन प्लान मांग लिया है। अदालत ने खास तौर पर बच्चों को लेकर चिंता जताई है और पूछा है कि जब बच्चे बीमार होकर अस्पताल जाएंगे, तो उनके पालकों को भी साथ जाना होगा, इसके लिए सरकार क्या तैयारी कर रही है? हालांकि ऐसा भी नहीं है कि सर्वोच्च अदालत सरकार को केवल लताड़ ही लगा रही है। तीसरी लहर को लेकर उसने सरकार को कुछ सुझाव भी दिए हैं, जिसमें सबसे प्रमुख है टीकाकरण कार्यक्रम को तेजी से पूरा करने की जरूरत।

इस बात में कोई दो-राय नहीं कि मौजूदा हालात से निकलने में टीकाकरण ही सबसे बड़ा हथियार साबित हो सकता है। अमेरिका इसकी जीती-जागती मिसाल है। तीन महीने पहले तक वहां भी प्लय जैसे हालात बने हुए थे। जो बाइडेन की कमान में जब नये प्रशासन ने कामकाज संभाला तो उसने टीकाकरण को संजीवनी की तरह लिया। वैक्सीन बनाने वाली कंपनियों को 100 दिन में 100 मिलियन खुराक बनाने का लक्ष्य दिया और फिर इसे बढ़ाकर 200 मिलियन कर दिया। वैक्सीन उत्पादन की रफ्तार कम न पड़े, इसके लिए कच्चे माल का निर्यात बंद कर दिया। आज हालत यह है कि एक बड़ी आबादी को टीका लगाकर अमेरिका ने कोरोना को इतना काबू में कर लिया है कि वैक्सीन की दोनों डोज लगवा चुके लोगों के लिए अब मास्क पहनने की जरूरत खत्म हो गई है। चार जुलाई को अमेरिका की आजादी का दिन है और देश ने इस दिन को कोविड से मुक्ति का दिन मनाने का लक्ष्य रखा है।

> चीन ने अपने संसाधनों का तेजी से इस्तेमाल किया, नये अस्पताल बनाए, जरूरतमंदों को तुरंत अस्पताल पहुंचाया, बेड बढ़ाए, ऑक्सीजन के बफर स्टॉक तैयार किए। हमारे यहां अभी भी इस तरह का काम नहीं हो रहा है। हो रहा होता, तो अदालतें क्यों दखल देतीं? इसलिए कुछ काम ऐसे हैं जिन पर तत्काल ध्यान दिए जाने की जरूरत है। हमारा स्वास्थ्य अमला मार्च, 2020 से लगातार युद्ध स्तर पर काम कर रहा है। बीते एक वर्ष से दिन-रात अपनी सेवाएं देते-देते अब वो पूरी तरह थक चुका है.

अमेरिका की इस कामयाबी में एक बात ऐसी है, जो शायद उसके लिहाज से सामान्य हो, लेकिन भारत के संदर्भ में इसकी खास अहमियत है। दरअसल, अमेरिका ने टीकाकरण कार्यक्रम को लालफीताशाही से पूरी तरह मुक्त रखा है। नागरिकता के दस्तावेज से ज्यादा जरूरी लोगों की जान बचाना है और इसके लिए हर व्यक्ति को टीका लगाया जा रहा है, भले ही वो गैर-कानूनी तरीके से अमेरिका में रह रहा हो और यह कहानी केवल अमेरिका की नहीं है। ब्रिटेन, इजराइल जैसे तमाम विकसित देशों ने कोरोना की तांडव-लीला के बीच भी अपने-अपने टीकाकरण कार्यक्रम में जरा-भी ढील न आने देकर कोरोना पर काबू पाया है।

ऐसा नहीं है कि भारत सरकार टीकाकरण की अहमियत से वाकिफ नहीं है। वरना न तो वह वैक्सीन उत्पादन को बढ़ावा देने के इतने जतन करती, न दुनिया भर की वैक्सीन के लिए देश के दरवाजे खोलती, लेकिन फिर भी अगर टीकाकरण कार्यक्रम हिचकोले खाते हुए आगे बढ़ रहा है, तो इसका मतलब है कि व्यवस्था में कोई खामी तो है। यह समस्या दूसरे कई इंतजामों को लेकर भी है। याद करिए जब ऐसे हालात चीन के सामने थे, तो उसने क्या किया था? चीन ने अपने संसाधनों का तेजी से इस्तेमाल किया, नये अस्पताल बनाए, जरूरतमंदों को तुरंत अस्पताल पहुंचाया, बेड बढ़ाए, ऑक्सीजन के बफर स्टॉक तैयार किए। हमारे यहां अभी भी इस तरह का काम नहीं हो रहा है। हो रहा होता, तो अदालतें क्यों दखल देतीं? इसलिए कुछ काम ऐसे हैं जिन पर तत्काल ध्यान दिए जाने की जरूरत है। हमारा स्वास्थ्य अमला मार्च, 2020 से लगातार युद्ध स्तर पर काम कर रहा है।

बीते एक वर्ष से दिन-रात अपनी सेवाएं देते-देते अब वो पूरी तरह थक चुका है, इसलिए वर्तमान परिस्थितियों में उसी रफ्तार में उनसे स्वास्थ्य सुविधाओं के बेहतर क्रियान्वयन की उम्मीद करना ज्यादती होगी। ताजा हालात और भविष्य की आशंकाओं को देखते हुए उसकी जगह लेने के लिए एक समानांतर व्यवस्था खड़ी करना जरूरी हो गया है। देश में करीब डेढ़ लाख ऐसे डॉक्टर्स हैं, जो एग्जाम की तैयारी में हैं। करीब ढाई लाख नर्स घरों में बैठी हैं। ये वो लोग हो सकते हैं, जो तीसरी लहर के वक्त अपनी सेवाएं देकर हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत कर सकते हैं। इसी तरह अफरा-तफरी से बचने के लिए हमें अभी से तीसरी लहर के मुकाबले के लिए मेडिकल ऑक्सीजन का बफर स्टॉक बनाना शुरू कर देना चाहिए।

बच्चे अभी तक कोरोना की पहुंच से बाहर थे, लेकिन तीसरी लहर की बात शुरू होने से अचानक वो केंद्र में आ गए हैं। इसलिए अब उन्हें भी वैक्सीन का सुरक्षा कवच पहनाने में देर नहीं करनी चाहिए। सीरम इंस्टीट्यूट ने इसके लिए अक्टूबर तक की डेडलाइन रखी है, लेकिन भारत बॉयोटेक की बच्चों की वैक्सीन अभी ट्रायल स्टेज पर ही है। ऐसे में इस दिशा में और तेजी लाए जाने की जरूरत है।

अगर समय रहते हम इन तमाम उपायों के आसपास कोई इमरजेंसी प्लान तैयार कर पाते हैं, तो संभव है कि तीसरी लहर हमें उस तरह परेशान न कर पाए, जैसा अंदेशा जताया जा रहा है। सरकार भी यही भरोसा दिला रही है कि यदि टेस्टिंग, ट्रीटिंग और कंटेनिंग की उसकी गाइडलाइंस पर देश चलेगा, तो तीसरी लहर के व्यापक असर को निस्संदेह रोका जा सकता है।

वैश्विकी

पेटेंट में फंसी संजीवनी

डॉ. दिलीप चौबे

महामारी के दौर में भी क्षुद्र स्वार्थ और मुनाफाखोरी की प्रवृत्ति को अमीर देश छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं।

कोरोना विषाणु महामारी से जूझ रही दुनिया को सस्ते दाम पर और व्यापक स्तर पर वैक्सीन की जरूरत है, लेकिन वैक्सीन के उत्पादन में पश्चिमी देश और उनकी औषधि निर्माता कंपनियां उदार रवैया अपनाने के लिए तैयार नहीं हैं। सामान्य दिनों में विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के जिस बौद्धिक संपदा संरक्षण समझौते की दुहाई दी जाती है, वही तर्क लाखों लोगों की मौत होने और करोड़ों लोगों के बीमार होने के दौर में भी दोहराई जा रही है।

अमीर देशों की यह असंवेदनशीलता इस लिहाज से और भी चौंकाने वाली है कि ये सभी देश कोरोना महामारी की विभीषिका झेल चुके हैं जबकि भारत जैसे विकासशील और अल्प विकसित देश इस महामारी से जूझ रहे हैं। अमीर देश उदारता दिखाने के लिए तैयार नहीं हैं। भारत और दक्षिण अफ्रीका ने पिछले वर्ष अक्टूबर में बौद्धिक संपदा के नियमों में छूट देने का प्रस्ताव रखा था। डब्ल्यूटीओ में इस प्रस्ताव पर अमीर देशों ने ध्यान नहीं दिया। अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा और जर्मनी सहित सभी यूरोपीय देशों के साथ ही जापान जैसे देशों ने भी वैक्सीन की पेटेंट में छूट या ढिलाई देने से पूरी तरह इनकार कर दिया। यदि उस समय इन देशों ने थोड़ा मानवतावादी रवैया अपनाया होता तो इस समय तक दुनिया के अनेक देश पश्चिमी देशों में विकसित फाइजर, मॉडर्ना जैसी वैक्सीन का उत्पादन कर रहे होते। अकेले भारत की ही सीरम इंस्टीटयूट, भारत बॉयोटेक, डॉ. रेड्डी'ज लैब जैसी कंपनियां उतनी बड़ी मात्रा में वैक्सीन का उत्पादन कर रही होतीं जो घरेलू मांग को पूरा करने के साथ ही दुनिया के अन्य देशों को इनकी आपूर्ति कर रही होतीं। पिछले साल अक्टूबर में भारत ने डब्ल्यूटीओ में कहा था कि अमीर देश दोहरा रवैया अपना रहे हैं। एक ओर वे वैक्सीन की अंधाधुंध खरीद और जमाखोरी में लगे रहे हैं वहीं शेष दुनिया में वैक्सीन की मांग के प्रति उदासीन हैं।

भारत के औषधि उद्योग को यह श्रेय जाता है कि उसने बौद्धिक संपदा नियमों की गिरफ्त से ऊपर उठते हुए स्वदेश में ही वैक्सीन विकसित कर ली। भारत बॉयोटेक की कोवैक्सीन बाजार में उपलब्ध अन्य वैक्सीनों की तुलना में अधिक कारगर मानी जा रही है। इतना ही नहीं भारत ने अपनी इस उपलब्धि का लाभ छोटे देशों को भी पहुंचाया तथा उन्हें वैक्सीन की आपूर्ति की।

भारत और द. अफ्रीका ने पिछले वर्ष डब्ल्यूटीओ में बौद्धिक संपदा नियमों में छूट देने का जो प्रस्ताव रखा था, वह बहुत व्यापक था। इसमें वैक्सीन ही नहीं निदान और उपचार के उपकरणों, पद्धतियों, वेंटिलेटर, सुरक्षात्मक परिधान आदि सबको पेटेंट की गिरफ्त से मुक्त रखने का प्रावधान था। अमीर देशों के तीव्र विरोध के कारण भारत और द. अफ्रीका ने अब अपने प्रस्ताव को सीमित करते हुए इसे वैक्सीन पर ही केंद्रित रखा है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने पिछले दिनों 'ट्रीप्स' के पेटेंट नियमों में कुछ समय के लिए छूट देने के प्रति समर्थन देने का वक्तव्य दिया है। अमेरिका केवल वैक्सीन के मामले में ही छूट देने के लिए तैयार है। चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार वैक्सीन निर्माण की प्रक्रिया बहुत जटिल है और इसमें अनेक देशों की कंपनियों के बौद्धिक संपदा अधिकार हैं। पेटेंट से छूट को व्यावहारिक स्तर पर लागू करना एक बड़ी चुनौती होगी।

फिलहाल 160 सदस्यीय डब्ल्यूटीओ में अमेरिका सहित करीब 120 देशों ने भारत के प्रस्ताव का समर्थन किया है। डब्ल्यूटीओ की कार्यप्रणाली के अनुसार किसी भी फैसले के लिए सभी 160 सदस्यों की सहमति जरूरी है। कोई एक सदस्य भी पूरी कवायद को नाकाम बना सकता है। अगर सब कुछ अनुकूल रहा तो भी डब्ल्यूटीओ के विचार-विमर्श और अंतिम फैसले में एक या दो महीने लग सकते हैं। भारत के लिए यह महामारी एक बड़ा सबक और संदेश लेकर आई है। इस तरह के संकट का मुकाबला करने के लिए भारत को अपनी घरेलू क्षमताओं का विस्तार करना होगा। भारत भले ही दुनिया की मदद के लिए खुले दिल से तैयार है, लेकिन अन्य देश ऐसी उदारता दिखाने के लिए तत्पर नहीं रहते। आज के दौर में भी जब भारत कोरोना की दूसरी लहर का मुकाबला कर रहा है; पश्चिमी देशों का प्रचार तंत्र देश के चिकित्सा वैज्ञानिकों और स्वास्थ्यकर्मियों का मनोबल तोड़ने में लगा है।

यादें

एक नया संगीत रचने वाला संगीतकार

आलोक पराड़कर

प्रति दिन जब कोरोना से बड़ी संख्या में लोगों के मरने की खबरें आ रही हैं, और इनमें लेखक, कलाकार, पत्रकार सभी शामिल हैं, पिछले दिनों इनके बीच एक खबर वनराज भाटिया के मृत्यु की भी थी।

उनकी मृत्यु कोरोना से नहीं हुई, वे जीवित होते तो इस महीने की 31 तारीख को 94 वर्ष के हो जाते। काफी समय से वे वृद्धावस्था की विभिन्न समस्याओं से जूझ रहे थे। ये जरूर हुआ कि वे कोरोना के डर से अस्पताल नहीं गए। उनके निधन की खबर आई तो बहुत सारे लोगों को आश्चर्य हुआ कि वे अभी तक जीवित थे। यह भी संभव है कि काफी लोग उन्हें अब जानते भी न हों।

हमारा समाज आपको तभी तक याद रखता है जब तक आप किन्हीं वजहों से चर्चा में रहते हैं वरना वह आपको आपके हाल पर, हाशिए पर छोड़ देता है। वनराज भाटिया को लेकर भी थोड़े समय पहले कुछ चर्चाएं हुई थीं। यह चर्चा उनके आर्थिक संकट की थी। बताया गया कि उन्हें घर के सामान बेच कर गुजारा करना पड़ रहा है। मुंबई में वे किराए के मकान में रहते थे और ऐसा समय आ गया था कि उनके पास किराया देने के पैसे नहीं थे। यह भी बताते हैं कि जब कुछ पत्रकार उनका हाल जानने उनके घर गए तो वे नाराज हो गए थे। उन्होंने गुस्से में कहा था कि आप लोग क्यों आए हो, अब कोई मुझसे मिलने नहीं आता, मेरा हाल जानने नहीं आता।

अपनी कविता उद्धृत करने में मुझे संकोच होता है, लेकिन बाजार की इस प्रवृत्ति पर उसकी पंक्तियों से टिप्पणी करना जरूर चाहूंगा-'अब सिरहाने नहीं होती घड़ी/ जिसकी एक सुरीली धुन/रोज सुबह हमें जगाती थी/कलाइयों पर भी इनके निशान कम होते हैं/फोन नंबरों वाली डायरियां भी अब किसी बक्से में बंद हो गई हैं/और गिनती-पहाड़ों से कभी हमें बचाने वाले/कलकुलेटर भी बीते दिनों की चीज बन गए हैं/ मोबाइल फोन ने कर दिया है इन्हें हमारे बीच से बेदखल/वैसे इनसे भी पहले जब आए थे कंप्यूटर/हमारी आसपास की बहुत सारी चीजों ने/उनके भीतर ही बना लिए थे अपने घर/डाकघर के आसपास सुबह से होने वाली/टाइपराइटरों की खट-खट भी अब नहीं है/बताते है कि जब आए थे सिंथेसाइजर/फिल्म संगीत ने की थी क्रांति/संगीतकारों ने धीरे-धीरे/अलविदा कर दिए थे अपने/सितार, शहनाई या सरोद के साजिंदे/कहीं पढ़ा था कि/हाथ काट लिया था/कई फिल्मों के पार्संगीत में शामिल ऐसे ही एक/वायलिन के प्रसिद्ध संगतकार ने/और एक बासुंरी वाले की बेटी ने कर ली थी/बार में नौकरी/हर क्षण बना रहता है खतरा/चलन से बेदखल हो जाने का/अपने सारे गुणों के बावजूद/बाजार में कबाड़ हो जाने का'।

फिल्मी दुनिया ऐसी ही क्रूर है। एक समय चमक-दमक से घिरे रहने वाले लोग कई बार गुमनामी और गरीबी में चले जाते हैं। जिनके कभी सैकड़ों मित्र हुआ करते थे, उसका हाल ऐसा हो जाता है कि महीनों लोग खोज-खबर नहीं लेते। अपनी सारी प्रतिभा, सारी कला के बावजूद वे फिल्मी दुनिया के बाजार में कबाड़ हो जाते हैं, हाशिए पर कर दिए जाते हैं। हमने कई बार देखा-सुना है कि किसी समय फिल्मों का सुपर स्टार रहा कोई अभिनेता इतना तंगहाल हो जाता है कि उसके पास इलाज के पैसे नहीं होते या भीख मांगने जैसी नौबत आ जाती है, कोई अभिनेत्री अपने घर में अकेले रहते हुए मृत पाई जाती है, और इसका पता कई दिनों बाद चलता है, मशहूर अभिनेत्री की अंतिम यात्रा ठेले पर होती है।

कई कलाकारों की मानसिक स्थिति खराब होने की भी खबरें मिलती हैं। वनराज भाटिया के आखिरी वर्षो की गुमनामी, उनका अकेलापन और आर्थिक संकट देखकर हैरत होती है कि एक ऐसे संगीतकार ने जिसने इतना काम किया, इतने क्षेत्रों में काम किया, इतने लंबे समय तक काम किया, उसे लोगों ने इस तरह छोड़ दिया, फिल्मी दुनिया ने उसकी खोज-खबर न ली, उसके कोई खास दोस्त-शुभचिंतक नहीं रहे। ढेरों फिल्मों, धारावाहिकों, संगीत अलबम, विज्ञापन, नाटक सहित संगीत के विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले और कितने ही गायक-गायिकाओं को अवसर देने वाले भाटिया इस तरह अकेले पड़ गए कि यदा-कदा कोई मिलने या खबर करने आता तो उस पर झल्ला उठते।

यह सच है कि लंबी संगीत यात्रा के बावजूद भाटिया के ऐसे गीत बहुत अधिक नहीं हुए, जिन्हें लोकप्रियता के मुहावरे में बहुत सफल माना जाए। उनके कई समकालीन संगीतकारों की तरह उनके गीत आज उस तरह नहीं गाए-बजाए जाते हैं, लेकिन उनका काम कई अथरे में अद्वितीय और अनूठा था। वे एक ऐसे संगीतकार थे, जिसमें अगर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की गहरी समझ थी और जिसका असर बार-बार उनके संगीत में दिखता रहा तो वे पाश्चात्य संगीत का एक गहरा प्रभाव हिंदी फिल्मों में लेकर आए। लंबे समय तक विदेश में रहने और पाश्चात्य संगीत की शिक्षा ग्रहण करने के कारण उनके पास इसकी अद्भुत समझ थी। भारतीय और विदेशी संगीत वाद्यों की भी उन्हें खूब जानकारी थी। उनका संगीत एक अलग किस्म का वह संगीत था, जिसकी जरूरत उस दौर में नये सिनेमा को थी।

जीएसटी में छूट से टीकों की कीमत में बढ़ोतरी हो सकती है: वित्त मंत्री

नई दिल्ली। कोरोना टीकों पर माल एवं सेवा कर (जीएसटी) की पूरी छूट देने की मांग पर सफाई देते हुए केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने रविवार को कहा कि पूरी छूट से आम लोगों पर असर पड़ेगा क्योकि वैक्सीन की कीमतें बढ़ जाएंगी। पीएम को लिखे गए पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के एक पत्र का जवाब देते हुए, जिसमें ममता ने स्वास्थ्य ढांचे में सुधार के लिए समर्थन की मांग करने के साथ-साथ जीवन रक्षक दवाओं और उपकरणों से जीएसटी और सीमा शुल्क हटाने की मांग की है, के जवाब में सीतारमण ने कहा कि अगर जीएसटी में छूट दी जाती है तो टीका निर्माता इनपुट टैक्स क्रेडिट के लाभार्थी नहीं होंगे। यदि जीएसटी में छूट है। वित्त मंत्री का विचार है कि वैक्सीन के घरेलू निर्माता के हित में और नागरिकों के हित में 5 प्रतिशत जीएसटी यथोचित है। वित्त मंत्री ने कहा, अगर जीएसटी से पूर्ण छूट दी जाती है, तो वैक्सीन निर्माता अपने इनपुट करों की भरपाई नहीं कर पाएंगे और मूल्य में वृद्धि करेंगे, जिससे इसका सीधा असर आम लोगों पर पड़ेगा। मंत्री ने कहा कि कोविड ड्रग्स और ऑक्सीजन कंसंट्रेटर्स पर लगने वाले टीके पर जीएसटी की दर 5 प्रतिशत से 12 प्रतिशत तक है और इन वस्तुओं के घरेलू आयात और वाणिज्यिक आयात पर लागू है।

सर्राफा एमसीएक्स समीक्षा: सोना 1014 रुपए और चांदी 3,905 रुपए हुई महंगी

मुंबई: विदेशों में दोनों कीमती धातुओं में रही जबरदस्त तेजी के कारण घरेलू स्तर पर बीते सप्ताह वायदा बाजार में सोने में 1,014 रुपए प्रति दस ग्राम और चांदी में 3,905 रुपए प्रति किलोग्राम का उछाल देखा गया। एमसीएक्स वायदा बाजार में गिरावट से उबरते हुए सोने की कीमत पिछले सप्ताह 1,014 रुपए यानी 2.12 प्रतिशत चढ़कर 47,751 रुपए प्रति दस ग्राम पर पहुंच गई। सोना मिनी भी 1,288 रुपए यानी 2.70 प्रतिशत की साप्ताहिक बढ़त में अंतिम कारोबारी दिवस पर 47,719 रुपए प्रति दस ग्राम पर बंद हुआ। घरेलू बाजार में कोविड-19 और लॉकडाउन के कारण सोने की मांग कम है लेकिन विदेशों में रही तेजी से इसे समर्थन मिला। वैश्विक स्तर पर बीते सप्ताह सोना हाजिर 62.50 डॉलर यानी 3.41 प्रतिशत चमककर 1,81.60 डॉलर प्रति औंस पर पहुंच गया। जून का अमेरिकी सोना वायदा भी 63.20 डॉलर की गिरावट के साथ शुक्रवार को 1,832 डॉलर प्रति औंस पर बंद हुआ। घरेलू स्तर पर चांदी समीक्षाधीन सप्ताह के दौरान 3,905 रुपए यानी 5.47 प्रतिशत महंगी हुई और सप्ताहांत पर 71,429 रुपए प्रति किलोग्राम बिकी। चांदी मिनी की कीमत 4,033 रुपए चढ़कर 71,480 रुपए प्रति किलोग्राम रही। अंतरराष्ट्रीय बाजार में चांदी हाजिर 1.55 डॉलर की साप्ताहिक मजबूती के साथ 27.48 डॉलर प्रति औंस पर रही।

आईडीएफसी बैंक का शुद्ध लाभ 79 फीसदी पहुंचा

मुंबई, आईडीएफसी फर्स्ट बैंक ने रविवार को मार्च में समाप्त तिमाही में अपने शुद्ध लाभ में 78.6 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 127.81 करोड़ रुपये की वृद्धि दर्ज की। वित्त वर्ष 2016 की इसी अवधि के दौरान बैंक ने 71.54 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ अर्जित किया था। वित्त वर्ष 2015 की चौथी तिमाही के दौरान बैंक की कुल आय 4,576.12 करोड़ रुपये के मुकाबले 4,834 करोड़ रुपये रही। समीक्षाधीन अवधि में सकल अग्रिम का प्रतिशत के रूप में आईडीएफसी फर्स्ट बैंक की सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्ति 4.15 प्रतिशत थी, जो पिछले वित्त वर्ष की जनवरी -मार्च तिमाही में 2.60 प्रतिशत थी। वित्त वर्ष 2021 की चौथी तिमाही का प्रावधान 603 करोड़ रुपये था, जबकि वित्त वर्ष 2020 की चौथी तिमाही के लिए 679 करोड़ रुपये और वित्त वर्ष 2021 की तीसरी तिमाही की तुलना में 595 करोड़ रुपये रहा। आईडीएफसी फर्स्ट बैंक के प्रबंध निदेशक और सीईओ वी. वैद्यनाथन ने कहा, 6 अप्रैल, 2021 को क्यूआईपी के माध्यम से जुटाई गई 3,000 करोड़ रुपये की इक्विटी पूंजी को शामिल करते हुए, हमारी समग्र पूंजी पर्याप्तता 16.32 प्रतिशत पर मजबूत है। हम उच्च स्तर की तरलता बनाए रखते हैं।

कोरोना संक्रमण की स्थिति, कंपनियों के वित्तीय परिणाम, वृहत आर्थिक आंकडे तय करेंगे बाजार की चाल

बिजनेस डेस्क:

कोरोना वायरस संक्रमण की स्थिति, कंपनियों के वित्तीय परिणाम और औद्योगिक उत्पादन समेत वृहत आर्थिक आंकड़े इस सप्ताह बाजार की चाल तय करेंगे। इस सप्ताह अवकाश के कारण बाजार में चार दिन ही कारोबार होगा। इसके अलावा वैश्विक प्रवृत्ति और रुपए में उतार-चढ़ाव का भी बाजार धारणा पर असर पड़ेगा। घरेलू शेयर बाजार बृहस्पतिवार को ईद-उल-फित्र के मौके पर बंद रहेंगे। जियोजीत फाइनेंशियल सर्विसेज के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा, ''इस सप्ताह बाजार की प्रवृत्ति कोविड संक्रमण के मामलों की संख्या, कंपनियों के तिमाही परिणाम, मार्च महीने के औद्योगिक उत्पादन तथा अप्रैल महीने के मुद्रास्फीति के आंकड़े से निर्धारित होगी। इस सप्ताह एशियन पेंट्स, जिंदल स्टील एंड पावर लि., लुपिन, वेदांता, सिप्ला और डा. रेड्डीज लैबोरेटरीज के वित्तीय परिणामों पर निवेशकों की नजर होगी। मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज लि. के प्रमुख (खुदरा शोध) सिद्धार्थ खेमका ने कहा, ''ऐसा लगता है निवेशकों ने अपने आकलन में कोविड मामलों को ध्यान में रखा है और फिलहाल वे इसके अल्पकालीन प्रभाव से अलग देख रहे हैं। हालांकि महामारी को लेकर जोखिम लंबी अवधि तक रहने वाला है और इसकी रोकथाम के लिये विभिन्न राज्यों में 'लॉकडाउन और अन्य पाबंदियां फिलहाल हटती नहीं दिख रही इससे बाजार में तेजी पर अंकुश लग रहा है।

उन्होंने कहा, ''अतः आने वाले समय में बाजार उतार-चढ़ाव के साथ सीमित दायरे में रह सकता है।

आने वाले दिनों में कोविड-19 मामलों की संख्या और टीकाकरण की गति आर्थिक पुनरूद्धार की तेजी को तय करेंगी। विश्लेषकों के अनुसार ब्रेंट क्रूड में उतार-चढ़ाव, रुपए की प्रवृत्ति और विदेशी संस्थागत निवेशको के निवेश का प्रतिरूप भी बाजार धारणा को प्रभावित करेगा।

कोरोना वायरस संक्रमण की दूसरी लहर और उसका अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव के बीच विदेशी निवेशक इस साल अप्रैल से इक्विटी बाजार में शुद्ध बिकवाल बने हुए हैं।

किसानों को भुगतान के लिए चीनी मिलों को 198.64 करोड़ रुपए दिए गए

नई दिल्ली: उत्तराखंड सरकार ने शनिवार को कहा कि गन्ना किसानों को तत्काल भुगतान करने के लिए सार्वजनिक और सहकारी क्षेत्र की चीनी मिलों को 198.64 करोड़ रुपए दिए गए हैं। राज्य के गन्ना विकास और चीनी उद्योग मंत्री स्वामी यतीश्वरानंद ने कहा कि मुख्यमंत्री तीरथ सिंह रावत को स्थिति से अवगत कराने के बाद यह राशि उपलब्ध कराई गई। उन्होंने कहा कि गन्ना किसानों को तत्काल भुगतान करने के लिए बाजपुर, नदेही, किच्छा और डोईवाला की सार्वजनिक क्षेत्र की और सहकारी चीनी मिलों के बैंक खातों में 198.64 करोड़ रुपए जमा किए गए हैं। उन्होंने कहा कि पिछले कई वर्षों में यह पहली बार है कि उत्तराखंड के गन्ना किसानों को पेराई सत्र समाप्त होने के तुरंत बाद उनकी उपज का भुगतान प्राप्त होगा।

म्यूचुअल फंड की लगातार दूसरे महीने लिवाली, अप्रैल में शेयरों में किए 5,526 करोड़ रुपए निवेश

नई दिल्ली: म्यूचुअल फंड इकाइयों ने अप्रैल महीने में शेयरों में 5,526 करोड़ रुपए निवेश किए। यह लगातार दूसरा महीना है जब उन्होंने बाजार में कुछ सुधार देखने के बाद शेयरों में पैसा लगाया है। इनवेस्ट 19 के संस्थापक और सीईओ (मुख्य कार्यपालक अधिकारी) कौशलेन्द्र सिंह सेंगर ने कहा कि कई वित्तीय प्रौद्योगिकी कंपनियां क्षेत्र में आ रही हैं, इससे उपयोगकर्ताओं की संख्या बढ़ी है। ऐसे में आने वाले महीनों में म्यूचुअल फंड का निवेश बढ़ेगा। बजाज कैपिटल के मुख्य शोध अधिकारी आलोक अग्रवाल ने भी कहा कि तेजी का रुख बना रहेगा क्योंकि वित्त वर्ष 2020-21 के वित्तीय परिणाम के बाद मूल्यांकन कुछ नीचे आया है और कीमतों में सुधार से निवेशकों को शेयर बाजारों में निवेश का अवसर मिल रहा है। उन्होंने कहा कि इसके अलावा मार्च से बांड पर प्रतिफल नरम होने से भी इस रुख को गति मिल रही है। निवेशक अधिक रिटर्न की उम्मीद में शेयरों में निवेश कर रहे हैं। भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) के आंकड़े के अनुसार म्यूचुअल फंड ने अप्रैल महीने में शुद्ध रूप से 5,526 करोड़ रुपए निवेश किए। यह मार्च में किए गए 4,773 करोड़ रुपए के निवेश से कहीं अधिक है। म्यूचुअल फंड द्वारा दस महीनों में इस प्रकार का यह पहला निवेश है। सेबी के पास उपलब्ध आंकड़े के अनुसार इस निवेश से पहले, म्यूचुअल फंड जून 2020 से शेयर बाजार से पैसा निकाल रहे थे। सेंगर ने कहा, ''हमने पिछले महीने म्यूचुअल फंड के शेयरों में निवेश में 15.8 प्रतिशत की वृद्धि देखी। शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव के देखते हुए निवेशकों ने जोखिम कम करने के लिये इक्विटी म्यूचुअल फंड का सहारा लिया। बजाज कैपिटल के मुख्य अनुसंधान अधिकारी आलोक अग्रवाल ने कहा कि म्यूचुअल फंड प्रवाह सामान्य तौर पर निवेशकों के संबंधित म्यूचुअल फंड योजनाओं में निवेश को प्रतिबिंबित करता है।

RBI ने RTI के तहत दी जानकारी: मर्जर से 2,118 बैंक की शाखाओं का वजूद खत्म, चेक करें लिस्ट

बिजनेस डेस्क:

भारतीय रिजर्व बैंक ने सूचना के अधिकार के तहत बताया है कि वित्तीय वर्ष 2020-21 में 10 सरकारी बैंकों की कुल 2,118 बैंकिंग शाखाएं या तो हमेशा के लिए बंद कर दी गई या इन्हें दूसरी बैंक शाखाओं में मिला दिया गया है। नीमच के आरटीआई कार्यकर्ता चंद्रशेखर गौड़ ने रविवार को बताया कि रिजर्व बैंक ने उन्हें सूचना के अधिकार के तहत यह जानकारी दी है। इस जानकारी के मुताबिक वित्त वर्ष 2020-21 में शाखा बंदी या विलय की प्रक्रिया से बैंक ऑफ बड़ौदा की सर्वाधिक 1,283 शाखाओं का वजूद खत्म हो गया। इस प्रक्रिया से स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की 332, पंजाब नेशनल बैंक की 169, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की 124, केनरा बैंक की 107, इंडियन ओवरसीज बैंक की 53, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया की 43, इंडियन बैंक की 5 और बैंक ऑफ महाराष्ट्र एवं पंजाब एंड सिंध बैंक की एक-एक शाखा बंद हुई।

BoI और यूको बैंक की बंद नहीं हुई कोई शाखा

इस ब्योरे में स्पष्ट नहीं किया गया है कि आलोच्य अवधि के दौरान इन बैंकों की कितनी शाखाएं हमेशा के लिए बंद कर दी गईं और कितनी शाखाओं को दूसरी शाखाओं में मिला दिया गया। रिजर्व बैंक ने आरटीआई के तहत बताया कि 31 मार्च को समाप्त वित्त वर्ष 2020-21 में बैंक ऑफ इंडिया और यूको बैंक की कोई भी शाखा बंद नहीं हुई।

आरटीआई के तहत दिए जवाब में संबंधित 10 सरकारी बैंकों की शाखाओं के बंद होने या इन्हें अन्य शाखाओं में मिलाए जाने का कोई कारण नहीं बताया गया है लेकिन सरकारी बैंकों के महाविलय की योजना के एक अप्रैल 2020 से लागू होने के बाद शाखाओं की संख्या को युक्तिसंगत बनाना इसकी सबसे बड़ी वजह मानी जा रही है। गौरतलब है कि सरकार ने पिछले वित्त वर्ष में 10 सरकारी बैंकों को मिलाकर इन्हें चार बड़े बैंकों में तब्दील कर दिया था। इसके बाद अब सरकारी बैंकों की तादाद घटकर 12 रह गई है। महाविलय के तहत एक अप्रैल 2020 से ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स और यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया को पंजाब नेशनल बैंक में, सिंडिकेट बैंक को केनरा बैंक में, आंध्रा बैंक व कॉरपोरेशन बैंक को यूनियन बैंक ऑफ इंडिया में और इलाहाबाद बैंक को इंडियन बैंक में मिला दिया गया था।

AIBEA के महासचिव ने क्या कहा

इस बीच, अखिल भारतीय बैंक कर्मचारी संघ (एआईबीईए) के महासचिव सीएच वेंकटचलम ने कहा कि सरकारी बैंकों की शाखाएं घटना भारत के बैंकिग उद्योग के साथ ही घरेलू अर्थव्यवस्था के हित में भी नहीं है तथा बड़ी आबादी के मद्देनजर देश को बैंक शाखाओं के विस्तार की जरूरत है। वेंकटचलम ने कहा, सरकारी बैंकों की शाखाएं घटने से बैंकिंग उद्योग में नए रोजगारों में भी लगातार कटौती हो रही है जिससे कई युवा मायूस हैं। पिछले तीन साल में सरकारी बैंकों में नई भर्तियों में भारी कमी आई है। दूसरी तरफ, अर्थशास्त्री जयंतीलाल भंडारी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के विलय के सरकारी कदम को सही ठहराते हैं। उन्होंने कहा, देश की अर्थव्यवस्था को रफ्तार देने के लिए हमें छोटे आकार के कमजोर सरकारी बैंकों के बजाए बड़े आकार के मजबूत सरकारी बैंकों की जरूरत है।

टीकाकरण ही लोगों को कोविड-19 महामारी से सुरक्षित करने का तरीका: टाटा समूह

नई दिल्ली:

विभिन्न विनिर्माताओं के और टीकों की निर्धारित प्रक्रिया के तहत मंजूरी के साथ तेजी से टीकाकरण अभियान चलाकर ही लोगों को कोविड-19 महामारी से सुरक्षित किया जा सकता है। टाटा समूह के एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह कहा है। समूह विदेशों से 60 क्रॉयोजेनिक कंटेनर लाने और करीब 400 ऑक्सीजन उत्पादन इकाइयां लगाने की प्रक्रिया में है। इन ऑक्सीजन उत्पादन इकाइयों का उपयोग छोटे शहरों के अस्पतालों में किया जा सकता है जिससे महामरी की दूसरी लहर से निपटने में मदद मिलेगी। साथ ही समूह शीत गृह श्रृंखला (कोल्ड चेन) तैयार कर रहा है ताकि परिवहन के लिए कम तापमान की आवश्यकता वाले टीके के स्वीकृत होने की स्थिति में इसका उपयोग किया जा सके। टाटा संस के अध्यक्ष (बुनियादी ढांचा,रक्षा, एयरोस्पेस और वैश्विक कंपनी मामले) बनमाली अग्रवाल ने कहा, ''मेरे हिसाब से जितनी तेजी से और जल्दी हम अपने लोगों को टीका लगाने में सक्षम होंगे, उतना ही बेहतर होगा क्योंकि यह हमारे लोगों को सुरक्षित करने का यह एक स्पष्ट तरीका है। यह पूछे जाने पर कि क्या भारत को अन्य विनिर्माताओं से और टीकों की जरूरत है, उन्होंने कहा, ''निश्चित रूप से। लोगों को तेजी से टीकाकरण करने के लिए जो भी जरूरी हो, किए जाने की जरूरत है लेकिन आपको इसे सुरक्षित रूप से करना होगा परीक्षण के संदर्भ में जो भी प्रक्रिया है, उसका पालन करते हुए सावधानी बरतने के साथ आपको यह करना होगा। अग्रवाल ने कहा, ''जाहिर तौर पर, अगर आपके पास विनिर्माताओं की संख्या अधिक है, इससे चीजें काफी आसान होंगी। जितने अधिक टीके होंगे, हमारे सभी लोगों को टीका लगाना आसान हो सकता है। उल्लेखनीय है कि भारत के औषधि नियामक ने पिछले महीने कुछ शर्तों के साथ रूस के कोविड-19 टीके स्पुतनिक ड्क के सीमित आपात उपयोग को मंजूरी दे दी। इस टीके का आयात डा. रेड्डीज लैबोरेटरीज करेगी। इससे देश में तीसरे टीके के उपयोग का रास्ता साफ हो गया है। इससे पहले, इस साल जनवरी में भारतीय औषधि महानियंत्रक (डीसीजीआइ) ने कोविड-19 के दो टीकों भारत बॉयोटेक के कोवैक्सीन और ऑक्सफोर्ड-एस्ट्राजेनका के कोविशील्ड के आपात उपयोग को मंजूरी दी थी। कोविशील्ड का उत्पादन सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया पुणे में कर रही है। अग्रवाल ने कहा कि टाटा समूह टीकाकरण कार्यक्रम में सहायता देने को लेकर तैयारी कर रहा है। ''हम एक तरह से तैयार हो रहे हैं। अगर हमारे पास ऐसा टीका है जिसे कुछ कोल्ड चेन की जरूरत है, तो हम इसको ध्यान में रखकर तैयारी कर रहे हैं। सौभाग्य से, समूह के भीतर, हमारे पास वोल्टास जैसी कंपनियां हैं। उन्होंने यह भी कहा, ''हमारे लिए

दीर्घकाल में स्वास्थ्य संबंधी ढांचागत सुविधाओं में निवेश से इनकार नहीं किया जा सकता। यह देश के लिए महत्वपूर्ण है। अग्रवाल ने कहा कि लेकिन फिलहाल यह साफ है कि अर्थव्यवस्था की वृद्धि और विकास कोविड-19 से निपटने और उसके प्रबंधन की क्षमता पर निर्भर है। उन्होंने कहा, ÷अगर हमने इसका प्रबंधन सही तरीके से कर लिया, तो चीजें बेहतर होंगी। अन्यथा चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा, मुझे पूरा भरोसा है कि हम इसे कर (प्रबंधित) सकते हैं।

देश की 10 मूल्यवान कंपनियों से 8 के बाजार पूंजीकरण में इजाफा

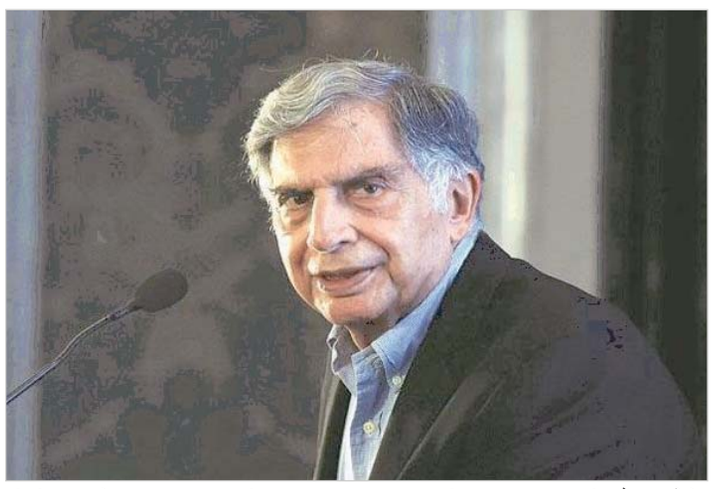

नई दिल्ली:

देश के 10 सर्वाधिक मूल्यवान कंपनियों में से आठ के बाजार पूंजीकरण में पिछले सप्ताह संयुक्त रूप से 81,250.83 करोड़ रुपए का इजाफा हुआ। इसमें सर्वाधिक लाभ में टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) रही। शुक्रवार को समाप्त सप्ताह में केवल रिलायंस इंडस्ट्रीज लि. तथा इन्फोसिस को बाजार पूजीकरण के मामले में नुकसान हुआ। बाकी आठ कंपनियों टीसीएस, एचडीएफसी बैंक, हिदुस्तान यूनिलीवर लि., एचडीएफसी, आईसीआईसीआई बैंक, कोटक महिंद्रा बैंक, बजाज फाइनेंस और भारतीय स्टेट बैंक लाभ में रहे। टीसीएस का बाजार मूल्यांकन पिछले सप्ताह 34,623.12 करोड़ रुपए उछलकर 11,58,542.89 करोड़ रुपए पहुंच गया। वहीं हिंदुस्तान यूनिलीवर का एमकैप 13,897.69 करोड़ रुपए बढ़कर 5,66,950.71 करोड़ रुपए रहा। एचडीएफसी का बाजार पूंजीकरण (एमकैप) 13,728.03 करोड़ रुपए बढ़कर 4,50, 310.13 करोड़ रुपए जबकि कोटक महिंद्रा बैंक का बाजार मूल्यांकन 6,213.06 करोड़ रुपए बढ़कर 3,52,756.84 करोड़ रुपए रहा। आईसीआईसीआई बैंक का बाजार पूंजीकरण 4,428.5 कराड़ रुपए बढ़कर 4,19,776.85 करोड़ रुपए जबकि भारतीय स्टेट बैंक का एमकैप 4,239.2 करोड़ रुपए बढ़कर 3,19,679.59 करोड़ रुपए रहा। बजाज फाइनेंस का बाजार पूंजीकण पिछले सप्ताह 2,797.59 करोड़ रुपए बढ़कर 3,31,436 करोड़ रुपए तथा एचडीएफसी बैंक का एमकैप 1,323.64 करोड़ रुपए की वृद्धि के साथ 7,80,174.61 करोड़ रुपए रहा। इसके विपरीत, रिलायंस इंडस्ट्रीज का बाजार पूंजीकरण पिछले सप्ताह 40,033.57 करोड़ रुपए घटकर 12,24,336.42 करोड़ रुपए तथा इन्फोसिस की बजार हैसियत 639.11 करोड़ रुपए घटकर 5,76,228.85 करोड़ रुपए रहा। पिछले सप्ताह, तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 424.11 यानी 0.86 प्रतिशत मजबूत हुए। शीर्ष 10 मूल्वान कंपनियों में रिलायंस इंडस्ट्रीज सबसे ऊपर रही। उसके बाद क्रमशः टीसीएस, एचडीएफसी बैंक, इन्फोसिस, हिंदुस्तान यूनिलीवर लि., एचडीएफसी, आईसीअईसीआई बैंक, कोटक महिंद्रा बैंक, बजाज फाइनेंस और भारतीय स्टेट बैंक का स्थान रहा।

वैक्सीन उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, कच्चे माल की आपूर्ति जरूरी: भारत बायोटेक

नई दिल्ली:

भारत बायोटेक की संयुक्त प्रबंध निदेशक सुचित्रा इला ने शनिवार को कहा कि वैक्सीन की भारी मांग को पूरा करने के लिए भागीदारी, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और विभिन्न महत्वपूर्ण उपकरणों और सामग्रियों की आपूर्ति जरूरी है। यूरोपीय संघ-भारत कारोबार गोलमेज सम्मेलन में इला ने कहा कि पेटेंट छूट से अधिक महत्वपूर्ण साझेदारी और कच्चे माल की लगातार आपूर्ति है, जो उत्पादन को गति देने के लिए महत्वपूर्ण हैं। इससे न सिर्फ घरेलू मांग को पूरा करने में मदद मिलेगी, बल्कि पूरी दुनिया की मांग को पूरा किया जा सकेगा। उन्होंने कहा कि भारत जैसे विशाल देश में टीकाकरण की जरूरतों को पूरा करने के लिए सहयोग जरूरी है। उन्होंने कहा, हम इसे (कोवैक्सीन) अमेरिका में पंजीकृत कर रहे हैं और हमें यूरोप में ऐसा करके खुशी होगी, इसलिए, हमें यूरोपीय संघ की कंपनियों और शैक्षणिक संस्थानों के साथ सहयोग करने और साझेदारी करने में खुशी होगी। उन्होंने कहा, भारत एक बड़ा देश है। हम अपनी आबादी को 2.6 अरब (1.3 अरब लोगों के लिए जुड़वां खुराक) टीके नहीं लगा सकते, जो इस वक्त की मांग है। उन्होंने कहा कि दो अरब डॉलर की खुराक भी ऐसा लक्ष्य है, जो किसी देश के लिए संभव नहीं। इला ने कहा, मुझे पता है कि हम सभी इस बारे में जानते हैं और इसे समझते हैं लेकिन मुझे यकीन है कि हम अधिक प्रौद्योगिकी को लाकर या पेटेंट में थोड़ी राहत दे सकते हैं और हम भारतीय निर्माताओं के रूप में इन नई प्रौद्योगिकी का अपने संयंत्रों में उपयोग कर सकते हैं।

कामधेनु समूह का अगले पांच साल में रंग रोगन से 1,000 करोड़ रुपए के कारोबार का लक्ष्यः अग्रवाल

नई दिल्ली:

इमारतों के निर्माण में उपयोग होने वाला सामान बनाने वाले कामधेनु समूह ने अपने रंग रोगन कारोबार से अगले 5 साल में 1,000 करोड़ रुपए की आय का लक्ष्य रखा है। नई आवासीय परियोजनाओं के साथ उत्पाद की बढ़ती मांग के बीच समूह ने यह लक्ष्य रखा है। कामधेनु समूह के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक (सीएमडी) सतीश कुमार अग्रवाल ने कहा कि कंपनी अपने पेंट कारोबार को अलग इकाई बनाने की प्रक्रिया में है। कंपनी के आंकड़े के अनुसार कामधेनु की पेंट कारोबार से आय वित्त वर्ष 2019-20 में 226 करोड़ रुपए रही। उन्होंनेकहा, ''कामधेनु पेंट्स कामधेनु समूह की इकाई है। हमने अपने पेंट कारोबार से 2025-26 तक 1,000 करोड़ रुपए की आय का लक्ष्य रखा है। उन्होंने इसके लिए संगठित क्षेत्र की बढ़ती बाजार हिस्सेदारी का हवाला दिया। अग्रवाल के अनुसार देश में पेंट उद्योग की सालाना वृद्धि दर करीब 18 से 20 प्रतिशत है। उन्होंने कहा कि पेंट क्षेत्र के बेहतर परिचालन के लिए प्रबंधन ने इस कारोबार को अलग कर नई इकाई बनाने और बाद में शेयर बाजार में सूचीबद्ध कराने का निर्णय किया है। अग्रवाल ने कहा, ''पेंट कारोबार को अलग करने की प्रक्रिया जारी है और हम इसे इसी वित्त वर्ष 2021-22 में पूरा करने की उम्मीद कर रहे हैं। हमें इस संदर्भ में कुछ नियामकीय मंजूरी मिल गई है और कुछ अभी बाकी है। ये मंजूरियां चालू वित्त वर्ष में मिल जाने की उम्मीद है। इसके पीछे सोच पेंट कारोबार पर ध्यान देना और देश में इस खंड में बाजार का बड़ा हिस्सा हासिल करना है। कामधेनु पेंट्स का विनिर्माण संयंत्र राजस्थान के चोपांकी में है। इसके अलावा कंपनी डिस्टेंपर और पुट्टी जैसे उत्पाद राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा और पंजाब स्थित विनिर्माण इकाइयों से प्राप्त करती है। गुरुग्राम स्थित यह कंपनी, इसके अलावा कामधेनू सरिया, गर्डर और इस्पात क्षेत्र में काम कर रही है। कंपनी ओडीशा, गुजरात, कर्नाटक, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, बिहार, गोवा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, पश्चिम बंगाल, झारखंड और मध्य प्रदेश सहित अन्य राज्यों में फेंचाइजी मॉडल पर टीएमटी विनिर्माण कार्य करती है।

कोरोना इफैक्टः Maruti Suzuki ने 16 मई तक बंद की कारों की मैनुफैक्चरिंग

बिजनेस डेस्क:

देश की सबसे बड़ी कार विनिर्माता कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया ने कहा कि उसने देश में अपने कारखानों में मुरम्मत और रख-रखाव के लिए उत्पादन बंदी को 16 मई तक बढ़ा दिया है। कंपनी को रख-रखाव के लिए कारखाने जून में बंद करने थे लेकिन इन्हें तय से पहले 1 मई से 9 मई तक बंद करने का फैसला किया गया।

मारुति सुजुकी ने शेयर बाजार को बताया कि रख-रखाव के लिए बंदी 9 मई 2021 तक थी, जिसे महामारी की मौजूदा स्थिति को ध्यान में रखते हुए 16 मई तक बढ़ा दिया गया है। कंपनी ने हालांकि कहा कि हरियाणा के गुड़गांव और मानेसर स्थित संयंत्रों में कुछ गतिविधियां जारी रहेंगी। सुजुकी मोटर गुजरात ने भी इसी तरह का निर्णय लिया है।

होंडा कार्स ने भी टपूकड़ा प्लांट किया है बंद

इससे पहले, होंडा कार्स इंडिया ने भी देश में कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर के प्रकोप को देखते हुए राजस्थान स्थित मैनुफैक्चरिंग प्लांट को करीब दस दिनों तक बंद रखने का फैसला किया है। होंडा कार्स देश में फिलहाल अमेज़, होंडा सिटी और दूसरी गाड़ियों की बिक्री कर रही है। कोरोना वायरस संक्रमण की भयावह स्थिति का असर ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री पर भी पड़ रहा है।

Web site : www.krantisamay.com & .in , epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

चेल्सी से हारा मैनचेस्टर सिटी, खिताब का इंतजार बढ़ा

मैनचेस्टर । चेल्सी ने शनिवार को यहां मैनचेस्टर सिटी को 1-2 से हराकर टीम के चार साल में तीसरे इंग्लिश प्रीमियर लीग फुटबॉल खिताब के इंतजार को बढ़ा दिया। मैनचेस्टर सिटी को खिताब जीतने के लिए सिर्फ एक जीत दर्ज करनी है जबकि उसे तीन मुकाबले और खेलने हैं। एस्टन विला अगर रविवार को दूसरे स्थान पर मौजूद मैनचेस्टर यूनाईटेड को हरा देता है तो भी सिटी की टीम खिताब जीत लेगी। सिटी ने यूनाईटेड पर 13 अंक की बढ़त बना रखी है लेकिन उससे दो मुकाबले अधिक खेले हैं। मैनचेस्टर सिटी को 44वें मिनट में रहीम स्टर्लिंग ने बढ़त दिलाई लेकिन हाकिम जियेक ने 63वें मिनट में स्कोर बराबर कर दिया। मार्को अलोंसो ने इसके बाद इंजरी टाइम के दूसरे मिनट में गोल दागकर चेल्सी की जीत सुनिश्चित की। टोटेनहैम को शनिवार को लीड्स के खिलाफ 1-3 से हार का सामना करना पड़ा जिससे टीम की चैंपियन्स के लिए क्वालीफाई करने की उम्मीदें टूट गई। क्रिस्टल पैलेस ने हालांकि शेफील्ड यूनाईटेड को 2-0 से हराकर निचली लीग में खिसकने के खतरे को टाल दिया। शेफील्ड की टीम पहले ही निचली लीग में खिसक चुकी है।

भारतीय हॉकी कप्तान मनप्रीत ने कहा- ओलंपिक में पदक जीतने का सर्वश्रेष्ठ मौका

बेंगलुरू ।

भारतीय हॉकी टीम के कप्तान मनप्रीत सिंह का मानना है कि आगामी ओलंपिक में उनकी टीम के पास चार दशक के पदक के सूखे को समाप्त करने का सर्वश्रेष्ठ मौका होगा क्योंकि उन्हें तोक्यो खेलों के दौरान टीम से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन की उम्मीद है। भारतीय टीम अतीत में हॉकी में आठ स्वर्ण पदक जीत चुकी है लेकिन टीम ने अपना पिछला स्वर्ण 1980 में मॉस्को ओलंपिक में जीता था। मनप्रीत ने 23 जुलाई से शुरू होने वाले तोक्यो ओलंपिक की 75 दिन की उलटी गिनती के मौके पर कहा, ''हमारा मानना है कि हमारे पास ओलंपिक में पदक जीतने का सर्वश्रेष्ठ मौका है और यह विश्वास सभी को प्रेरित और आशावान बना रहा है। भारतीय कप्तान ने कहा कि हमारी ट्रेनिंग की योजना इस तरह बनाई गई है कि हम सही समय पर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करें और तोक्यो के गर्म हालात से सामंजस्य बैठाने के लिए हम सूरज की रोशनी में कई घंटे बिता रहे हैं। जर्मनी और स्पेन के खिलाफ एफआईएच प्रो लीग मुकाबले कोरोना वायरस महामारी के कारण स्थगित होने से टीम को बड़ा झटका लगा है। जर्मनी और स्पेन के खिलाफ एफआईएच प्रो लीग मुकाबले भी स्थगित होने से हम बेहद निराश थे क्योंकि इन मुकाबलों से निश्चित तौर पर हमारी तैयारी में मदद मिलती।

लेकिन हम समझ सकते हैं कि यह बेहद मुश्किल समय है और यात्रा से जुड़ी पाबंदियां हैं। इस बीच भारतीय महिला हॉकी टीम की कप्तान रानी रामपाल राहत महसूस कर रही हैं कि हाल में कोविड-19 पॉजिटिव पाई गई सभी खिलाड़ी इस घातक वायरस से उबरने के बाद अगले हफ्ते ट्रेनिंग दोबारा शुरू करेंगी। रानी के अलावा सविता पूनिया, शर्मिला देवी, रजनी, नवजोत कौर, नवनीत कौर और सुशीला 10 दिन के ब्रेक के बाद राष्ट्रीय शिविर में लौटने पर कोविड पॉजिटिव पाई गई थी। दो सहयोगी स्टाफ वीडियो विश्लेषक अमृतप्रकाश और वैज्ञानिक सलाहकार वेन लोम्बार्ड भी संक्रमित होने के बाद इस वायरस से उबर चुके हैं। रानी ने कहा कि हम राहत महसूस कर रहे हैं कि पॉजिटिव पाए गए सभी खिलाड़ी अब ठीक हैं और ट्रेनिंग दोबारा शुरू करने के लिए कमर कस चुके हैं।

मेल्टवाटर इंडियन क्वालिफायर शतरंज - अधिबन और अर्जुन में होगा फाइनल

नई दिल्ली (निकलेश जैन)

मेल्टवाटर चैम्पियन चैस टूर के लिए इंडियन क्वालिफायर शतरंज से दो खिलाड़ियों का चयन अब तय हो गया है । फाइनल मुक़ाबले में पहुँचते साथ ही अधिबन भास्करन और अर्जुन इरीगासी नें यह उपलब्धि हासिल कर ली है ,विश्वनाथन आनंद की अनुपस्थिति मे विदित गुजराती और पेंटाला हरिकृष्णा का नाम पहले से तय है । तो इस प्रकार अब आगामी मेल्टवाटर टूर्नामेंट में भारत के ये चार खिलाड़ी विश्व चैम्पियन मेगनस कार्लसन समेत दुनिया के दिग्गज खिलाड़ियों से खेलते नजर आएंगे । आज खेले गए सेमी फाइनल मुक़ाबले में टॉप सीड अधिबन भास्करन नें वर्तमान राष्ट्रीय चैम्पियन अरविंद चितांबरम को 2.5-1.5 से पराजित करते दिया , दोनों के बीच पहले तीन रैपिड मुक़ाबले ड्रॉ रहे और स्कोर 1.5-1.5 था ऐसे में अंतिम रैपिड मुक़ाबले में काले मोहरो से खेल रहे अधिबन नें 37 चालों में जीत दर्ज कर फाइनल में प्रवेश कर लिया । दूसरे सेमी फाइनल में जोरदार संघर्ष के बीच युवा ग्रांड मास्टर 14 वर्षीय डी गुकेश को 17 वर्षीय ग्रांड मास्टर अर्जुन एरिगासी नें 3-1 से पराजित कर दिया बड़ी बात यह रही की 0-1 से पिछड़ने के बाद अर्जुन नें वापसी करते हुए यह जीत हासिल की और अब वह प्रग्गानंधा के बाद दूसरे ऐसे खिलाड़ी बनेंगे जो विश्व के शीर्ष खिलाड़ियों के साथ एक प्रतियोगिता में भाग लेंगे । हालांकि कल सबकी नजर इस बात पर रहेगी की कौन इंडियन क्वालिफायर का खिताब अपने नाम करेगा ।

सबालेंका ने मैड्रिड ओपन का खिताब जीता, ज्वेरेव का फाइनल में सामना बेरेटिनी से

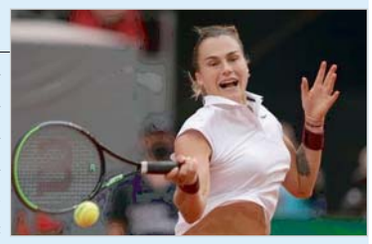

मैड्रिड ।

बेलारूस की एरिना सबालेंका ने शनिवार को यहां फाइनल में दुनिया की नंबर एक खिलाड़ी ऐशलेग बार्टी को तीन सेट तक चले कड़े मुकाबले में हराकर मैड्रिड ओपन टेनिस टूर्नामेंट का खिताब जीत लिया। मांसपेशियों की चोट के कारण दो हफ्ते पहले टूर्नामेंट से हटने की सोच रही सबालेंका ने आस्ट्रेलिया की बार्टी को 6-0 3-6 6-4 से हराकर अपना 10वां डब्ल्यूटीए खिताब जीता। सबालेंका का इस साल यह दूसरा खिताब है। उन्होंने अबु धाबी में सत्र का पहला टूर्नामेंट भी जीता था। रविवार को होने वाले पुरुष एकल फाइनल में 2018 के चैंपियन एलेक्सांद्र ज्वेरेव का सामना आठवें वरीय मातियो बेरेटिनी से होगा। सबालेंका ने इस जीत के साथ बार्टी के हाथों स्टुटगार्ट ओपन के फाइनल में मिली हार का बदला भी चुकता कर लिया। इस खिताबी जीत से सबालेंका अगले हफ्ते जारी होने वाली डब्ल्यूटीए रैंकिंग में चौथे स्थान पर पहुंच जाएंगी। बार्टी के खिलाफ जर्मनी में फाइनल में शिकस्त के दौरान सबालेंका की मांसपेशियों में चोट लगी थी। पुरुष सेमीफाइनल में ज्वेरेव ने डोमीनिक थीम को 6-3 6-4 से हराकर एक बार फिर मैड्रिड ओपन के फाइनल में जगह बनाई जहां उनका सामना 10वें नंबर के खिलाड़ी बेरेटिनी से होगा जिन्होंने कास्पर रुड को 6-4 6-4 से शिकस्त दी।

कप्तान रानी और भारतीय महिला हॉकी टीम की 6 सदस्यों ने कोरोना को दी मात

नई दिल्ली।

भारतीय महिला हॉकी की कप्तान रानी रामपाल और टीम की उनकी 6 अन्य साथियों के साथ 2 सहायक सदस्य कोविड-19 के संक्रमण से उबर गए हैं। कोविड 19 रिपोर्ट पॉजिटिव आने के बाद इन्हें बेंगलुरु में भारतीय खेल प्राधिकरण (साइ) केन्द्र में 2 सप्ताह तक पृथकवास पर रखा गया था। रानी के अलावा सविता पूनिया, शर्मिला देवी, रजनी, नवजोत कौर, नवनीत कौर और सुशीला के साथ कोरोना वायरस के चपेट में आने वालों में टीम के वीडियो विश्लेषक अमृतप्रकाश और वैज्ञानिक सलाहकार वेन लोम्बार्ड शामिल थे। इन 7 खिलाड़ियों को 10 दिनों के ब्रेक के बाद बेंगलुरु में राष्ट्रीय शिविर में भारतीय महिला हॉकी कोर ग्रुप की वापसी के बाद 24 अप्रैल को जांच में पॉजिटिव पाया गया था। उनमें हालांकि इस बीमारी के लक्षण नहीं दिख रहे थे। रानी ने ट्विटर पर जारी अपने बयान में कहा, 'पिछले दो सप्ताहों के दौरान संदेशों / फोन कॉल के माध्यम से प्यार और मानसिक समर्थन के लिए आप सभी को धन्यवाद। मैं और मेरी टीम की साथी और सहयोगी कर्मचारी कोविड-19 से अब पूरी तरह उबर गए है।' उन्होंने कहा, 'हॉकी बिरादरी के सदस्यों / मित्रों / प्रशंसकों के तौर पर आप सब के होने से मैं खुद को धन्य मानती हूं।

हमारी अच्छी देखभाल करने के लिए हॉकी इंडिया और साइ को विशेष धन्यवाद।' रानी ने देशवासियों से आग्रह किया कि वे इन कठिन समय में जरूरतमंदों की हर संभव मदद करें। उन्होंने कहा, 'इस बारे में जानकर बहुत दुख हो रहा कि इतने सारे लोग अपने प्रियजनों को खो रहे है, उन सब के लिए मैं प्रार्थना कर रही हूं। कृपया अपने निकट और प्रियजनों की जितना हो सके उतनी मदद करें।' उन्होंने कहा, 'आइए मिलकर इस महामारी से लड़ें। सुरक्षित रहें, मास्क पहनें और कोविड-19 से जुड़ी सभी दिशानिर्देशों का सख्ती से पालन करें।'

संक्षिप्त समाचार

इयान चैपल ने IPL और टी20 विश्व कप पर दिया बड़ा बयान, कही यह बात

नई दिल्ली । आस्ट्रेलियाई दिग्गज इयान चैपल का मानना है कि इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के निलंबन से पता चलता है कि क्रिकेट अभेद्य नहीं है और कोविड-19 के कारण भारत में होने वाले आगामी टी20 विश्व कप के स्थगित या किसी अन्य स्थान पर आयोजित किये जाने से इन्कार नहीं किया जा सकता है। कड़े जैव सुरक्षित वातावरण (बायो बबल) के बावजूद सनराइजर्स हैदराबाद के ऋद्धिमान साहा, दिल्ली कैपिटल्स के अमित मिश्रा तथा कोलकाता नाइट राइडर्स के वरुण चक्रवर्ती और संदीप वारियर को कोविड-19 के लिए पॉजिटिव पाया गया। चैपल ने कहा कि आम जनता में कोविड संक्रमण के बढ़ने और मौतों तथा कुछ खिलाड़ियों के पॉजिटिव पाये जाने के कारण आईपीएल 2021 का निलंबन इस बात को याद दिलाता है कि यह खेल अभेद्य नहीं है। भारत अभी कोविड-19 की दूसरी लहर से जूझ रहा है तथा यहां हर दिन चार लाख से अधिक मामले सामने आ रहे हैं। भारत में ही अक्टूबर - नवंबर में टी20 विश्व कप का आयोजन होना है। चैपल ने कहा कि वर्तमान माहौल को देखते हुए आईपीएल का निलंबन मिसाल पेश कर सकता है और इसके बाद भारत में साल के आखिर में होने वाले टी20 विश्व कप को स्थगित या किसी अन्य स्थान पर आयोजित किया जा सकता है। पहले भी विभिन्न कारणों से खेल प्रभावित होता रहा है और विभिन्न कारणों से दौरे और मैच रद्द करने पड़े थे। इनसे कुछ कहानियां जुड़ी थी जिनमें से कुछ दुखद तो कुछ मनोरंजक थी।

आईपीएल में शामिल न्यूजीलैंड के सभी सदस्य अपने घर पहुंचे

ऑकलैंड। आईपीएल 2021 में शामिल होने के लिए भारत आए न्यूजीलैंड के सभी सदस्य अपने घर पहुंच गए हैं। न्यूजीलैंड के पूर्व कप्तान ब्रेंडन मैकुलम और स्टेफन फ्लेमिंग न्यूजीलैंड के आखिरी सदस्य हैं जो भारत से स्वदेश पहुंचे हैं। आईपीएल की कुछ फ्रेंचाइजों में कोरोना के मामले सामने आने के बाद इस टूर्नामेंट को स्थगित कर दिया गया था। स्टफ डॉट को डॉट एनजेड के अनुसार, मैकुलम, फ्लेमिंग, काइल मिल्स, तेज गेंदबाज लौकी फर्ग्यूसन, कमेंटेटर साइमन डुल, स्कॉट स्टाइरिस और अंपायर क्रिस गफाने रविवार शाम छह बजे ऑकलैंड हवाई अड्डे पर लैंड किए। इससे पहले, ट्रेंट बोल्ट, फिन एलेन, जिमी नीशम, एडम मिलने और स्कॉट कुगेलजीन तथा कोच और पूर्व खिलाड़ी जेम्स पामेंट, शेन बॉन्ड तथा रॉयल चेलेंजर्स बेंगलोर के क्रिकेट ऑपरेशन के निदेशक माइक हेसन शनिवार को ऑकलैंड पहुंचे थे। इस बीच, कीवी टेस्ट टीम के खिलाड़ी केन विलियम्सन, मिशेल सेंटनर और काइल जैमिसन मालदीव गए हैं। ये खिलाड़ी इसके बाद विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल मुकाबले तथा इंग्लैंड के खिलाफ दो टेस्ट मैचों की सीरीज के लिए इंग्लैंड जाएंगे।

न्यूजीलैंड के खिलाड़ी पहुंचे अपने देश, लेकिन अब भी कई खिलाड़ी भारत में

आकलैंड ।

निलंबित हो चुकी इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) से जुड़े न्यूजीलैंड के क्रिकेटरों और कोचों का एक दल निजी विमान से स्वदेश लौट आया जबकि दूसरे समूह के रविवार को यहां पहुंचने की उम्मीद है। क्रिकेटर ट्रेंट बोल्ट, फिन एलेन, जिमी नीशाम, एडम मिल्ने और स्कॉट कुगेलिन के अलावा कोच और पूर्व खिलाड़ी जेम्स पेमेंट और शेन बांड तथा रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर के क्रिकेट संचालन निदेशक माइक हेसन शनिवार देर रात यहां पहुंचे। जैविक रूप से सुरक्षित माहौल में कोविड-19 संक्रमण के कई मामले सामने आने पर आईपीएल 2021 को निलंबित किए जाने के बाद न्यूजीलैंड के खिलाड़ियों को दो चार्टर्ड विमान से स्वदेश भेजा जा रहा है। पहला दल बोंमबारडियर ग्लोबल एक्सप्रेस निजी जेट से तोक्यो होता हुआ न्यूजीलैंड पहुंचा। एक खबर के अनुसार स्वदेश पहुंचने पर इन लोगों को पृथकवास से गुजरना होगा। दूसरी उड़ान से लॉकी फर्ग्युसन, ब्रेंडन मैकुलम, कमेंटेटर साइमन डोल और स्कॉट स्टायरिस, अंपायर क्रिस गफानी, पूर्व कप्तान स्टीफन फ्लेमिंग और काइल मिल्स के शनिवार रात भारत से रवाना होने की उम्मीद थी। कोविड-19 पॉजिटिव पाए गए विकेटकीपर बल्लेबाज टिम सीफर्ट अब भी भारत में हैं और चेन्नई के निजी अस्पताल में भेजे जाने का इंतजार कर रहे हैं। आस्ट्रेलिया के पूर्व खिलाड़ी माइकल हसी का भी कोविड पॉजिटिव पाए जाने के बाद इसी अस्पताल में इलाज किया गया था। न्यूजीलैंड के ब्रिटेन जाने वाले टेस्ट टीम के सदस्यों केन विलियमसन, मिशेल सेंटनर, काइल जेमीसन और फिजियो टॉमी सिमसेक को मालदीव भेजा गया है। शुरुआती योजना के अनुसार उन्हें नयी दिल्ली में रहना था। इन खिलाड़ियों को मालदीव भेजने का फैसला इस सलाह के आधार पर लिया गया कि ब्रिटेन में उनके

प्रवेश में एक हफ्ते का विलंब हो सकता है। पहले इनके 11 मई के आसपास ब्रिटेन जाने का कार्यक्रम था। न्यूजीलैंड की टीम दो जून से इंग्लैंड के खिलाफ दो टेस्ट की श्रृंखला खेलेगी जिसके बाद टीम को 18 जून से साउथम्पटन में भारत के खिलाफ विश्व टेस्ट चैंपियनशिप का फाइनल मुकाबला खेलना है।

बांग्लादेश बोर्ड को उम्मीद, शाकिब और मुस्ताफिजुर को मिल सकती है क्वारंटीन में छूट

ढाका : बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) को आईपीएल से लौटे अपने दो प्रमुख खिलाड़ियों आलराउंडर शाकिब अल हसन और बाएं हाथ के तेज गेंदबाज मुस्ताफिजुर रहमान पर लगे 14 दिन के संस्थागत क्वारंटीन अवधि में शिथिलता मिलने की उम्मीद है। बीसीबी के एक अधिकारी ने शनिवार को यह बात कही। बांग्लादेश के स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय के अधिकारियों ने गत चार मई को कहा था कि दोनों खिलाड़ियों को सरकार द्वारा निर्धारित क्वारंटीन सेंटर में अपना क्वारंटीन पूरा करना होगा क्योंकि छूट मिलने की कोई सम्भावना नहीं है। मुस्ताफिजुर ने हाल में एक साक्षात्कार में कहा था कि वह एक बायो बबल में जाने से लेकर दूसरे बायो बबल में जाने तक थक चुके हैं। मुस्ताफिजुर के अलावा कुछ और भी खिलाड़ी हैं जो बायो बबल की जिंदगी से प्रभावित हुए हैं। बीसीबी के मुख्य कार्यकारी निजामुद्दीन चौधरी ने शनिवार को संवाददाताओं से कहा था, मुझे लगता है कि हम चीजों को लेकर उलझन में पड़े हैं और उन्हें अलग अंदाज में देख रहे हैं जहां तक क्वारंटीन अवधि में छूट की बात है तो उसमें प्रिवेलेज या उसके जैसा कुछ भी नहीं है क्योंकि अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में ऐसे समय में अलग ही प्रोटोकॉल होते हैं। चौधरी ने कहा, मुस्ताफिजुर और शाकिब भारत से आने के बाद क्वारंटीन में हैं और आपको यह जानकर खुशी होगी कि दोनों की रिपोर्ट नेगेटिव आई है। हम उम्मीद कर रहे हैं कि हम उन्हें मना पाएंगे कि उन्हें उनकी क्वारंटीन अवधि में छूट मिले और वे अपने अभ्यास में जल्दी लौट पाएं। बांग्लादेश तीन मैचों की वनडे सीरीज के लिए 16 मई से अपना पूर्ण शिविर लगाने वाला है। यदि बीसीबी बांग्लादेश के स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय को संतुष्ट कर लेने में असफल रहता है तो ढाका में दो अलग अलग होटलों में अपना समय गुजार रहे दोनों खिलाड़ियों के पास 23 मई से शुरू होने वाले पहले वनडे की तैयारी के लिए मात्र तीन दिन रहेंगे।

मुक्केबाज मनदीप जांगड़ा ने अमरीका में पहला पेशेवर मुकाबला जीता

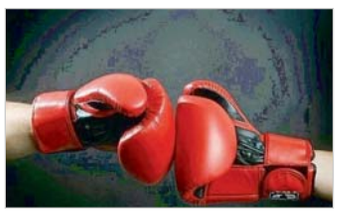

नई दिल्ली । राष्ट्रमंडल खेलों के रजत पदक विजेता भारतीय मुक्केबाज मनदीप जांगड़ा ने पेशेवर सर्किट में सकारात्मक शुरुआत करते हुए अमेरिका के फ्लोरिडा में अपने पदार्पण मुकाबले में अर्जेन्टीना के लूसियानो रामोस को हराया। मनदीप 2 महीने पहले ट्रेनिंग के लिए अमरीका गए थे। मनदीप ने रामोस के खिलाफ शनिवार को सुपर वेल्टरवेट वर्ग का अपना पहला पेशेवर मुकाबला चार दौर में सर्वसम्मत फैसले में जीता। मनदीप ने फ्लोरिडा के प्रो बॉक्स प्रमोशंस के साथ करार किया है। एशियाई चैंपियनशिप 2013 के रजत पदक विजेता 27 साल के मनदीप को 19 मार्च को अपना पहला मुकाबला लड़ना था लेकिन यह मुकाबला रद्द कर दिया गया। अमेरिकी कोच ऐसा बीर्ड और मार्क फेरेट के साथ ट्रेनिंग करने वाले मनदीप ने कहा, 'पेशेवर सर्किट में अच्छे प्रदर्शन को लेकर मैं काफी उत्सुक हूं और उम्मीद करता हूं कि अपनी टीम के साथ विश्व चैंपियनशिप जीतूंगा।

जडेजा अभी भी भारतीय टीम में ऑलराउंडर के रूप में पहली पसंद

नई दिल्ली।

भारतीय टीम के ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा का तीनों प्रारूप में कौशल किसी से छिपा नहीं है और वह अभी भी ऑलराउंडर खिलाड़ी के रूप में टीम की पहली पसंद हैं।

जडेजा को इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट दौरे के लिए टीम में लिया गया है। अक्षर पटेल के इस साल के शुरूआत में इंग्लैंड के खिलाफ हुई टेस्ट सीरीज में बेहतर प्रदर्शन के बावजूद जडेजा को टीम में लिया गया। अक्षर ने इंग्लैंड के खिलाफ घरेलू सीरीज में 27 विकेट लिए थे। हालांकि भारत की उम्मीदें एक बार फिर जडेजा पर टिकी जिन्हें इंग्लैंड दौरे के लिए टीम में शामिल किया गया। गेंदबाजी के अलावा जडेजा की बल्लेबाजी और फील्डिंग भी बेहतरीन है।न्यूजीलैंड के ऑलराउंडर स्कॉट स्टाइरिस ने हाल ही में आईपीएल के दौरान जडेजा की सराहना करते हुए कहा था, मुझे जडेजा की फील्डिंग काफी पसंद है। ग्लेन मैक्सवेल के अलावा मेरे ख्याल से वह इस वक्त दुनिया के सर्वश्रेष्ठ फील्डर हैं। जामनगर के 32 वर्षीय खिलाड़ी जडेजा ने इस साल जनवरी के बाद अबतक अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट नहीं खेला है। उन्हें ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीसरे टेस्ट में पैट कमिंस की गेंद पर चोट लगी थी जिसके बाद वह इंग्लैंड के खिलाफ तीनों प्रारूपों की सीरीज से बाहर हो गए थे। जडेजा इंग्लैंड के खिलाफ चारों टेस्ट से बाहर थे जिसके बाद अक्षर को उनकी जगह टीम में शामिल किया गया था। जडेजा आईपीएल में चेन्नई सुपर किंग्स की ओर से खेलते हैं और ऑस्ट्रेलिया दौरे के बाद यह पहला मौका था जब वह आईपीएल 2021 के दौरान मैदान पर उतरे थे। जडेजा ने आईपीएल 2021 का सीजन स्थगित होने से पहले सात मैचों में छह विकेट लिए और 131 रन बनाए थे। इसके अलावा जब अन्य फील्डर ओस के कारण गेंद पकड़ने को लेकर संघर्ष कर रहे थे ऐसे में जडेजा ने आठ कैच लपके थे। हार्दिक पांड्या की अनुपस्थिति में जडेजा का ऑलराउंडर के रूप में रोल काफी महत्वपूर्ण होगा। हार्दिक गेंदबाजी करने के लिए फिट नहीं है और उन्हें टेस्ट टीम में जगह नहीं मिली है। इंग्लैंड में जडेजा भारतीय टीम के प्राइमरी ऑलराउंडर हैं और उम्मीद की जा रही है कि वह ज्यादातर मुकाबले खेलेंगे। उनका अनुभव उन्हें युवा खिलाड़ियों वाशिंगटन सुंदर और अक्षर से ज्यादा महत्वपूर्ण बनाता है। अक्षर के मुकाबले जडेजा बल्लेबाजी में ज्यादा अच्छा करते हैं और पिछले कुछ वर्षो में उन्होंने अपनी बल्लेबाजी में काफी सुधार किया है। चेन्नई के कप्तान महेंद्र सिंह धोनी ने भी आईपीएल के दौरान जडेजा की सराहना की थी। उन्होंने कहा था, जडेजा ऐसे खिलाड़ी हैं जो अपने दम पर मैच का रूख बदल सकते हैं। पिछले कुछ वर्षो में हमने उनकी बल्लेबाजी में काफी परिवर्तन देखा है।

मालदीव के खेल मंत्री ने बेंगलुरू एफसी पर लगाया कोविड नियम तोड़ने का आरोप

माले (मालदीव) । बेंगलुरू एफसी (बीएफसी) के ईगल्स एफसी के खिलाफ 11 मई को यहां होने वाले एएफसी कप प्ले ऑफ मुकाबले के आयोजन पर संदेह है क्योंकि मेजबान देश के खेल मंत्री ने कोविड-19 नियमों के कथित उल्लंघन पर इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) टीम को देश छोड़ने को कहा है। बीएफसी द्वारा कथित उल्लंघन की असल प्रकृति का पता नहीं चला है लेकिन खेल मंत्री अहमद माहलूफ ने इसे 'अस्वीकार्य व्यवहार% करार दिया है। भारतीय कप्तान सुनील छेत्री की अगुआई में खेलने वाली बेंगलुरू की टीम शुक्रवार को मालदीव पहुंची थी। माहलूफ ने अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल पर लिखा, 'बेंगलुरू एफसी का अस्वीकार्य बर्ताव, स्वास्थ रक्षा एजेंसी और एएफसी (एशियाई फुटबॉल परिसंघ) के कड़े दिशानिर्देशों का उल्लंघन किया। 'हमने मालदीव फुटबॉल संघ को सूचित कर दिया है कि हम मैच का आयोजन नहीं कर सकते और उन्हें बेंगलुरू एफसी की रवानगी की तैयारी करने को कहा है। हम ग्रुप चरण के मुकाबले स्थगित करने के लिए मालदीव फुटबॉल संघ के जरिए एएफसी से बात करेंगे। मालदीव को प्ले आफ मुकाबले के अलावा ग्रुप डी के सभी मैचों का आयोजन करना है क्योंकि कोविड-19 महामारी को देखते हुए एएफसी एक ही स्थल पर सभी मैच कराना चाहता है। माहलूफ के ट्वीट के बाद ग्रुप डी के सभी मैचों पर भी संदेह के बादल छा गए हैं। एटीके मोहन बागान को बीएफसी और ईगल्स के बीच होने वाले प्ले आफ के विजेता से 14 मई को अपने पहले मैच में भिड़ना है। माहलूफ ने एक अन्य ट्वीट में कहा, 'मामलों के बढ़ने और जनता के दबाव के बावजूद हमने कुछ महीनों पहले की गई अपनी प्रतिबद्धता का सम्मान किया।

Web site : www.krantisamay.com & .in , epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

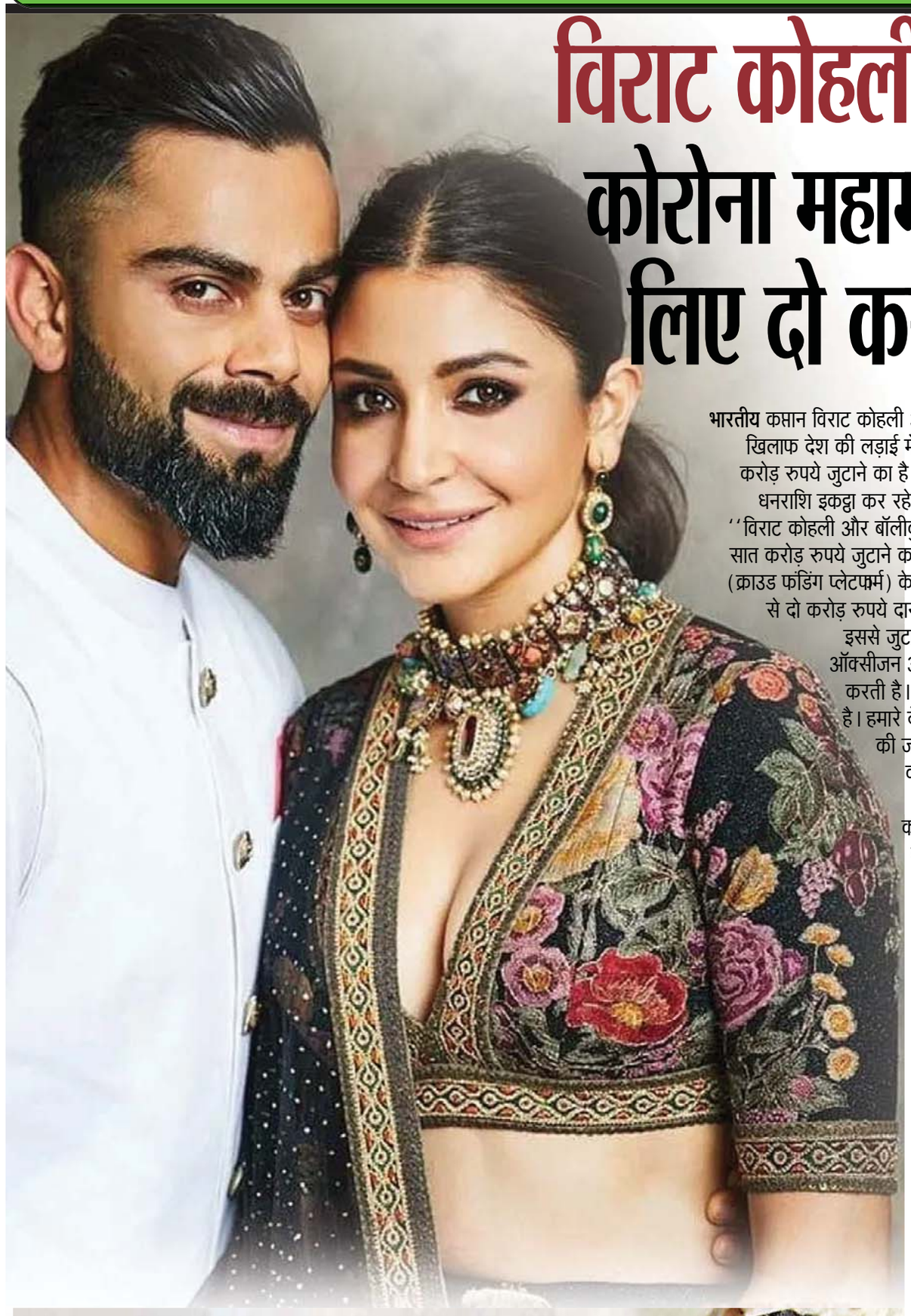

विराट कोहली और अनुष्का ने कोरोना महामारी से निपटने के लिए दो करोड़ की मदद की

भारतीय कप्तान विराट कोहली और उनकी अभिनेत्री पत्नी अनुष्का शर्मा ने कोविड-19 महामारी के खिलाफ देश की लड़ाई में मदद के लिये दो करोड़ रुपये का दान किया है। उनका लक्ष्य सात करोड़ रुपये जुटाने का है। ये दोनों आम जनता से धन जुटाने वाली संस्था केटो के जरिये यह धनराशि इकट्ठा कर रहे हैं। कोहली और अनुष्का की तरफ से जारी विज्ञप्ति में कहा गया है, ''विराट कोहली और बॉलीवुड सुपरस्टार अनुष्का शर्मा का भारत में कोविड राहत कोष के लिये सात करोड़ रुपये जुटाने का लक्ष्य है।'' इसमें कहा गया है, ''वे लोगों से धन जुटाने वाले मंच (क्राउड फंडिंग प्लेटफार्म) केटो के जरिये एक अभियान शुरू कर रहे हैं और उन्होंने अपनी तरह से दो करोड़ रुपये दान किये हैं।'' यह अभियान केटो पर सात दिन तक चलाया जाएगा। इससे जुटायी गयी धनराशि एसीटी ग्रांट्स नामक संस्था को दी जाएगी जो कि ऑक्सीजन और चिकित्सा से जुड़ी अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराने के क्षेत्र में काम करती है। कोहली ने कहा, ''हमारा देश इस समय मुश्किल दौर से गुजर रहा है। हमारे देश को अभी हम सभी के एकजुट होने और अधिक से अधिक लोगों की जान बचाने की जरूरत है। मैं और अनुष्का पिछले एक साल से लोगों की पीड़ा देखकर आहत हैं।'' कोहली ने कहा कि उन्होंने और उनकी पत्नी ने वायरस के खिलाफजंग में अधिक से अधिक लोगों की मदद करने की कोशिश की है। उन्होंने कहा, ''हम अधिक से अधिक लोगों की मदद करने की दिशा में काम कर रहे हैं। भारत को अभी हमारी सबसे अधिक सहायता की जरूरत है। हमनेइस विश्वास के साथ धन जुटाने का बीड़ा उठाया है हम जरूरतमंद लोगों के लिये पर्याप्त धन जुटा सके। हमें विश्वास है कि लोग अपने देशवासियों की मदद के लिये आगे आएंगे। हम एकजुट हैं और हम इससे पार पाने में सफल रहेंगे।

सलमान खान की फिल्म 'कभी ईद कभी दिवाली' का अब यह हो सकता है नाम

बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान की कई फिल्में इस साल रिलीज होने की कतार में हैं। हाल में सलमान अपनी फिल्म 'कभी ईद कभी दिवाली' को लेकर सुर्खियों में थे। बीते दिनों खबर आई थी कि सलमान की इस फिल्म का नाम बदल सकता है। बताया जा रहा है कि विवादों से बचने के लिए इस फिल्म का नाम बदलने का विचार किया जा रहा है। अब जानकारी सामने आ रही है कि सलमान की इस फिल्म का नाम बदल कर 'भाई जान' रखा जा सकता है। खबरों के मुताबिक, 'कभी ईद कभी दिवाली' के प्रोड्यूसर ने इस फिल्म का नया टाइटल 'भाई जान' रखा है। साजिद नाडियाडवाला को लगता है कि वह केवल सलमान हैं, जो 'भाई जान' की उपाधि को धारण कर सकते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए 'कभी ईद कभी दिवाली' का संभावित नाम रखा गया है। उन्हें लगता है कि फिल्म का यह टाइटल फिल्म के विषय को न्यायसंगत ठहराएगा। बताया जा रहा है कि मेकर्स फिल्म के टाइटल को 'भाई जान' रखने को लेकर सलमान से बातचीत में लगे हैं। सलमान को लगता है कि मेकर्स को 'कभी ईद कभी दिवाली' के टाइटल के साथ दर्शकों के बीच जाना चाहिए। फिल्म में पूजा हेगड़े फीमेड लीड किरदार में नजर आएंगी। सलमान के बहनोई आयुष शर्मा और जहीर इकबाल भी फिल्म में अहम भूमिकाओं में दिखेंगे। 'टाइगर 3' की शूटिंग खत्म करने के बाद सलमान इस फिल्म की शूटिंग शुरू करेंगे। इस फिल्म का निर्देशन फरहाद सामजी द्वारा किया जाएगा। इस फिल्म में सलमान पहली बार अभिनेत्री पूजा के साथ रोमांस करते नजर आएंगे।

राखी सावंत का दावा-

मुझे और मेरी फैमिली को कभी नहीं होगा कोरोना

ड्रामा क्वीन राखी सावंत अक्सर ऐसे बयान देती है कि लोग हैरान हो जाते हैं। इन दिनों देश में कोरोना की दूसरी लहर तबाही मचा रखी है। हर दिन लाखों लोग इस वायरस की चपेट में आ रहे हैं। इसी बीच राखी सावंत ने दावा किया है कि वो कोरोनावायरस की चपेट में नहीं आ सकती हैं। इस दावे के पीछे उन्होंने वजह भी बताई है। राखी सावंत का एक वीडिटो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इस वीडियो में राखी दावा कर रही हैं कि उन्हें या उनकी फैमिली को कभी कोरोना नहीं होगा, क्योंकि उनके शरीर में यीशू का पवित्र लहू है। राखी के वीडियो पर तमाम तरह के कॉमेंट्स आ रहे हैं। वहीं राखी ने देश में वैक्सीन की कमी पर चिंता जताते हुए कहा कि उनके हिस्से की वैक्सीन जरूरतमंद को लगा दी जाए। राखी ने निक्की तंबोली के भाई के निधन पर भी दुख जाहिर किया। उन्होंने बताया कि बिग बॉस में अक्सर निक्की अपने भाई के बारे में बात करती थीं। राखी ने कंगना के ट्विटर सस्पेंड होने के मुद्दे पर भी अपनी राय दी। उन्होंने कहा कि, इस तरह की भड़काऊ बातें करना भी देश के साथ गद्दारी करने जैसा है।

मेरा संघर्ष कम नहीं

दबंगत अभिनेता अमरीश पुरी के पोते अभिनेता वर्धन पुरी ने कहा है कि उनका संघर्ष किसी भी अन्य अभिनेता से अलग नहीं रहा है क्योंकि उनके दादा तब उनके पास नहीं थे जब उन्होंने सिनेमा में कदम रखा था। उन्होंने बताया, 'इंडस्ट्री में अपनी पहचान बनाना बहुत मुश्किल है। लोग इस बात पर यकीन नहीं करेंगे लेकिन यह आसान नहीं था मेरे दादाजी का निधन तब हो गया था जब मैं बहुत छोटा था और वह मेरे लिए कॉल करने या फिल्म निर्माताओं के कार्यालयों में ले जाने के लिए मौजूद नहीं थे।' 2019 में फिल्म 'ये साली आशिकी' से अपनी शुरूआत करने वाले अभिनेता ने अपने दादा के साथ अपनी शानदार यादों को याद किया। उन्होंने कहा ''हर कोई यह जानने के लिए बहुत उत्सुक है कि दादू क्या थे। मेरे पास सबसे अच्छी यादें हैं, जब हम एक साथ फिल्में देखा करते थे। मैं लंबे समय से उस समय को वापस जीना चाहता हूं। मुझे चैप्लिन की फिल्में देखना याद आता है, उस वक्त हम साथ बैठकर नाश्ता करते और ब्रेक के दौरान परिवार से बातचीत करते थे।' वर्धन आज एक साल और बड़े हो गए और उन्होंने याद किया कि उनके दादाजी उनके जन्मदिन समारोह का एक बड़ा हिस्सा हुआ करते थे। उन्होंने कहा, कि बचपन में, मेरा परिवार, दोस्त और मैं चाचा के खेत मड आइलैंड जाते थे और पूरे दिन खेलों में भाग लेते थे। मेरे दादा-दादी उसने जज हुआ करते थे और पुरस्कार देते थे। यह सबसे अच्छा था। अभिनेता की योजना इस साल कोविड से प्रभावित लोगों की मदद करने की है। उन्होंने कहा, 'यह जन्मदिन मैं कोविड से पीड़ित रोगियों को चिकित्सा सेवा देने के लिए एक एनजीओ के साथ हूं। इसके अलावा, रात के खाने के बाद मैं अपने माता-पिता, मेरी बहन साची, उनके पति निशांत और मेरे साथ रहने वाले मेरे सहायकों के साथ समय बिताने की योजना बना रहा हूं। उसके बाद, मैं करीबी दोस्तों और परिवार के साथ एक जूम कॉल पर मिलूंगा और शायद कुछ गेम खेलूंगा। मैं इस बार सरलता से मनाना चाहता हूं। मैं हर चीज के साथ जश्न मनाने के मूड में नहीं हूं।' अभिनेता अब अगली फिल्म 'द लास्ट शो' में दिखाई देंगे।

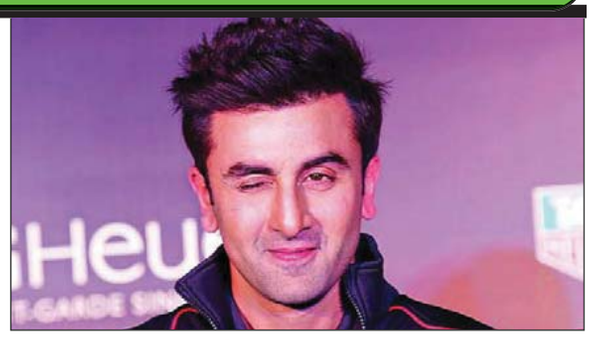

रणबीर कपूर इस हीरोइन को किस करते समय हो गए थे बेकाबू

चॉकलेट बॉय रणबीर कपूर बेहद रोमांटिक हैं। दीपिका पादुकोण और कैटरीना कैफ के साथ उनका खूब रोमांस चला था। तो ऐसे ही दिलफेंक हीरो का जब फिल्म ये जवानी है दीवानी में एक किसिंग सीन फिल्माया गया तो वे बेकाबू हो गए थे और ये हीरोइन दीपिका पादुकोण नहीं थी। इस हीरोइन का नाम था एवलिन शर्मा। एवलिन को रणबीर कपूर डायरेक्टर के कट बोलने के बाद भी किस करते रहे और उन्हें थोड़ी देर बाद समझ आया कि कट बोला जा चुका है। वैसे रणबीर से जुड़े लोगों का कहना था कि वे सीन में इतना डूब गए थे कि कट की आवाज ही नहीं सुन पाए और यह गड़बड़ी हो गई। जर्मन मॉडल और एक्ट्रेस एविलन शर्मा ने बॉलीवुड में 'फॉम सिडनी विद लव' से शुरुआत की थी। यारिया, हिंदी मीडियम, जब हैरी मेट सेजल जैसी कुछ फिल्मों में वे दिखाई दीं, लेकिन अभी तक उनकी ठोस पहचान नहीं बन पाई।

मेरे लिए सही इंसान नहीं थे अश्मित

बिग बॉस फेम और एक्ट्रेस महक चहल और अश्मित पटेल ने भी 5 साल तक एक-दूसरे को डेट किया था। दोनों ने सगाई भी की, लेकिन फिर उन्होंने अपनी सगाई तोड़ दी थी। महक और अश्मित के ब्रेकअप की खबरों ने खूब सुर्खियां बटोरी थी। अब इस मुद्दे पर एक बार फिर महक ने अपने दिल की बात कही है। अश्मित पटेल के साथ ब्रेकअप के बारे में महक ने कहा कि वो इस रिश्ते को खत्म करने के लिए खुद को कसूरवार नहीं मानती हैं। उन्होंने कहा कि, जब आप किसी के साथ रहने लगते हैं, उसे करीब से जानने लगते हैं तब आपको उसको बेहतर ढंग से जान पाते हैं। मुझे लगता है कि अश्मित पटेल मेरे लिए सही इंसान नहीं थे। ब्रेकअप के बाद से मेरा परिवार और मेरे दोस्त मेरे साथ मौजूद रहे। मैंने उन्हें अपने दिल की बात कही। लॉकडाउन के चलते मैंने काफी सारा वत गोवा में बिताया और सिर्फ जरूरत पड़ने पर मुंबई आती थी। महक ने कहा, वत की सबसे अच्छी बात यही है कि ये सब ठीक कर सकता है। हालांकि कोरोना के चलते कोई काम नहीं था तो ये आसान नहीं था, लेकिन अब मैं पूरी तरह ठीक हो चुकी हूं। महक ने ये भी बताया कि अगर अश्मित से उनका ब्रेकअप नहीं हुआ होता तो वो गोवा नहीं जाती।

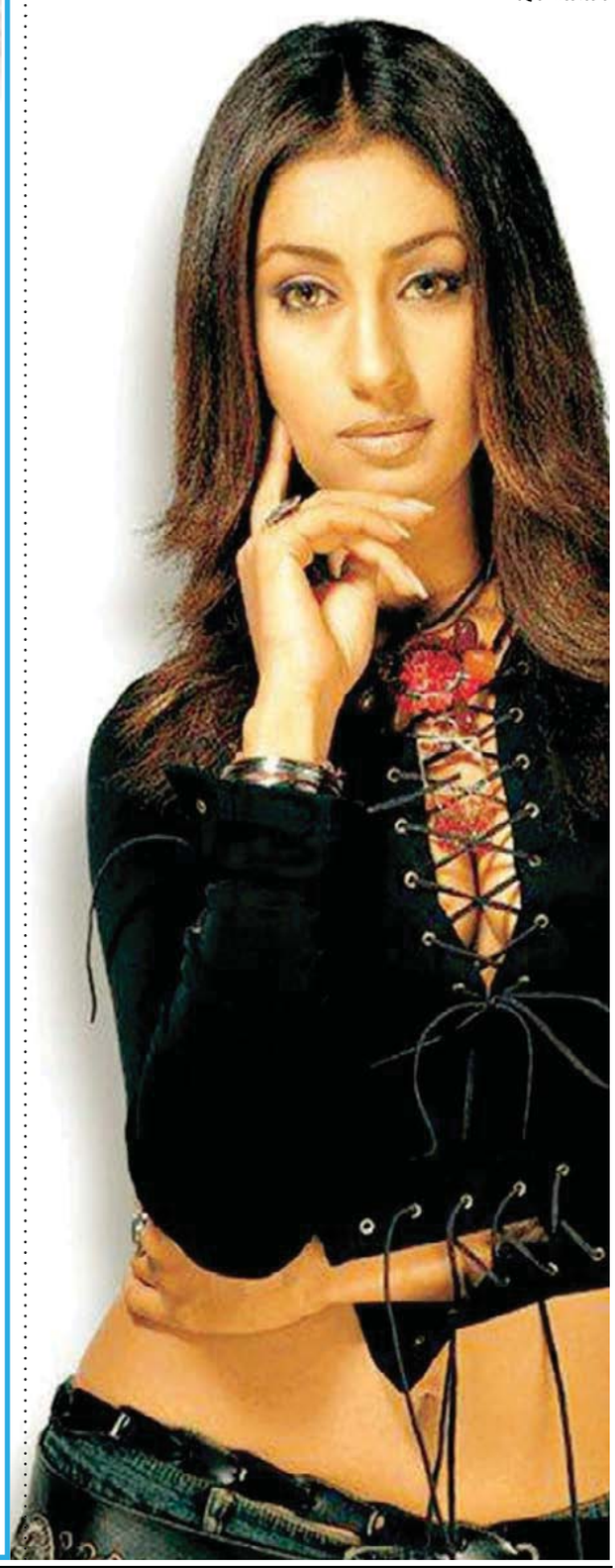

Web site : www.krantisamay.com & .in , epaper.krantisamay.com www.facebook.com/ krantisamay1 www.twitter.com/

लकीर के फकीर

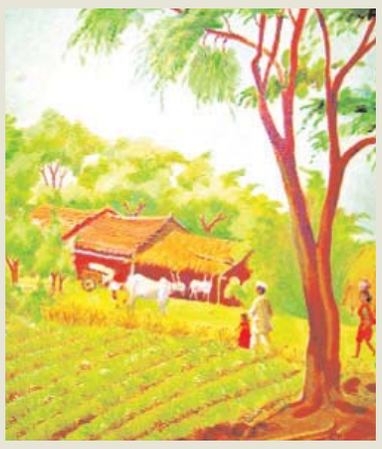

जंगल में चराई के बाद किसी बछड़े को गांव की गौशाला तक लौटना था। नन्हा बछड़ा था तो अबोध ही, वह चट्टानों, मिट्टी के टीलों, और ढलानों पर से उछलता-कूदता हुआ अपने गंतव्य तक पहुंचने में सफल हो गया।

अगले दिन एक कुत्ते ने भी गांव तक पहुंचने के लिए उसी रास्ते का इस्तेमाल किया।

उसके अगले दिन एक भेड़ उस रास्ते पर चल पड़ी। एक भेड़ के पीछे अनेक भेड़ चल पडीं। भेड़ जो ठहरीं!

उस रास्ते पर चलाफिरी के निशान देखकर लोगों ने भी उसका इस्तेमाल शुरू कर दिया। ऊंची-नीची पथरीली जमीन पर आते-जाते समय वे-पथ की दुरूहता को कोसते रहते, पथ था ही ऐसा! लेकिन किसी ने भी सरल-सुगम पथ की खोज के लिए प्रयास नहीं किए।

समय बीतने के साथ वह पगडंडी उस गाव तक पहुंचने का मुख्य मार्ग बन गई। जिस पर बेचारे पशु बमुश्किल गाड़ी खींचते रहते। उस कठिन पथ के स्थान पर कोई सुगम पथ होता तो लोगों को यात्रा में न केवल समय की बचत होती वरन वे सुरक्षित भी रहते।

कालांतर में वह गांव एक नगर बन गया और पथ राजमार्ग बन गया। उस पथ की समस्याओं पर चर्चा करते रहने के अतिरिक किसी ने कभी कुछ नहीं किया। बूढ़ा जंगल यह सब बहुत लंबे समय से देख रहा था। वह बरबस मुस्कुराता और यह सोचता रहता कि मनुष्य हमेशा ही सामने खुले पड़े विकल्प को मजबूती से जकड़ लेते हैं और यह विचार नहीं करते कि कहीं कुछ उससे बेहतर भी किया जा सकता है।

हमें यह धर्मरूपी आसक्ति का चश्मा दर किनार करके सभी धर्मों को एक ही नजरिए से देखने की जरूरत है, तभी हम सभी धर्मों की अच्छाई को ग्रहण करके सभी में एक सी समानता और उनकी शिक्षाओ को पहले खुद ग्रहण करने का नजरिया रखेंगे, तभी भेदभाव की दीवार स्वयं ही ढह जाएगी।

धर्म को पहले स्वयं जीवन में उतारें

अक्सर हम यही देखते हैं कि जब हम किसी अन्ध मान्यता, अन्ध भावावेश अथवा बौद्धिक तर्कजाल को धर्म मानने की भूल करने लगते हैं तो उसमें कहीं अधिक बुरी तरह से उलझ जाते हैं। हम जिस दार्शनिक, धार्मिक परंपरा को मान रहे हैं, उसके साथ हमारा एक भावनात्मक संबंध जुड़ जाता है। फलस्वरूप उसके विपरीत अन्य किसी दृष्टिकोण को कभी स्वीकार ही नहीं कर पाते। अथवा यह भी होता है कि अपनी तर्कबुद्धि से हमने किसी मान्यता को अपना लिया है तो अपने ही बुद्धिबल को अत्यधिक महत्ता देने के स्वभाववश अन्य किसी मान्यता को सही मानने को प्रस्तुत ही नहीं होते। परंपरागत मान्यता, हृदयगत भावुकता अथवा बौद्धिक तर्कजाल के कारण जब हम किसी भी मान्यता के गुलाम हो जाते हैं तो उसके प्रति इतनी गहरी आसक्ति पैदा कर लेते हैं कि हमेशा के लिए उसी के रंग का चश्मा पहने ही दुनिया को देखने लगते हैं। अत : उस रंग के अतिरिक्त अन्य कोई रंग हमें दिखता ही नहीं। इस प्रकार सच्चाई से, वास्तविकता से बिल्कुल दूर होते चले जाते हैं, क्यों कि हर बात को अपने ही चश्मे से देखने के आदी जो हो चुके होते हैं।

मान लीजिए, अन्धश्रद्धा, अन्धविश्वास, भावावेश अथवा बौद्धिक ऊहापोह के आधार पर हमने कोई सही सिद्धान्त भी स्वीकार कर रखा हो, परन्तु होता क्या है कि उसके प्रति हुई आसक्ति के कारण उस सिद्धान्त को स्वीकारने मात्र को ही हम सारा महत्व देने लगते हैं, जब कि उसके व्यवहारिक पक्ष को सर्वदा भुला बैठते हैं।

कुछ ज्ञानीजन समाज को, देश-दुनिया को धर्म का मार्ग दिखाने में जी-जान से जुटे हुए हैं। एक ओर हिन्दू धर्म की महिमा का बखान किया जा रहा है, वहीं दूसरी ओर कुछ लोग शान्ति के मसीहा बने दुनिया को मुसलमान होने के फायदे गिनाने में लगे हुए हैं। एक कहता है कि हिन्दू धर्म और उसकी शिक्षाएं महान हैं तो दूसरा कहता है कि आप इस्लाम अपना लो तो आप में आत्म-अनुशासन, आत्म-नियंत्रण,आत्मशिक्षा, आत्म-अनुपालन जैसे गुणों का संचार होने लगेगा।

मैं मानता हूं कि न सिर्फ हिन्दू, न इस्लाम, बल्कि दुनिया का हरेक धर्म, हरेक पंथ, हरेक सम्प्रदाय महान है। उनके धर्मग्रंथ, उनकी शिक्षाएं, पीर-पैगम्बर, महापुरुष इत्यादि सब महान हैं। लेकिन ये नहीं समझ पा रहा हूं कि आप लोग जो दुनिया में धर्म का ज्ञान बांटते फिर रहे हो, पोस्ट दर पोस्ट बड़े लम्बे-चौड़े उपदेश देते रहते हो, लेकिन तुम्हारा धर्म तुम में वो महानता क्यूं नहीं पैदा कर पाया। क्या ये महानता का प्रसाद सिर्फ दूसरों में बांटने के लिए ही रख छोड़ा है, जो तुम्हारे हिस्से न आ सका। दूसरी ओर मैं उन मुस्लिम भाइयों से ये जानना चाहूंगा कि तुम कहते हो कि इस्लाम कबूल करने का सीधा फायदा ये है कि आपमें शांति, प्रेम, आत्म-अनुशासन,आत्म-नियंत्रण, आत्मशिक्षा, आत्म-अनुपालन जैसे गुणों का वास होने लगेगा, लेकिन भाई तुम तो इस्लाम के मानने वाले हो, किन्तु तुम्हारे जीवन में ऐसे किसी सद्गुण का संचार क्यों नहीं हो पाया। कमाल है! जिस चीज को आप लोग स्वयं जीवन में धारण नहीं कर सके, उसी के बारे में दुनिया को उपदेश देने में लगे हुए हैं। और लगे हुए हैं, बस दिन-रात एक दूसरे पर कीचड़ उछालने में, एक दूजे को निर्वस्त्र करने में।

मनुष्यता भलाई में है

यह मानव स्वभाव है कि किसी का अच्छा हो रहा हो, तो उसमें खलल डालता है। वहीं कुछ ऐसे भी हैं, जो बिगड़ती बात को संवारना ही मनुष्यता की परिभाषा मानते हैं, ऐसे ही बयान करती यह कथा प्रस्तुत है।

यह घटना उस समय की है, जब क्रांतिकारी रोशन सिंह को काकोरी कांड में मृत्युदंड दिया गया। उनके शहीद होते ही उनके परिवार पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। घर में एक जवान बेटी थी और उसके लिए वर की तलाश चल रही थी। बड़ी मुश्किल से एक जगह बात पक्की हो गई। कन्या का रिश्ता तय होते देखकर वहां के दरोगा ने लड़के वालों को धमकाया और कहा कि क्रांतिकारी की कन्या से विवाह करना राजद्रोह समझा जाएगा और इसके लिए सजा भी हो सकती है। किंतु वर पक्ष वाले दरोगा की धमकियों से नहीं डरे और बोले, 'यह तो हमारा सौभाग्य होगा कि ऐसी कन्या के कदम हमारे घर पड़ेंगे, जिसके पिता ने अपना शीश भारत माता के चरणों पर रख दिया।' वर पक्ष का दृढ़ इरादा देखकर दरोगा वहां से चला आया पर किसी भी तरह इस रिश्ते को तोड़ने के प्रयास करने लगा। जब एक पत्रिका के संपादक को यह पता लगा तो वह आगबबूला हो गए और तुरंत उस दरोगा के पास पहुंचकर बोले, 'मनुष्य होकर जो मनुष्यता ही न जाने वह भला क्या मनुष्य? तुम जैसे लोग बुरे कर्म कर अपना जीवन सफल मानते हैं किंतु यह नहीं सोचते कि तुमने इन कर्मों से अपने आगे के लिए इतने कांटे बो दिए हैं, जिन्हें अभी से उखाड़ना भी शुरू करो तो अपने अंत तक न उखाड़ पाओ। अगर किसी को कुछ दे नहीं सकते तो उससे छीनने का प्रयास भी न करो।' संपादक की खरी-खोटी बातों ने दरोगा की आंखें खोल दीं और उसने न सिर्फ कन्या की मां से माफी मांगी, अपितु विवाह का सारा खर्च भी खुद वहन करने को तैयार हो गया। विवाह की तैयारियां होने लगीं। कन्यादान के समय जब वधू के पिता का सवाल उठा तो वह संपादक उठे और बोले, 'रोशन सिंह के न होने पर मैं कन्या का पिता हूं। कन्यादान मैं करूंगा।'

कर्तव्य ही सम्मान है

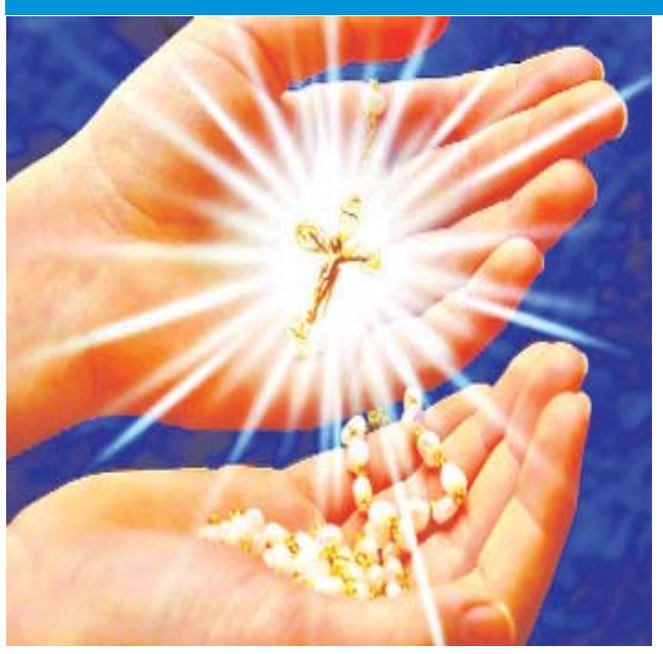

यह काफी पुरानी घटना है। मद्रास प्रांत के एक स्टेशन के निकट एक पॉइंटमैन अपना पॉइंट (वह उपकरण जिससे गाड़ियों का ट्रैक बदला जाता है) पकड़े खड़ा था। दोनों ओर से दो गाड़ियां अपनी पूरी गति से दौड़ी चली आ रही थीं। उस दिन मौसम खराब था और वह आंधी-तूफान का संकेत दे रहा था। ऐसे भयावह मौसम में रोशनी के भी भरपूर साधन नहीं थे। पॉइंटमैन अपने काम के लिए मुस्तैदी से तैयार था, तभी उसे अपने पैरों पर कुछ रेंगता हुआ महसूस हुआ। उसने देखा तो दंग रह गया। एक सांप उसके पैरों से लिपट रहा था। पॉइंट उसके हाथ में था। डर के कारण उसकी घिग्घी बंध गई। किंतु तभी उसने सोचा कि यदि वह पॉइंट हाथ से छोड़ देगा तो ऐसे में दोनों गाड़ियां परस्पर भिड़ जाएंगी और असंख्य लोगों की मृत्यु हो जाएगी। सांप के काटने से तो अकेले सिर्फ उसकी जान जाएगी, लेकिन असंख्य लोगों की जान बच जाएगी। कम से कम मरते-मरते वह असंख्य लोगों की जान बचाने का पुण्य तो अर्जित कर ही लेगा। यह सोचकर वह बिना हिला-डुले पॉइंट को पकड़े खड़ा रहा। कुछ ही देर में दोनों रेलगाड़ियों की घड़घड़ाहट तेज हुई और रेलगाड़ियां आराम से पॉइंट मैन के द्वारा पकड़े गए पॉइंट की सहायता से अलग-अलग ट्रैक पर निकल गईं। उधर सांप रेलगाड़ियों की घड़घड़ाहट सुनकर पॉइंटमैन का पैर छोड़कर चला गया। रेलगाड़ियों के जाने के बाद जब पॉइंटमैन का ध्यान अपने पैरों की ओर गया तो वह यह देखकर दंग रह गया कि वहां कुछ न था। यह देखकर उसके मन से स्वत : ही निकला, 'सच ही है, जो इंसान सच्चे मन से लोगों की मदद करते हैं, उनकी सहायता ईश्वर स्वयं करते हैं।' बाद में जब इस घटना का पता अधिकारियों को चला तो उन्होंने न सिर्फ पॉइंटमैन को शाबासी दी, अपितु उसे पुरस्कार देकर सम्मानित भी किया।

बुद्धि व भाग्य में विवाद होने लगा, दोनों एक दूसरे को बड़ा साबित कर रहे थे। राजा ने एक कथा के माध्यम से दोनों का निर्णय किया। भाग्य से यदि किसी को राजा बनाने का प्रयास हो और संसार की सभी वस्तुएं भी हों तो भी बुद्धि के अभाव में वह राजा नहीं बन सकता। यह आलेख इसी तथ्य पर आधारित है।

बुद्धि बड़ी या भाग्य

एक बार बुद्धि और भाग्य में झगड़ा हुआ। बुद्धि ने कहा, मेरी शक्ति अधिक है। मैं जिसे चाहूं सुखी कर दूं। मेरे बिना कोई बड़ा नहीं हो सकता।'' भाग्य ने कहा, मेरी शक्ति अधिक है। मैं तेरे बिना काम कर सकता हूं। तू मेरे बिना काम नहीं कर सकती।'' इस तरह दोनों ने अपनी-अपनी ओर से दलीलें जोर-शोर से दीं। बुद्धि ने भाग्य से कहा कि उस गड़रिए को जो जंगल में भेड़ें चरा रहा है, मेरी सहायता के बिना राजा बना दो तो समझूं कि तुम बड़े हो। भाग्य ने राजा बनाने का प्रयत्न शुरू कर दिया। उसने बहुत कीमती खड़ाऊं जिसमें लाखों रुपए के नग लगे थे, गड़रिए को दी। भाग्य ने एक व्यापारी को वहां पहुंचा दिया।

व्यापारी उन खड़ाऊंओं को देखकर विस्मित हुआ। उससे कहा, तुम ये खड़ाऊं बेच दो।'' गड़रिए ने वो अनमोल खड़ाऊं जिनमें एक-एक हीरा करोड़ों रुपए का था, दो मन चनों के बदले में बेच डालीं। यह देखकर भाग्य ने और प्रयत्न किया। अब उस व्यापारी ने वे खड़ाऊं राजा को भेंट की तो राजा देखकर हैरान हो गया। व्यापारी से पूछा, ''तुमने ये खड़ाऊं कहां से पाईं? व्यापारी ने कहा ''महाराज एक राजा मेरा मित्र है उसने ये मुझे दीं।'' यह सुनकर राजा ने कहा, ''अच्छा जाओ, मेरी लड़की की सगाई उसके लड़के से करा दो।'' ''ठीक है, आपकी लड़की की सगाई पक्की करने जाता हूं।'' तो क्या देखता है कि गड़रिया उससे भी मूल्यवान खड़ाऊं पहने है।

व्यापारी ने सोचा कि हो न हो, यह कोई सिद्ध महात्मा है। उसने वहीं डेरा लगा दिया और अपना बहुत सा तांबा लदा हुआ सब सामान एक ओर पेड़ के नीचे रख दिया। दोपहरी में गड़रिया धूप से व्याकुल हो उस पेड़ के नीचे तांबे के ढेर के सहारे सिर रखकर सो गया। भाग्य ने उस तांबे के ढेर को सोना कर दिया। व्यापारी ने सोचा कि जिसके छूने से तांबा सोना हो जाता है, उसको राजा बनाना कोई बड़ी बात नहीं। उस व्यापारी ने वहीं जमीन खरीदी और किला बनवा दिया। सेना की भर्ती की जाने लगी और व्यापारी गड़रिए को पकड़कर किले में ले गया। उसको अच्छे-अच्छे मूल्यवान वस्त्र पहनवाए; मंत्री सेवक आदि कर्मचारी रखे और फिर लड़की वाले राजा को पत्र लिखा कि हमारे राजाजी की विवाह की तिथि लिख दो; उसी दिन बारात आ जाएगी। पत्रोत्तर में राजा ने तिथि लिख दी। इस पर विवाह का प्रबंध होने लगा। विवाह की तिथि आने पर व्यापारी बारात लेकर चल दिया। जब लड़की वाले राजा का नगर निकट आ गया और उधर से मंत्री, बहुत से नौकर-चाकर, सेना, अस्त्र-शस्त्र, हाथी-घोड़े इत्यादि राजा की अगवानी के लिए आए तो गड़रिए ने विचार किया कि कदाचित् मेरी भेड़ें इनके खेत में चली गई हैं और ये मेरे कपड़े-लत्ते छीनने आ रहे हैं। अत : उसने झट व्यापारी से कहा, ये सब मेरे कपड़े-लत्ते छीनने के लिए आ रहे हैं। चूंकि यह बात कान में कही गई थी, अत : व्यापारी के सिवा और किसी को मालूम नहीं हुई। लोगों ने व्यापारी से पूछा, ''कुंवरजी क्या आज्ञा दे रहे हैं? कुंवरजी कहते हैं कि जितने लोग स्वागत में आए हैं, सबको पांच-पांच लाख रुपया पुरस्कृत किया जाए।'' लोग सोचने लगे कि किसी बड़े भारी सम्राट के कुंवर की बारात आई है, लड़की वाला राजा भी घबराया कि मैंने बड़े भारी राजा से नाता जोड़ा है। अब तो ईश्वर ही लाज रखे। अंत : उसी दिन राजा की कन्या का विवाह उस गड़रिए से हो गया। जब राजकुमारी गड़रिए के पास आई, तब गड़रिए ने गहनों की आवाज सुन सोचा, हो न हो, कोई चुड़ैल मुझे मारने के लिए आ रही है। यह सोच वह जल्दी से एक दरवाजे की ओट में छिप गया। राजकुमारी कन्या के जाते ही गड़रिए को विचार आया कि अभी एक चुड़ैल से तो मुश्किल से बचा हूं, न मालूम यहां कितनी और चुड़ैल आएं, अत : यहां से भागना चाहिए। सोच ही रहा था कि उसे एक जीना दिखाई पड़ा। वह झट ऊपर चढ़ गया और वहां एक छेद में हाथ डालकर कूदकर भागने का विचार करने लगा। उसी समय बुद्धि ने भाग्य से कहा, ''देख तेरे बनाने से भी यह राजा न बना। अब यह जल्दी ही गिरकर मृत्यु के मुख में जाना चाहता है।'' अत : सिद्ध है कि यदि संसार की सारी वस्तुएं भी एकत्रित हों, तो भी जब तक मनुष्य को बुद्धि न आए, वह अपने उद्देश्य को पूर्णतया सिद्ध नहीं कर सकता।

धन-सम्पदा का गर्व चकनाचूर

यूनान में आल्सिबाएदीस नामक एक बहुत बड़ा संपन्न जमींदार था। उसकी जमींदारी बहुत बड़ी थी। उसे अपने धन-वैभव एवं जागीर पर बहुत अधिक गर्व था। वह इसका वर्णन करते हुए थकता नहीं था। एक दिन वह प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात के पास जा पहुंचा और अपने ऐश्वर्य का वर्णन करने लगा। सुकरात उसकी बातें कुछ देर तक सुनते रहे। फिर उन्होंने पृथ्वी का एक नक्शा मंगवाया। नक्शा फैला कर उन्होंने आल्सिबाएदिस से पूछा-अपना यूनान देश इस नक्शे में कहां है? जमींदार कुछ देर तक नक्शा देखने के बाद एक जगह अंगुली रख कर बोला 'अपना यूनान देश यह रहा।' सुकरात ने पुन : पूछा-और अपना एटिका राज्य कहां है? बड़ी कठिनाई के बाद जमींदार एटिका राज्य को ढूंढ़ सका। अच्छा, इसमें आपकी जागीर की भूमिका कहां है? सुकरात ने एक बार फिर पूछा । अब जमींदार कुछ सकपका गया। वह बोला- आप भी खूब हैं, इस नक्शे में इतनी छोटी-सी जागीर कैसे बताई जा सकती है? तब सुकरात ने कहा-भाई ! इतने बड़े नक्शे में जिस भूमि के लिए एक बिन्दु भी नहीं रखा जा सकता, उस नन्ही-सी भूमि पर आप गर्व करते हैं? इस पूरे ब्रह्माण्ड में आपकी भूमि और आप कहां कितने हैं, जरा यह भी तो सोचिए। सुकरात के मुंह से यह सुनते ही आल्सिबाएदिस का अपनी जागीर और सम्पति पर जो गर्व था, चकनाचूर हो गया। व्यक्ति को अपनी धन-संपदा का बखान तथा उस पर गर्व नहीं करना चाहिए।

Web site : www.krantisamay.com & .in , epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

अपराध शाखा ने आरटीओ से एक अजीबो-गरीब सवाल

रेप पर गुजरात पुलिस के बिगड़े बोल, पूछा-क्या एसयूवी में होती है इतनी जगह?

क्रांति समय दैनिक

अहमदाबाद, किसी महिला या लड़की के साथ दुष्कर्म अपने आप में जघन्य अपराध है लेकिन उस पर पुलिस की ओर से दागे गए सवाल और निंदनीय होते हैं। ऐसा ही एक मामला गुजरात से आया है, जहां स्थानीय अपराध शाखा ने आरटीओ से एक अजीबो-गरीब सवाल पूछ डाला। स्थानीय अपराध शाखा के अधिकारी ने वडोदरा के सड़क परिवहन अधिकारी से पूछा कि क्या स्पोर्ट्स यूटिलिटी व्हीकल (एसयूवी) में इतनी जगह होती है कि उसमें किसी के साथ रेप किया जा सके। अपराध शाखा की ओर से किया गया ये सवाल अपने आप में निंदनीय है। इसके अलावा पुलिस ने सेंट्रल लॉकिंग सिस्टम की स्थिति के बारे में भी रिपोर्ट मांगी है। वडोदरा आरटीओ ने जानकारी दी कि इस तरह का ये पहला मामला है, जब दुष्कर्म में शामिल किसी वाहन की जांच करने का अनुरोध किया गया है। जिस गाड़ी को लेकर जांच पड़ताल चल रही है, वो भद्र पटेल की है और वो कृषि उपज मंडी निगम के पूर्व निदेशक हैं। उनका पुराना क्राइम रिकॉर्ड भी रहा है।

शादी से पहले शारीरिक संबंध बनाने से इंकार करने पर मंगेतर ने होनेवाली पत्नी को मार डाला

क्रांति समय दैनिक

पंचमहल, जिले के रायसिंगपुर गांव में शादी से पहले एक युवकी की हत्या से सनसनी फैल गई। पुलिस ने हत्या की गुत्थी सुलझाते हुए मृतका के मंगेतर को गिरफ्तार कर लिया है। प्राथमिक जांच में शादी से पहले शारीरिक संबंध बनाने से इंकार करने पर युवक ने अपनी मंगेतर को मार डाला। जानकारी के मुताबिक पंचमहल जिले की गोधरा तहसील से रायसिंगपुरा गांव निवासी १९ वर्षीय भूमिका नामक युवती की शादी महादेविया गांव में रहनेवाले जनक नामक युवक से तय हुई थी। गत ६ मई को युवक-युवती के परिवार एकत्र हुए और आगामी २३ मई को भूमिका और जनक की शादी तय कर दी। उसी दिन दोनों परिवारों ने साथ में भोजन किया। लेकिन कुछ समय बाद भूमिका की हत्या का पता चलते ही उसके परिवार पर मानों आसमान टूट पड़ा। सूचना मिलते ही गोधरा पुलिस घटनास्थल पर पहुंच गई और मामले की जांच शुरू कर दी। चंद घंटों में पुलिस ने हत्या की गुत्थी सुलझाते हुए आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी। पुलिस जांच में पता चला कि भूमिका ने शादी से पहले अपने मंगेतर जनक से सोने के आभूषण, मोबाइल इत्यादि की मांग की थी। जिसे लेकर भूमिका और जनक के बीच मनमुटाव चल रहा था। शादी तय होने के दिन जनक भूमिका के गांव पहुंच गया और उसे खेत में बुलाया। जहां दोनों के बीच समझौता हो गया था। लेकिन बाद में जब जनक ने भूमिका से शारीरिक संबंध बनाने की मांग की तो उसने साफ इंकार कर दिया। भूमिका के इंकार से जनक ने आवेश में आकर उसकी चाकू घोंप कर हत्या कर दी।

मुझे गांवों को बचाना है-सुरक्षित करना है, इसलिए शुरूकिया यह अभियान: मुख्यमंत्री

क्रांति समय दैनिक

मुख्यमंत्री ने किया अहमदाबाद जिले के चेखला गांव स्थित कोविड केयर सेंटर का दौरा

अहमदाबाद, मुख्यमंत्री विजय रूपाणी ने राज्य के गांवों में कोरोना संक्रमण की रोकथाम और गांवों को कोरोना मुक्त रखने के लिए शुरू किए गए राज्यव्यापी 'मेरा गांव, कोरोना मुक्तगांव' अभियान के अंतर्गत रविवार को अहमदाबाद जिले की साणंद तहसील के चेखला गांव में बने कम्युनिटी कोविड सेंटर का दौरा किया। मुख्यमंत्री ने चेखला गांव की चौपाल से पूरे राज्य को आश्वस्त करते हुए कहा कि समूची सरकार और संसाधन कोरोना के खिलाफ और जनता के साथ है। राज्य में सारी सुविधाएं और संसाधन उपलब्ध हैं इसलिए किसी को भी घबराने या डरने की जरूरत नहीं है। उन्होंने कहा कि सरकार कोरोना को हराने के लिए कटिबद्ध है, जरूरत है तो बस लोगों के सक्रिय सहयोग की। मुख्यमंत्री ने यह स्पष्ट किया कि संक्रमण की दूसरी लहर व्यापक और घातक है। इस लहर में पूरे के पूरे परिवारों के संक्रमित होने की घटनाएं सामने आई हैं, तब सावधानी ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू है। देश के अनेक राज्यों में कोरोना के सक्रिय मामलों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि फिलहाल प्रतिदिन दर्ज किए जाने वाले मामलों में नजर आ रही कमी यह साबित करती है कि इस अभियान के जरिए हमारे प्रयास सही दिशा में हैं। रूपाणी ने कहा कि हम सभी को साथ मिलकर कोरोना के विरूद्ध जंग लड़नी है और राज्य सरकार द्वारा जारी किए गए दिशा-निर्देशों का सख्ती से पालन करना है। उसके जरिए ही हम कोरोना के खिलाफ लड़ सकेंगे और जीत हासिल कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि कोरोना से गांवों को पूर्ण रूप से सुरक्षित रखने के उद्देश्य से ही 'मेरा गांव, कोरोना मुक्त गांव' अभियान शुरूकिया गया है। यह सही दिशा और सही नीयत के साथ शुरू किया गया अभियान है। इस अभियान के अंतर्गत राज्य के १६००० से अधिक गांवों में 'ग्राम योद्धा कमेटी' का गठन किया गया है। लगभग ५० लाख से अधिक लोगों का व्यक्तिगत सर्विलांस शुरूकिया है, जिसके तहत ५ हजार मरीज आइसोलेशन में हैं। मुख्यमंत्री ने मीडिया के साथ बातचीत में कहा कि, फिलहाल राज्य में प्रतिदिन १.४० लाख टेस्ट किए जा रहे हैं। केंद्र सरकार की ओर से भी पर्याप्त सुविधाएं मिल

सभी साथ मिलकर कोरोना के खिलाफ लड़ेंगे, तो जीत निश्चित है'

सार-समाचार

कोरोना के बाद होने वाले म्यूकोरमाइकोसिस नामक फंगल इंफेक्शन की हुई सर्वग्राही समीक्षा

म्यूकोरमाइकोसिस रोग के नियंत्रण और उपचार व्यवस्था को लेकर किए कई निर्णय

अहमदाबाद, मुख्यमंत्री विजय रूपाणी की अध्यक्षता में गांधीनगर स्थित मुख्यमंत्री आवास में हुई कोर कमेटी की बैठक में राज्य में कोरोना की स्थिति की समीक्षा के साथ कोरोना से ठीक होने के बाद म्यूकोरमाइकोसिस नामक फंगल इंफेक्शन की चपेट में आने वाले लोगों की बढ़ती संख्या को लेकर सर्वग्राही समीक्षा और विस्तृत विचार-विमर्श किया गया। बैठक में शिक्षा मंत्री भूपेन्द्रसिंह चूड़ास्मा, गृह राज्य मंत्री प्रदीपसिंह जाडेजा, मुख्य सचिव अनिल मुकीम, अतिरिक्त मुख्य सचिव पंकज कुमार और एम.के. दास तथा स्वास्थ्य विभाग की प्रधान सचिव डॉ. जयंती रवि सहित कई वरिष्ठ सचिव उपस्थित थे। मुख्यमंत्री ने राज्य सरकार के स्वास्थ्य विभाग को इस रोग के नियंत्रण और उपचार के लिए पूरी सतर्कता और तैयारियों के साथ जल्द से जल्द उपचार व्यवस्था विकसित करने बैठक में निर्देश दिए। राज्य में बढ़ रहे म्यूकोरमाइकोसिस रोग के नियंत्रण तथा इस रोग से संक्रमित होने वाले मरीजों के उपचार के लिए मुख्यमंत्री श्री विजय रूपाणी ने बैठक में कई महत्वपूर्ण निर्णय किए हैं।

मुख्यमंत्री के निर्णयों के मुताबिक म्यूकोरमाइकोसिस को बड़े स्तर पर फैलने से रोकने के लिए और इस रोग की चपेट में आने वाले लोगों के तत्काल उपचार की व्यवस्था स्वास्थ्य विभाग कर रहा है। राज्य सरकार ने सारे सिविल हॉस्पिटलों में विशेषकर अहमदाबाद, वडोदरा, सूरत, राजकोट, भावनगर और जामनगर में इस रोग के संक्रमितों के लिए अलग से वॉर्ड शुरू करने का निर्णय किया है। मुख्यमंत्री के निर्देश और मार्गदर्शन में राज्य सरकार की ओर से म्यूकोरमाइकोसिस के उपचार के लिए ३ करोड़ १२ लाख रूपए की लागत से ५० एमजी वाले एम्फोटेरिसिन बी नामक ५००० इंजेक्शन की खरीदी के ऑर्डर दे दिए गए हैं। उल्लेखनीय है कि पूरे राज्य में म्यूकोरमाइकोसिस के १०० से अधिक मामले दर्ज हो चुके हैं। अहमदाबाद सिविल हॉस्पिटल में म्यूकोरमाइकोसिस के संक्रमितों के उपचार के लिए ६०-६० बेड के साथ दो अलग वॉर्ड शुरू किए गए हैं और वहां १९ मरीजों का उपचार किया जा रहा है। इस रोग का दायरा बढ़ने से रोकने के लिए मुख्यमंत्री ने स्वास्थ्य तंत्र को शहरी और जिला स्तर पर

Web site : www.krantisamay.com & .in , epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

सार समाचार

रवींद्र नाथ टैगोर, महाराणा प्रताप और गोपाल कृष्ण गोखले की जयंती पर पीएम मोदी ने दी श्रद्धांजलि

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नोबेल पुरस्कार से सम्मानित रबींद्रनाथ टैगोर को रविवार को उनकी 160वीं जयंती पर श्रद्धांजलि दी। टैगोर का जन्म सात मई को हुआ था लेकिन पश्चिम बंगाल में उनका जन्मदिन पारंपरिक बंगाली पंचांग के अनुसार मनाया जाता है और इस साल उनकी जयंती रविवार को आयी। उनका जन्म पश्चिम बंगाल में हुआ था। मोदी ने टैगोर को श्रद्धांजलि देते हुए कहा, ''टैगोर की जयंती पर, मैं महान गुरुदेव टैगोर को नमन करता हूं। उनके अनुकरणीय आदर्श हमें ऐसा भारत बनाने की ताकत और प्रेरणा देते रहें, जिसका उन्होंने सपना देखा था।'' टैगोर नाटककार, दार्शनिक और कवि थे। उन्हें साहित्य के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। प्रधानमंत्री ने स्वतंत्रता सेनानी गोपाल कृष्ण गोखले और महान योद्धा महाराणा प्रताप को भी श्रद्धांजलि दी। गोखले और महाराणा प्रताप का आज ही के दिन जन्म हुआ था। मोदी ने कहा कि गोखले ने अपना जीवन राष्ट्रसेवा में समर्पित कर दिया और यह देशवासियों को सदा प्रेरित करता रहेगा। उन्होंने ट्वीट किया, ''अपने प्रतिम साहस, शौर्य और युद्ध कौशल से मां भारती को गौरवान्वित करने वाले महान योद्धा महाराणा प्रताप को उनकी जयंती पर आदरपूर्ण श्रद्धांजलि। मातृभूमि के लिए उनका त्याग और समर्पण सदैव स्मरणीय रहेगा।

सीएम योगी ने किया ऐलान, 11 और जिलों में सोमवार से शुरू होगा 18+ वैक्सीनेशन अभियान

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बताया, 30 मई को उत्तर प्रदेश में कुल 3,10,000 सक्रिय मामले थे जो आज घटकर 2,33,000 तक आ गए हैं। प्रदेश में 8 दिन के अंदर 77,000 सक्रिय मामले कम हुए हैं। 24 अप्रैल को प्रदेश में सबसे अधिक 38,000 पॉजिटिव मामले आए थे, आज 23,000 मामले आए हैं। सीएम योगी ने ऐलान किया कि, सोमवार को उत्तर प्रदेश के 11 और जिलों में 18-44 आयु वर्ग के लिए कोविड टीकाकरण अभियान लॉन्च किए जाएंगे।

राहुल गांधी का पीएम मोदी पर निशाना, ट्वीट कर लिखा- देश को पीएम आवास नहीं, सांस चाहिए!

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने एक बार फिर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधते हुए कहा कि देश को लोगों को प्रधानमंत्री आवास नहीं चाहिए, लोगों को सांस की जरूरत है। पीएम मोदी पर कटाक्ष करते हुए, राहुल ने ट्वीट किया 'देश को पीएम आवास नहीं, सांस चाहिए'!

बता दें कि यह पहली बार नहीं है जब राहुल गांधी ने पीएम मोदी पर निशाना साधा हो, इससे पहले उन्होंने एक और ट्वीट करके देश की दूसरी लहर को 'मोवीड पांडेमिक' कहा और सोशल मीडिया पोस्ट पर 'मोदी है मुमकीन है' लिखा, जिसमें कोविड मामलों और मौतों में आसमान छू रहा है। राहुल गांधी ने अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल पर देश में कोरोना वायरस के कारण बढ़ते संक्रमण और मृत्यु दर के ग्राफ को साझा किया। इसी पोस्ट ने देश में लोगों को दी जाने वाली कोविड़ वैक्सीन की संख्या में भी भारी गिरावट दिखाई दी।

कोरोना मरीजों के इलाज में इस्तेमाल होने वाली दवा की कालाबाजारी, 7 लोग गिरफ्तार

नोएडा। थाना सेक्टर 58 पुलिस ने कोविड-19 रोगियों के उपचार में इस्तेमाल होने वाली दवाई की कालाबाजारी करने व नकली इंजेक्शन बेचने के आरोप में शनिवार को7 लोगों को गिरफ्तार किया ।पुलिस ने उनके पास से भारी मात्रा में कोरोना वायरस के उपचार में प्रयोग होने वाली दवाइयां बरामद की गई हैं। सातों आरोपी मेडिकल व्यवसाय से जुड़े हैं। पुलिस अधिकारी ने बताया कि ये लोग निमोनियामें प्रयोग होने वाले एक इंजेक्शन पर रेमडेसिविर का रैपर लगाकर बेच रहे थे। अपर पुलिस उपायुक्त (जोन प्रथम) रणविजय सिंह ने बताया कि थाना सेक्टर 58 पुलिस ने शनिवार रात मुशीर, सलमान खान, शाहरुख, अजरुदीन, अब्दुल रहमान , दीपांशु उर्फ धर्मवीर तथा बंटी को गिरफ्तार किया है। उन्होंने बताया कि इनके पास से 9 रेमडिसिवर इंजेक्शन, एक बिना लेबल का इंजेक्शन, 140 रैमडेसिविर इंजेक्शन के नकली रैपर, एक पैकेट में सफेद नशीला पदार्थ तथा विभिन्न कंपनियों के इंजेक्शन, 2,45,000 रुपये नगद, 10 मोबाइल फोन, दो मोटरसाइकिल, एक स्कूटी, कंप्यूटर, प्रिंटर ,सीपीयू आदि बरामद किया गया है।

शादी का झांसा देकर युवती से दुष्कर्म, बताने पर जान से मारने की दी धमकी

राजगढ़। मध्य प्रदेश में राजगढ़ जिले के ब्यावरा थाना शहर क्षेत्र में शांदी का झांसा देकर युवती से दुष्कर्म और किसी से कहने की बात पर मारपीट करते हुए जान से मारने की धमकी देने का मामला सामने आया है। पुलिस ने शनिवार को फरियादी युवती की शिकायत पर मौके से फरार आरोपित के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार इन्द्रा कॉलोनी मक्सी जिला शाजापुर निवासी युवती ने आरोप लगाया कि शादी का झांसा देकर जितेन्द्र पुत्र वंशीलाल जाटव निवासी जयप्रकाश मार्ग ब्यावरा ने 7 फरवरी 2020 से जान से मारने की धमकी देते हुए दुष्कर्म किया। शादी करने को कहा तो उसने मारपीट करते हुए इंकार कर दिया। पुलिस ने मौके से फरार आरोपित के खिलाफ धारा 376, 323, 506 के तहत प्रकरण दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी है।

हर्षवर्धन ने कहा- देश में नौ लाख कोरोना मरीज ऑक्सीजन सपोर्ट पर और 1.7 लाख वेंटिलेटर पर

नई दिल्ली। (एजेंसी)।

कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर की चपेट में ग्रामीण इलाकों के आने के मद्देनजर छोटे और मझोले शहरों में स्वास्थ्य ढांचे को तत्काल तैयार करने की जरूरत है। कोरोना पर गठित मंत्रिमंडलीय समूह की बैठक में नेशनल सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल (एनसीडीसी) के निदेशक सुजीत कुमार सिंह ने इसके लिए आगाह किया। वहीं, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री हर्षवर्धन ने बताया कि देश के नौ लाख मरीज ऑक्सीजन सपोर्ट और 1.7 लाख मरीज वेंटिलेटर पर हैं।

एनसीडीसी निदेशक ने कोरोना पर गठित मंत्रिमंडलीय समूह को किया आगाह

मंत्रिमंडलीय समूह की बैठक में एनसीडीसी के निदेशक ने विदेशों के साथ-साथ भारत में कोरोना संक्रमण की मौजूदा स्थिति पर विस्तृत ब्योरा पेश किया। उन्होंने बताया कि किस तरह भारत में कोरोना की दूसरी लहर छोटे शहरों और ग्रामीण इलाकों को अपनी चपेट में ले रही है। ऐसे इलाकों में टेस्टिंग के साथ-साथ इलाज की सुविधाओं के अभाव के कारण स्थिति खराब हो सकती है। उन्होंने हालात से निपटने के लिए छोटे और मझोले शहरों में तत्काल टेस्टिंग की सुविधा बढ़ाने के साथ ही अस्पताल बनाने की जरूरत बताई।

आधारभूत संरचना का निर्माण

ध्यान देने की बात है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दो दिन पहले ही केंद्र सरकार के सभी विभागों को कोरोना के इलाज के लिए स्वास्थ्य ढांचे के निर्माण में राज्यों की मदद का निर्देश दिया था। नीति आयोग के सदस्य डॉ. वीके पॉल ने विस्तार से बताया कि कोरोना के खिलाफ लड़ाई में देश में किस तरह से आधारभूत संरचना का निर्माण किया जा रहा है।

हर्षवर्धन ने कहा, देश में नौ लाख मरीज आक्सीजन सपोर्ट और 1.7 लाख वेंटिलेटर पर

बैठक में हर्षवर्धन ने बताया कि मौजूदा समय में 3.70 फीसद यानी 9,02,291 मरीज आक्सीजन सपोर्ट, 0.39 फीसद यानी 1,70,841 लाख मरीज वेंटिलेटर और 1.34 फीसद यानी 4,88,861 मरीज आइसीयू में हैं।

दूसरी डोज जरूर लेने की अपील

हर्षवर्धन ने मंत्रिमंडल समूह को देश में चल रहे टीकाकरण अभियान की भी जानकारी दी। उन्होंने लोगों से कोरोना से पूरी तरह बचाव के लिए वैक्सीन की दूसरी डोज जरूर लेने की अपील की। साथ ही राज्यों से केंद्र से मिलने वाले 70 फीसद वैक्सीन का इस्तेमाल दूसरे डोज देने में करने को कहा।

आक्सीजन का दैनिक उत्पादन बढ़कर 9,400 टन हुआ

बैठक में आक्सीजन समेत अन्य जरूरी दवाओं की उपलब्धता और सप्लाई पर भी चर्चा हुई और संबंधित मंत्रालयों को इसके लिए सभी उचित कदम उठाने की सलाह दी गई। सड़क, परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय में सचिव गिरिधर अरमाने ने मंत्रिमंडलीय समूह को बताया कि आक्सीजन की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए घरेलू स्तर पर आक्सीजन का अधिकतम उत्पादन करने की कोशिश की जा रही है। लिक्विड मेडिकल आक्सीजन (एलएमओ) का दैनिक उत्पादन बढ़कर 9,400 टन हो गया है।

बैठक में कौन-कौन हुए शामिल

वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये हुई बैठक में विदेश मंत्री एस. जयशंकर, नागरिक उड्डयन मंत्री हरदीप सिंह पुरी, रसायन और उर्वरक राज्यमंत्री मनसुख मांडविया, गृह राज्यमंत्री नित्यानंद राय, स्वास्थ्य राज्यमंत्री अश्विनी चौबे भी मौजूद रहे।

पीएम मोदी को पत्र लिख ममता बनर्जी ने कोविड-19 संबंधित दवाओं पर सीमा शुल्क में छूट देने की अपील की

कोलकाता। (एजेंसी)।

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने रविवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर उनसे कोविड-19 महामारी से लड़ने में इस्तेमाल होने वाले उपकरण और दवाइयों पर सभी

तरह के करों और सीमा शुल्क में छूट देने का अनुरोध किया। बनर्जी ने मोदी से स्वास्थ्य बुनियादी ढांचा मजबूत करने और कोरोना वायरस से संक्रमित मरीजों के इलाज के लिए उपकरण, दवाओं तथा ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ाने का भी अनुरोध किया। उन्होंने पत्र में कहा, ''बड़ी संख्या में संगठन, लोग और परोपकारी एजेंसियां ऑक्सीजन सांद्रक, सिलेंडर, कंटेनर और कोविड संबंधित दवाएं दान देने के लिए आगे आयी हैं।'' उन्होंने कहा, ''कई दानदाताओं ने इन पर सीमा शुल्क, एसजीएसटी, सीजीएसटी, आईजीएसटी से छूट देने पर विचार करने के लिए राज्य सरकार का रुख किया है।'' बनर्जी ने कहा, ''चूंकि इनकी कीमतें केंद्र सरकार के कार्य क्षेत्र में आती है तो मैं अनुरोध करती हूं कि इन सामान पर जीएसटी/सीमा शुल्क और अन्य ऐसे ही शुल्कों तथा करों से छूट दी जाए ताकि कोविड-19 महामारी के कुशल प्रबंधन में उपरोक्त जीवनरक्षक दवाओं और उपकरणों की आपूर्ति बढ़ाने में मदद मिल सके।'' गौरतलब है कि बनर्जी देश में इस संक्रामक रोग को फैलने से रोकने में ''नाकाम'' रहने के लिए केंद्र पर निशाना साधती रही हैं।

भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन में शामिल हुए पीएम मोदी, कोरोना समेत कई मुद्दों पर हुई चर्चा

नयी दिल्ली। (एजेंसी)।

भारत और यूरोपीय संघ ने संतुलित, महत्वाकांक्षी एवं समग्र कारोबार समझौते और 'स्टैंड-अलोन' निवेश संरक्षण समझौता पर बातचीत शुरू करने पर सहमति जताई। विदेश मंत्रालय ने शनिवार को यह जानकारी दी। इस संबंध में निर्णय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और 27 सदस्यीय यूरोपीय संघ समूह के शासनाध्यक्षों या राष्ट्राध्यक्षों के बीच डिजिटल माध्यम से हुई शिखर बैठक में लिया गया। इस बैठक में कारोबार, सम्पर्क और निवेश के क्षेत्र सहित सम्पूर्ण सहयोग बढ़ाने को लेकर विस्तृत चर्चा हुई। विदेश मंत्रालय के अनुसार, दोनों पक्षों ने टिकाऊ एवं समग्र सम्पर्क साझेदारी की शुरूआत की और इसे संबंधों का महत्वपूर्ण क्षण बताया। भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन पर विदेश मंत्रालय में सचिव (पश्चिम) विकास स्वरूप ने संवाददाताओं से कहा,'' यह एक महत्वपूर्ण क्षण है, बैठक ने संबंधों को नयी गति दी है।'' बैठक में प्रधानमंत्री मोदी और यूरोपीय संघ के नेताओं ने कोविड-19 महामारी एवं स्वास्थ्य क्षेत्र में सहयोग को लेकर विचारों का आदान-प्रदान किया। विदेश मंत्रालय ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यूरोपीय संघ को कोविड-19 रोधी टीकों पर पेटेंट छोड़ने के लिए भारत और दक्षिण अफ्रीका के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए आमंत्रित किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यूरोपीय संघ +27 के प्रारूप में यूरोपीय संघ के सदस्य देशों के नेताओं के साथ संवाद किया।

प्रधानमंत्री मोदी ने यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष चार्ल्स मिशेल के निमंत्रण पर विशेष आमंत्रित के रूप में यूरोपीय परिषद की बैठक में भाग लिया। मंत्रालय के अनुसार, शिखर बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने शुरूआती संबोधन में भारत और यूरोपीय संघ के साथ यूरोपीय संघ के सभी सदस्य देशों के साथ मजबूत संबंधों के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने भारत और यूरोपीय संघ के सामरिक संबंधों को 21वीं सदी में वैश्विक भलाई के लिये महत्वपूर्ण ताकत बताया। विदेश मंत्रालय के अनुसार, बैठक में यूरोपीय संघ परिषद एवं यूरोपीय संघ आयोग के अध्यक्षों के अलावा समूह के 19 सदस्य देशों के नेताओं ने संबोधित किया। यूरोपीय संघ परिषद के अध्यक्ष चार्ल्स मिशेल ने ट्वीट किया, ''हम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं ईयू नेताओं की शिखर बैठक में यूरोपीय संघ-भारत की सामरिक साझेदारी के नये अध्याय की शुरूआत कर रहे हैं। '' भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन के बाद विदेश मंत्रालय ने कहा कि भारत और यूरोपीय संघ (ईयू) संतुलित, महत्वाकांक्षी और समग्र व्यापार समझौता के लिए वार्ता बहाल करने पर सहमत हुए। मंत्रालय ने कहा कि भारत और यूरोपीय संघ 'स्टैंड-अलोन' निवेश संरक्षण समझौता पर बातचीत शुरू करने के लिए सहमत हुए। वहीं, विदेश मंत्री एस जयशंकर ने अपने ट्वीट में कहा कि शिखर बैठक में यूरोपीय संघ के सदस्यों ने वास्तविक अर्थों में एकजुटता प्रदर्शित की। विदेश मंत्रालय द्वारा भारत-यूरोपीय संघ के नेताओं की बैठक के संबंध में जारी संयुक्त बयान में कहा गया है, '' आज की बैठक में साझे हितों, लोकतंत्र, स्वतंत्रता, कानून के शासन एवं मानवाधिकारों का सम्मान जैसे मूल्यों एवं सिद्धांतों को रेखांकित किया गया जो हमारी सामरिक साझेदारी का मूल है। '' दोनों पक्षों ने जुलाई 2020 में पिछली शिखर बैठक के बाद एवं हाल के समय में उनके बीच साझेदारी में आई गति की सराहना की। संयुक्त बयान में कहा गया है कि इस संदर्भ में दोनों पक्षों ने भारत-यूरोपीय संघ ढांचा 2025 को लेकर तय कार्य बिन्दुओं को लागू करने तथा आज लिये गए नये फैसलों को आगे बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की। इसमें कहा गया है, '' हमने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि दुनिया के बड़े लोकतंत्र के रूप में भारत और यूरोपीय संघ का बहु ध्रुवीय विश्व में सुरक्षा, समृद्धि और टिकाऊ विकास सुनिश्चित करने में साझा हित है।''

देश में 24 घंटे में 4,092 कोरोना मरीजों की मौत, आए 4,03,738 नए मामले

नयी दिल्ली। (एजेंसी)।

भारत में एक दिन में कोरोना वायरस संक्रमण के 4,03,738 नए मामले सामने आने के बाद देश में अब तक संक्रमित हुए लोगों की कुल संख्या बढ़कर 2,22,96,414 हो गई। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के रविवार सुबह आठ बजे अद्यतन आंकड़ों के अनुसार, देश में 4,092 और मरीजों की मौत होने के बाद कुल मृतक संख्या बढ़कर 2,42,362 हो गई। देश में उपचाराधीन मरीजों की संख्या लगातार बढ़कर 37,36,648 हो गई है, जो संक्रमण के कुल मामलों का 16.76 प्रतिशत है, जबकि संक्रमित लोगों के स्वस्थ होने की दर 82.15 प्रतिशत है।

आंकड़ों के अनुसार, एक दिन में 3,86,444 और मरीजों के ठीक होने के साथ अब तक स्वस्थ हो चुके लोगों की कुल संख्या बढ़कर 1,83,17,404 हो गई है, जबकि मृत्युदर 1.09 प्रतिशत है। भारत में कोविड-19 के मामले पिछले साल सात अगस्त को 20 लाख का आंकड़ा पार कर गए थे। इसके बाद संक्रमण के मामले 23 अगस्त को 30 लाख, पांच सितंबर को 40 लाख और 16 सितंबर को 50 लाख के पार चले गए थे। वैश्विक महामारी के मामले पिछले साल 28 सितंबर को 60 लाख, 11 अक्टूबर को 70 लाख, 29 अक्टूबर को 80 लाख, 20 नवंबर को 90 लाख और 19 दिसंबर को एक करोड़ का आंकड़ा पार कर गए थे। भारत में महामारी के मामले चार मई को दो करोड़ के पार चले गए थे। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के मुताबिक, आठ मई तक 30,22,75,471 नमूनों की जांच की गई, जिनमें से 18,65,428 नमूनों की जांच शनिवार को की गई। संक्रमण से पिछले 24 घंटे में जिन 4,092 और लोगों की मौत हुई है, उनमें से महाराष्ट्र में 864, कर्नाटक में 482, दिल्ली में 332, उत्तर प्रदेश में 297, तमिलनाडु में 241, छत्तीसगढ़ में 223, पंजाब में 171, राजस्थान में 160, हरियाणा में 155, झारखंड में 141, पश्चिम बंगाल में 127, गुजरात में 119 और उत्तराखंड में 118 लोगों की मौत हुई है। देश में अब तक 2,42,362 लोगों की मौत संक्रमण से हुई है, जिनमें से महाराष्ट्र में 75,277, दिल्ली में 19,071, कर्नाटक में 18,286, तमिलनाडु में 15,412, उत्तर प्रदेश में 15,170, पश्चिम बंगाल में 12,203, छत्तीसगढ़ में 10,381 और पंजाब में 10,315 लोगों की मौत हुई है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा कि जिन मरीजों की मौत हुई है, उनमें से 70 प्रतिशत से अधिक मरीज अन्य बीमारियों से भी पीड़ित थे।

केंद्र सरकार लगाए संपूर्ण लॉकडाउन लगाए और गरीबों की करे आर्थिक मदद: कांग्रेस

नई दिल्ली। (एजेंसी)।

कांग्रेस ने कोरोना महामारी की दूसरी लहर के मद्देनजर शनिवार को कहा कि केंद्र सरकार को राष्ट्रीय स्तर पर संपूर्ण लॉकडाउन लगाना चाहिए और साथ ही गरीबों को छह हजार रुपये की आर्थिक मदद करनी चाहिए। पार्टी ने यह आरोप भी लगाया कि केंद्र सरकार टीकों पर भी जीएसटी लगाकर लूट कर रही है। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने ट्वीट किया, '' टीका के लिए बजट का पूरा उपयोग नहीं किया गया। इंसान की जान की कीमत नहीं है। ऐसा इसलिए है कि प्रधानमंत्री का अहंकार बहुत ज्यादा है।' उन्होंने टीके पर जीएसटी का परोक्ष रूप से हवाला देते हुए आरोप लगाया, 'जनता के प्राण जाएं पर प्रधानमंत्री की टैक्स वसूली ना जाए!' कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता रणदीप सुरजेवाला ने ट्वीट किया, 'लूट, लूट और लूट - यही कर रही मोदी सरकार ! क्या 'आपदा में लूट' यूंही जारी रहेगी ? अब कोरोना के टीके पर भी 5 फीसदी जीएसटी ! कुछ तो रहम करो मोदी जी, भगवान आपको माफ़ नहीं करेगा।'' पार्टी महासचिव अजय माकन ने कहा कि टीकों, दवाइयों और कोरोना से निपटने के लिए जरूरी दूसरे सभी चिकित्सा उपकरणों से जीएसटी हटानी चाहिए। देश में संपूर्ण लॉकडाउन के सवाल पर माकन ने संवाददाताओं से कहा, ''कोई इससे असहमत नहीं होगा कि लोगों की जान किसी भी चीज से ज्यादा अहम है। कई प्रतिष्ठित संस्थाएं कह रही हैं कि लॉकडाउन लगना चाहिए।'' उन्होंने कहा, ''यह सरकार की जिम्मेदारी है कि भूख और महामारी दोनों से किसी की मौत नहीं हो। हम कहते हैं कि केंद्र सरकार को आगे आकर संपूर्ण लॉकडाउन लगाना चाहिए। इसके साथ कमजोरों और गरीबों के प्रति माह छह रुपये की मदद दी जाए।'' माकन ने प्रमुख अंतरराष्ट्रीय जर्नल 'लैंसेंट' के एक संपादकीय का हवाला देते हुए आरोप लगाया कि देश में कोरोना की मौजूदा हालत कोई प्राकृतिक आपदा नहीं, बल्कि 'व्यक्ति द्वारा निर्मित' आपदा है। उन्होंने कहा, ''लैंसेट ने जो सुझाव दिए हैं वही सुझाव राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री को दिए हैं। लैंसेंट ने कहा है कि डेटा मत छिपाइए और पारदर्शिता रखिए। इस जर्नल ने यह भी कहा कि सबका टीकाकरण करिए। यही बातें राहुल गांधी ने कही हैं।'' माकन के मुताबिक, ''सबसे भयावह बात है कि इस जर्नल के संपादकीय में कहा गया है कि एक अगस्त तक भारत में कोरोना से 10 लाख लोगों की मौत हो जाएगी। इस जर्नल ने यह भी कहा कि यह कोई प्राकृतिक आपदा नहीं, बल्कि व्यक्ति द्वारा निर्मित आपदा है। दअसल, यह मोदी सरकार द्वारा निर्मित आपदा है।'' उन्होंने भारतीय चिकित्सा संघ (आईएमए) के एक बयान का हवाला देते हुए कहा कि देश के स्वास्थ्य मंत्री को हटाने की जरूरत है। उल्लेखनीय है कि कांग्रेस पहले भी हर्षवर्धन को स्वास्थ्य मंत्री पद से बर्खास्त करने की मांग कर चुकी है।

संतोष गंगवार ने मुख्यमंत्री योगी को लिखा पत्र, अधिकारियों के फोन न उठाने की शिकायत की

बरेली। (एजेंसी)।

केंद्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्री संतोष गंगवार ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखकर कोरोना वायरस संक्रमित मरीजों की अस्पतालों में भर्ती को लेकर व्याप्त अव्यवस्था और अधिकारियों द्वारा फोन नहीं उठाये जाने की शिकायत की है। गंगवार ने शनिवार को बरेली में आयोजित बैठक में मुख्यमंत्री को सौंपे गए पत्र में कहा ऐसे मामले सामने आ रहे हैं कि रेफर किए जाने के बाद भी मरीज जब सरकारी अस्पताल में जाता है, तो उससे कहा जाता है कि जिला अस्पताल से दोबारा रेफर करवाकर लाएं। इससे मरीज की हालत और बिगड़ती जाती है। यह चिंता का विषय है। ऐसे में बहुत जरूरी है कि संक्रमित मरीज को कम से कम समय में रेफरल अस्पतालों में तुरंत भर्ती किया जाए। केंद्रीय मंत्री ने मल्टी पैरा मॉनिटर, बायोपैक मशीन, वेंटिलेटर तथा अन्य जरूरी उपकरणों को बाजार में डेढ़ गुना दाम पर बेचे जाने की भी शिकायत करते हुए अनुरोध किया कि सरकार इन चीजों का दाम निर्धारित करे। उन्होंने बरेली में चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण अधिकारियों द्वारा फोन नहीं उठाये जाने की भी शिकायत की और कहा कि इससे मरीजों को काफी असुविधा हो रही है।

गंगवार ने पत्र में आग्रह किया कि ऐसे इंतजाम किए जाएं कि बरेली में संक्रमित मरीजों को किसी भी निजी अस्पताल में भर्ती कराया जा सके और उन निजी अस्पतालों को कोविड-19 अस्पतालों को मिलने वाली सुविधा भी दी जाए। उन्होंने पत्र में कहा कि बरेली में खाली ऑक्सीजन सिलेंडर की भारी कमी है। गंगवार ने कहा कि इसका मुख्य कारण यह है कि शहर के बहुत से लोगों ने ऑक्सीजन सिलेंडर अपने घरों में एहतियात के तौर पर रख लिए हैं और वे इन्हें मनमाने दाम पर बेच भी रहे हैं। उन्होंने आग्रह किया कि प्रशासन ऐसे लोगों को चिह्नित करे और उनके खिलाफ कार्रवाई करे ताकि जरूरतमंदों तक ऑक्सीजन के सिलेंडर पहुंचाया जा सके। केंद्रीय मंत्री ने मुख्यमंत्री योगी से आग्रह किया कि मध्य प्रदेश की तर्ज पर बरेली में भी कुछ निजी और सरकारी अस्पतालों को 50त्न छूट देने के साथ जल्द से जल्द ऑक्सीजन संयंत्र मुहैया कराया जाए ताकि ऑक्सीजन की कमी से होने वाली परेशानी से जल्द से जल्द निपटा जा सके। गंगवार ने कोविड-19 के टीके से संबंधित एक सुझाव देते हुए कहा कि आयुष्मान भारत से जुड़े सभी अस्पतालों में टीकाकरण किया जाए।

महामारी के इस दौर में भी अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभा रहीं महिला कोरोना वारियर्स

नई दिल्ली। (एजेंसी)।

वक्त मुश्किल भरा जरूर है पर इससे हम बाहर निकलेंगे। मुश्किलें आती हैं और आती भी रहेंगी। बाधाएं व्यवधान जरूर पैदा करती हैं पर लक्ष्य से नहीं हटा पाती। अपनों का साथ हो तो साहस और हिम्मत हमेशा बनी रहती है। पर साथ उनका मिले जो निस्वार्थ होकर दूसरों की सेवा में लगे हैं तो वह सबसे बड़ा प्रेरणा का काम करता है। निस्वार्थ भाव से सेवा करने वाले लोगों पर ही आज हमारे समाज की नींव टिकी हुई है। इस कोरोना महामारी में जब अपनों का साथ नहीं मिल रहा तब यही निस्वार्थ भाव से मदद कर रहे लोग हमारी सेवा में आगे आ रहे हैं। हमें हर तरह की सहायता प्रदान कर रहे हैं और शायद इसीलिए आज इस मुश्किल वक्त में हमारे लिए वह वॉरियर हैं। वॉरियर यानी की योद्धा। इसका मतलब यह नहीं कि देश और समाज की सुरक्षा के लिए किसी सीमा पर यह लोग गोली चला रहे हैं और दुश्मनों से लोहा ले रहे हैं। यह वह लोग हैं जो समाज में फैले इस महामारी से लोगों को बचाने की कोशिश में जी-जान से जुटे हुए हैं। इन्हें इस बात की परवाह नहीं है कि इनके साथ क्या होगा? इन्हें तो बस अपने कर्तव्य से प्यार है। यही कारण है कि इनके लिए कितनी भी शब्दों में तारीफ की जाए वह कम पड़ जा रही हैं। स्त्री हो या फिर पुरुष, आज इस महामारी के दौर में हर रूप में कोरोना वॉरियर्स हमारी मदद को तत्पर हैं।

मदर्स डे है यानी कि मातृ दिवस। हर मां के लिए यह दिन खास होता है। कोशिश यही रहती है कि आज के दिन मां और बच्चे एक साथ हो, खुशियों को बांटे, इस मौके को सेलिब्रेट करें। शायद हमारे समाज में इस महामारी के दौर में भी आज कई घरों में मातृ दिवस का उत्सव जरूर होगा। लेकिन क्या हम उन माताओं के बारे में सोच सकते हैं जो इस महामारी के दौर में अपने वात्सल्य वाली भूमिका को छोड़कर देश और समाज को कोरोना वायरस जैसी महामारी से बचाने में जुटी हुई हैं। एक स्त्री के लिए अपने संतान से बड़ा कुछ भी नहीं होता। लेकिन आज की परिस्थिति में वह महिला नर्स, महिला डॉक्टर, महिला सफाई कर्मी, महिला पुलिस अन्य प्रकार की महिला कोरोना वारियर्स हमारे लिए अपनी जान जोखिम में डालकर देश और समाज को सुरक्षित रखने की कोशिश कर रही हैं। सबके लिए यह बातें कहना और हौसला अफजाई करना बड़ा आसान हो सकता है। परंतु इस परोपकार के बदले हमें हमेशा उनका ऋणी रहना होगा। मुश्किल वक्त में इनके योगदान का ऋण यह समाज तो नहीं उतार पाएगा। परंतु इस बात की उम्मीद जरूर की जा सकती है कि महिलाओं के प्रति समाज का नजरिया जरूर बदल जाएगा। आज के वक्त में जब हर कोई इस महामारी से बचने के लिए अपने घर में ही रहना पसंद कर रहा है, यह दलील दे रहा है कि नौकरी आएगी-जाएगी परंतु जिंदगी रहनी चाहिए। ऐसे वक्त में महिला कोरोना वारियर्स के कार्यों की सराहना की जानी चाहिए। कभी वह हमारे पास इस मुश्किल वक्त में डॉक्टर या नर्स के रूप में दिखाई दे जाती हैं तो कभी सड़कों पर लॉकडाउन का पालन कराते हुए पुलिस या ट्रैफिक पुलिस के रूप में दिखाई दे जाती हैं। इतना ही नहीं, सीमा पर देश की प्रहरी कर रही महिलाएं भी वर्तमान परिस्थिति में देश के भीतर भी इस महामारी से लड़ रही हैं। उनके आगे भी उनका अपना गृहस्थ जीवन है, उनके बच्चे हैं परंतु अपने कर्तव्य को ज्यादा महत्व देते हुए वह हर जगह दिखाई दे ही जाती हैं। गांव में आशा कार्यकर्ता के रूप में यह महिलाएं समाज को कोरोना वायरस के प्रति शिक्षित कर रही हैं और टीकाकरण को लेकर अभियान चला रही हैं तो वही पत्रकार के रूप में समाज को नई दिशा दे रही हैं। शायद इनके लिए भी इनका बच्चा सबसे ज्यादा प्यारा होगा। परंतु जीवन के इस मोड़ पर इन्होंने अपने कर्तव्यों को भी प्राथमिकता दी है। कुछ ऐसा ही काम महिला शिक्षक भी कर रही हैं। वह खुद मां है परंतु अपने घर के साथ-साथ उन्हें उन बच्चों की भी चिंता है जिनकी पढ़ाई-लिखाई इस कोरोना काल में चौपट हो रही है। यही कारण है कि ऑनलाइन क्लासेज के जरिए वह अब भी बच्चों को शिक्षा दीक्षा दे रही हैं। उदासी के इस आलम में महिला कोरोना वारियर्स हम सब के लिए प्रेरणा हैं। आज इस कठिन वक्त में वह अपने घर को संभालने के साथ-साथ अपने समाज और देश को भी संभालने की कोशिश कर रही हैं। उन्हें इस बात की परवाह नहीं है कि अगर कुछ हो जाता है तो फिर उनके बच्चों को कौन देखेगा? उन्हें तो बस इस बात की फिक्र है कि कठिन समय से इस समाज को और देश को कैसे निकाला जाए और उसमें वह दिन-रात अपना योगदान दे रहे हैं। पुरूष कोरोना वारियर्स के साथ-साथ महिला कोरोना वारियर्स भी कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है कोरोना के खिलाफ लड़ाई में बिल्कुल भी पीछे नहीं हैं। लेकिन अगर हम कहें तो इस कठिन वक्त में भी वह अपनी दोहरी जिम्मेदारियों को निभा रही है तो इसमें शायद ही किसी को संदेह हो। पहली जिम्मेदारी अपने घर की, अपने बच्चों को संभालने की जबकि दूसरी जिम्मेदारी अपने कर्तव्य की इस देश और समाज को बचाने की। यह महिला ही हैं जो अपनी दोनों ही जिम्मेदारियों को बखूबी निभा रही हैं। हमारे महिला कोरोना वारियर्स की ऐसी कई कहानियां सामने आ रही हैं जो सालों साल तक हमारी पीढ़ी को प्रेरित करती रहेंगी। हमने यहां सिर्फ तीन चार महिलाओं की ही बात की। परंतु आज इस परिस्थिति में ऐसी लाखों महिला कोरोना वारियर्स होंगी जो इस मुश्किल दौर में अपने घर से ज्यादा अपने कर्तव्य को ज्यादा महत्व दे रही होंगी। इनके निस्वार्थ सेवा के लिए इन्हें सलाम है।

स्वामी, मुद्रक व् प्रकाशक : सुरेश मौर्या द्वारा अष्ट विनायक ओफ़्सेट एफपी,149 प्लोट 26 खोडीयारनगर, सिद्धिविनायक मंदीर के पास , (भाटेना) हो.सो अंजना सुरत गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक :सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/751000 (Subject to Surat jurisdiction)